भाकृअनुप
ICAR

कृषि-उद्यमिता द्वारा आत्मनिर्भर भारत

छात्रोपयोगी ज्ञान एवं कौशल विकास

सुधीर कुमार सोम

प्रभात कुमार

सी एच श्रीनिवास राव

NAHEP

नार्म
naarm

कृषि-उद्यमिता द्वारा आत्मनिर्भर भारत

छात्रोपयोगी ज्ञान एवं कौशल विकास

सुधीर कुमार सोम
प्रभात कुमार
सी. एच. श्रीनिवास राव

सटीक उद्धरण:
एस के सोम, प्रभात कुमार एवं, सी एच. श्रीनिवास राव (2020). कृषि-उद्यमिता द्वारा आत्मनिर्भर भारत: छात्रोपयोगी ज्ञान एवं कौशल विकास, पृष्ठ संख्या 156, राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद।

ISBN: 978-81-943090-8-6

प्रतियों की संख्या: 500 प्रतियां

तकनीकी सहायता:
सुश्री स्वीटी शर्मा
श्री बी रघुपति

प्रकाशक:
निदेशक, भा. कृ. अनु. प. – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी,
हैदराबाद-500030

प्राक्कथन

वर्तमान में, भारत युवाशक्ति के मामले में विश्व का सबसे समृद्धशाली देश है। यह युवा भारत आत्मनिर्भर भी बने, इसी उद्देश्य से हमारे देश के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी ने एक महत्वाकांक्षी योजना आत्मनिर्भर भारत की घोषणा की। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत घोषित प्रयासों में कई योजनाएं कृषि उद्यमिता से संबधित है। कृषि शिक्षा अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र अपने संभाषणों में सदैव अनुसंधान एवं कृषि शिक्षा के द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव पर बल देते है तथा नवाचार द्वारा किये गये अभिनव प्रयासों की प्रशंसा करते है तथा स्टार्टअप द्वारा कृषि उद्यमिता को एक प्रभावी आंदोलन के रूप में देखते है।

यह पुस्तक, भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, एवं भारतीय कृषि परिषद के कृषि उद्यमिता के लक्ष्यों के अनुपालन में एक लघु प्रयास है। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) ने विश्व बैंक द्वारा पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) के अंतर्गत छात्रों में कृषि उद्यमिता जागृत करने का कार्य प्रारंभ किया है। इस पहल के अंतर्गत सर्वप्रथम सितम्बर 2019 के महीने में एक दो दिवसीय विशेष प्रशिक्षण आयोजित कर राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में छात्रों को व्यवहारिक कौशल, कृषि उद्यमिता एवं व्यक्तित्व विकास में प्रशिक्षित करने हेतु लगभग 34 वरिष्ठ प्रशिक्षक 'मास्टर ट्रैनर' तैयार किये गये। तदुपरांत क्रिएटिंग जॉब्स- ए ट्रेनिंग मैन्युल फॉर पोटेंशियल एग्रीप्रेन्योरस नामक एक प्रशिक्षण पुस्तिका को प्रकाशित किया गया। अब ये मास्टर ट्रैनर आवश्यक जानकारी एवं ट्रेनिंग मैन्युल से युक्त हो गये थे, इनकी सहायता से दिसंबर 2019 से.फरवरी 2020 के मध्य लगभग बीस कृषि विश्वविद्यालयों में दो हज़ार के करीब छात्रों को व्यावहारिक कौशल, उद्यमिता एवं व्यक्तित्व विकास में एक-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यकम द्वारा प्रशिक्षित किया गया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत वांछित अपेक्षाएं, कृषि छात्रों की संख्या, भाषा ज्ञान एवं आवश्यकताओं को देखते हुए, हिंदी भाषा में एक कृषि-उद्यमिता द्वारा आत्मनिर्भर भारत: छात्रोपयोगी ज्ञान एवं कौशल विकास पुस्तक लिखने का विचार आया तथा ये पुस्तक अब आपके हाथो में है , कुछ अध्याय पूर्व में लिखित प्रशिक्षण मैन्युल से नवीनीकृत किये गये तथा पांच नये अध्यायों को जोड़ा गया। इस प्रकार पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम भाग में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना तथा इससे संबंधित विषयों जैसे कि- कृषि उद्यमिता में भारत सरकार की नीति, योजनायें एवं अधिनियम, स्टार्टअप इनक्यूबेटर एवं एक्सीलेटर, नवाचार संवर्धन, वित्त जोखिम, कृषि प्रसार, कृषि उद्यमिता के सुनहरे अवसर इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। द्वितीय भाग में उद्यमिता हेतु आवश्यक कौशलों पर विस्तृत जोर दिया गया है। अत: कठोर तथा व्यवहारिक कौशल, टीम निर्माण,ऑनलाइन संसाधन, भावनात्मक गुणों एवं व्यक्तित्व विकास पर बल दिया गया है तथा प्रेरणा स्वरुप कृषि उद्यमी के संस्मरण को भी रखा गया है।

इस प्रकार छात्रों में कृषि उद्यमिता संबंधित ज्ञान वर्धन एवं बहु मुखी प्रतिभा विकसित करने का प्रयत्न किया गया है। हमें आशा है कि, यह पुस्तक युवा कृषि-स्नातकों को आजीविका के रूप में एग्रीप्रेन्योरशिप लेने में मदद करेगा, और उनके रोजगार कौशल को भी बढ़ाएगा। इसलिए, वे न केवल उत्तम रोजगार प्राप्त करेंगें, बल्कि कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में रोजगार सृजन भी करेंगें। यह पुस्तक हमारे राष्ट्र के युवा कृषि स्नातको को सफल उद्यमी के रूप में विकसित करने में अपनी भूमिका निभाएगी। इस प्रकार आत्मनिर्भर युवाओं के बलबूते हमारा राष्ट्र आत्मनिर्भर भारत बनेगा। हम लेखकगण ऐसा समझते है तथा हमें इसका पूर्ण विश्वास भी है।

सुधीर कुमार सोम
प्रभात कुमार
सी. एच. श्रीनिवास राव

हैदराबाद
27 सितंबर 2020

गाय के गोबर से निर्मित दीपक भी एक अच्छा लघु व्यवसाय हो सकता है

आभार

इस पुस्तक का प्रकाशन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) के तत्वाधान में किया जा रहा है। अत: मैं इस परियोजना के राष्ट्रीय निदेशक एवं भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉ. आर सी अग्रवाल का आभार व्यक्त करता हूँ। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) इस परियोजना के कॉम्पोनेन्ट -2 पर कार्य करती है। अत: नार्म के निदेशक डॉ. सी एच श्रीनिवास राव का मार्ग दर्शन सदैव ही महत्वपूर्ण रहा है। इस विश्व बैंक पोषित परियोजना के राष्ट्रीय कॉऑर्डिनेटर एवं मेरे महत्वपूर्ण सहयोगी डॉ. प्रभात कुमार हमेशा परियोजना लक्ष्यों को पूर्ण करने में मदद करते है। डॉ. सी एच श्रीनिवास राव एवं डॉ. प्रभात कुमार का लेखन एवं भाषा संपादन में अत्यंत सहयोग मिला, अत: उनका हृदय से अत्यंत आभारी हूँ।

इस पुस्तक में क्रिएटिंग जॉब्स - ए ट्रेनिंग मैन्युल फॉर पोटेंशियल एग्रीप्रेन्योरस नामक एक प्रशिक्षण नियमावली के अंग्रेजी लेखकों ने अपने लेख का हिंदी भाषा में नवीनीकृत लेखन करने की अनुमति देकर अत्यंत ही महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। अत: में डॉ. सूर्या राठौड़, डॉ. लक्ष्मी मंथा, श्री आर वी हरीश, श्री विजय नादिमिंटि, एवं श्री शार्दुल विक्रम की प्रशंसा करता हूँ। इस परियोजना में अनुसंधान सहयोगी डॉ. रुपन रघुवंशी, सुश्री स्वीटी शर्मा एवं श्री बी रघुपति का विशेष आभार है, जिन्होंने न केवल अध्याय लेखन में सहयोग किया है, बल्कि हिंदी शब्द अलंकरण, टंकण, डिजाइनिंग एवं तकनीकी सहायता में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

परियोजना में मेरे सहयोगी डॉ डी.तम्मीराजू, डॉ. एन. श्रीनिवासा राव तथा सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री शेखर रेड्डी का कार्य बहुत सराहनीय है, जिसके कारण भली प्रकार से मुद्रण कार्य हो सका। अंत में मेरी धर्म पत्नी श्रीमती प्रेरणा सोम का भी आभारी हूँ, जिन्होने हिंदी के सर्वोत्तम शब्दों का चयन करने में बहुत ही सहयोग दिया है।

सुधीर कुमार सोम
कंसोर्टिया प्रधान अन्वेषक
राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP)
राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM)

हैदराबाद
27 सितंबर, 2020

उत्तम खेती, मध्यम बान, निषिद्ध चाकरी, भीख निदान।

खेती
सबसे अच्छा कार्य है,
कारोबार मध्यम,
अतः कृषि व्यवसाय
सर्वोत्तम है

विषय – सूची

	प्राक्कथन	iii
	आभार	vii
1.	आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत कृषि उद्यमिता के सुनहरे अवसर	1
2.	स्टार्टअप इंडिया: भारत के नवोन्मेषी होने की अपार संभावनाएं	13
3.	स्टार्टअप, उद्यमिता और कौशल विकास हेतु सरकारी पहल	43
4.	नवाचार: स्टार्टअप और उद्यमिता हेतु एक प्राथमिक आवश्यकता	53
5.	कृषि स्नातकों का कृषि उद्यमियों के रूप में निर्माण	61
6.	कृषि उद्यमिता से ही कृषि विस्तार	83
7.	भावी उद्यमियों हेतु वित्तीय जोखिम प्रबंधन	99
8.	कैरियर विकास हेतु स्व: कौशल निर्माण	107
9.	कैरियर विकास में मीडिया की प्रभावशाली भूमिका	117
10.	टीमकार्य एवं टीम निर्माण के आधार भूत तत्त्व	121
11.	भावी उद्यमियों के लिए उपयोगी ऑनलाइन संसाधन एवं उपकरण	127
12.	सामूहिक शक्ति से संगठन का विस्तार: एक संस्मरण	135
13.	अनुबंध – 1	143
14.	अनुबंध – 2	145
15.	अनुबंध – 3	148

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत कृषि उद्यमिता के सुनहरे अवसर

प्रस्तावना

देश एक कड़ी वैशविक आपूर्ति श्रृंखला से गुजर रहा है। इसको मजबूत करने के लिये तथा किसानो, मजदूरों और गरीब लोगों को सशक्त बनाने के लिये, 12 मई 2020 को, माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने देश को कड़ी प्रतिस्पर्धा के खिलाफ स्वतंत्र बनाने के उद्देश्य से 20 लाख करोड़ रुपये (जो भारत की जीडीपी के 10% के बराबर है) के विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की। इस पैकेज में कृषि और किसानों के लिए विशिष्ट योजनाएं हैं, कई व्यवस्थाएं हैं, जो अन्य क्षेत्रों से संबंधित हैं, लेकिन कृषि को भी प्रभावित करती हैं।

देश की जीडीपी का 10% पैकेज

पैकेज का गणित... 1.70 लाख करोड़ का पैकेज वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण पहले घोषित कर चुकी हैं। एक लाख करोड़ का पैकेज रिजर्व बैंक ने दिया है। अब वित्तमंत्री 17.30 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा करेंगी।

पांच स्तंभों पर खड़ी होगी इमारत

पीएम ने कहा, आत्मनिर्भर भारत की भव्य इमारत, पांच स्तंभ पर खड़ी होगी। **पहला स्तंभ**-अर्थव्यवस्था, जो उत्तरोत्तर नहीं क्वांटम उछाल लाए। **दूसरा**-आधारभूत ढांचा, जो आधुनिक भारत की पहचान बने। **तीसरा**-हमारी व्यवस्था, **चौथा**-जनसांख्यिकी और **पांचवां**-मांग।

आत्मनिर्भरता इसलिए... कोरोना संकट ने स्थानीय निर्माण, स्थानीय बाजार, स्थानीय सप्लायर चेन की अहमियत समझाई। लोकल ने ही हमारी मांग पूरी की। इस लोकल ने ही बचाया। लोकल सिर्फ जरूरत नहीं, हमारी जिम्मेदारी है, जीवन मंत्र है।

4 एल पर जोर

लैंड- जमीन

लेबर- श्रम

एमएसएमई-किसानों पर फोकस

श्रमिक-किसान : जो हर स्थिति, हर मौसम में देशवासियों के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा है।

हालांकि जीडीपी में कृषि का योगदान कम हो रहा है, लेकिन निम्नलिखित विशिष्ट स्थितियों के मद्देनजर कृषि क्षेत्र भारत में सबसे शीर्ष पर है;

- बड़ी संख्या में लोग कृषि आजीविका पर निर्भर हैं
- बड़ी संख्या में लघु और मध्यम औद्योगिक इकाइयाँ कृषि पर निर्भर हैं
- द्वितीयक कृषि और कटाई उपरांत के प्रयासों से न केवल बड़ी मात्रा में कृषि और खाद्य नुकसान को रोका जा सकेगा, बल्कि रोजगार और राजस्व का सृजन भी होगा
- बड़ी संख्या में टेक्नोलॉजिस्ट और हॉबीस्ट, खेती में उद्यमी के रूप में शामिल हो रहे हैं और आधुनिक कृषि तकनीकों एवं अभिनव स्टार्टअप के माध्यम से अपनी आजीविका के रूप में अपना रहे हैं

आत्मनिर्भर भारत के योगदान के सन्दर्भ में कृषि उद्यमिता के निम्नलिखित प्रयास सबसे महत्वपूर्ण है;

- द्वितीयक कृषि और कृषि आधारित और गैर-कृषि स्टार्टअप आदि को बढ़ावा देना
- कृषि में उद्यमिता के बारे में ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच जागरूकता पैदा करना
- किसान उत्पादक संगठनों और स्वयं सहायता समूहों आदि के निर्माण के माध्यम से पारंपरिक और अभिनव किसानों को सक्षम बनाना
- कृषि छात्रों और अन्य ग्रामीण युवाओं को टीम निर्माण, सॉफ्ट स्किल, उद्यमिता कौशल और व्यक्तित्व विकास में सक्षम करना
- कृत्रिम बुधिमत्ता (Artificial intelligence) और ब्लॉक चेन तकनीक जैसे अनुप्रयोगों के माध्यम से 5G प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोग के लिए अग्रिम कदम उठाना
- कृषि उद्यमिता विकास के लिये भारत सरकार की योजनाओं का प्रभावी उपयोग करना

इस पुस्तक में कई अध्याय उपरोक्त सूचीबद्ध मुद्दों का ध्यान रखते हैं। वर्तमान अध्याय में, कृषि और उससे जुड़े पहलुओं के संदर्भ में 'आत्मनिर्भर भारत' पर हाल ही चर्चा की गई है। भारत सरकार की वर्तमान घोषणा में तीन प्रमुख क्षेत्र हैं;

- सरकार की नीति और ढांचागत सुधार
- वैधानिक सुधार
- कृषि बाजार में सुधार

योजना की प्रमुख विशेषताएं

- किसानों को बाधा मुक्त अंतर्राज्यीय प्रणाली में उपज बेचने के लिए अधिक विकल्प प्रदान करने के लिए केंद्रीय कानून बनाया जाना
- अनाज, खाद्य तेल, तिलहन, दालें, प्याज और आलू को आवश्यक वस्तु अधिनियम से बाहर किया जाना

पारिश्रमिक कृषि उत्पादन मूल्य और गुणवत्ता आश्वासन के लिए कानूनी ढांचा तैयार करना

- किसानों के लिए फार्म गेट के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये की वित्त सुविधा प्रदान करना
- स्थानीय कृषि उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए लघु खाद्य इकाइयों को विकसित करने के लिए 10,000 करोड़ रुपये की वित्त सुविधा प्रदान करना
- 20,000 करोड़ रुपये के फंड को प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना के लिए लॉन्च किया जाएगा पशुपालन अवसंरचना विकास के लिए 15,000 करोड़ रुपये का कोष बनाया जाएगा
- हर्बल खेती को बढ़ावा देने के लिए 4,000 करोड़ रुपये का फंड लॉन्च किया जाएगा
- सभी फलों और सब्जियों के उत्पादन तथा मधुमक्खी पालन सम्बंधित आपूर्ति श्रृंखला पहलों के लिए 500 करोड़ रुपये को अलग रखा जाएगा
- 'फुट-एंड-माउथ' बीमारी के लिए 100% पशुओं का टीकाकरण सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया गया है

सरकारी नीति और अवसंरचनात्मक सुधार - सामान्य

MSME की परिभाषा: सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 में संशोधन करके MSMEs की परिभाषा को बदल दिया जाएगा। प्रस्तावित परिभाषा के अनुसार, सूक्ष्म उद्यमों के लिए निवेश की सीमा 25 लाख रुपये से बढ़ाकर 1 करोड़ रुपये की जाएगी, छोटे उद्यमों के लिए 5 करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये, और मध्यम उद्यमों के लिए 10 करोड़ रुपये से 20 करोड़ रुपये तक। वार्षिक कारोबार का एक नया मानदंड पेश किया जाएगा। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए टर्नओवर की सीमा क्रमशः 5 करोड़ रुपये, 50 करोड़ रुपये और 100 करोड़ रुपये होगी। विनिर्माण और सेवा एमएसएमई के बीच अंतर (प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग निवेश सीमाएं प्रदान करने के लिए) को हटा दिया जाएगा।

MSMEs के लिए कॉर्पस: सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) के लिए 10,000 करोड़ रुपये से एक कोष स्थापित किया जाएगा। यह एमएसएमई के लिए विकास क्षमता और व्यवहार्यता के साथ इक्विटी (equity) फंडिंग प्रदान करेगा। इस फंड संरचना के माध्यम से 50,000 करोड़ रुपये का लाभ होने की उम्मीद है।

MSMEs के लिए अधीनस्थ ऋण: इस योजना का उद्देश्य तनावग्रस्त सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) को समर्थन देना है, जिनके पास गैर-निष्पादित परिसंपतिया (Non-Performing Asset) हैं। इस योजना के तहत, MSMEs के प्रवर्तकों को बैंकों द्वारा ऋण दिया जाएगा, जिसे इक्विटी (equity) के रूप में MSMEs में उपयोग किया जाएगा। सरकार एमएसएमई को अधीनस्थ ऋण के 20,000 करोड़ रुपये की सुविधा देगी। इस उद्देश्य के लिए, यह सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट को 4,000 करोड़ रुपये प्रदान करेगा, जो योजना के तहत ऋण प्रदान करने वाले बैंकों को आंशिक क्रेडिट गारंटी समर्थन प्रदान करेगा।

एनबीएफसी (NBFC) के लिए योजनाएं: एक विशेष तरलता योजना की घोषणा की गई, जिसके तहत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC)/ हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (HFC)/ माइक्रो फाइनेंस संस्थाओं के निवेश ग्रेड ऋण पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक बाजार लेनदेन में सरकार द्वारा 30,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। केंद्र सरकार इन प्रतिभूतियों के लिए 100% गारंटी प्रदान करेगी। मौजूदा आंशिक क्रेडिट गारंटी योजना (पीसीजीएस) को ऐसी संस्थाओं (जैसे बांड या वाणिज्यिक पत्र जारी करना) के उधार के खिलाफ एनबीएफसी को आंशिक रूप से सुरक्षित रखने के लिए बढ़ाया जाएगा। प्रथम 20% का नुकसान केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। पीसीजीएस योजना एनबीएफसी के लिए 45,000 करोड़ रुपये की तरलता की सुविधा प्रदान करेगी।

वन नेशन वन कार्ड: प्रवासी श्रमिक वन नेशन वन कार्ड की योजना के तहत मार्च 2021 तक भारत में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सार्वजनिक वितरण प्रणाली (राशन) का उपयोग कर सकेंगे। यह योजना प्रवासी मजदूरों के लिए राशन तक पहुँच की अंतर्राज्यीय पोर्टेबिलिटी का परिचय देगी। अगस्त 2020 तक यह योजना 23 राज्यों (पीडीएस की 83% आबादी) में 6% करोड़ लाभार्थियों को कवर करने का अनुमान है। सभी राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को उचित मूल्य की दुकानों के पूर्ण स्वचालन को मार्च 2021 तक 100% राष्ट्रीय पोर्टेबिलिटी प्राप्त करने के लिए पूरा करना आवश्यक है।

सड़क विक्रेता: स्ट्रीट वेंडर्स के लिए क्रेडिट पहुँच की सुविधा के लिए एक महीने के भीतर एक विशेष योजना शुरू की जाएगी। इस योजना के तहत, 10,000 रुपये तक की प्रारंभिक कार्यशील पूंजी के लिए प्रत्येक विक्रेता को बैंक क्रेडिट प्रदान किया जाएगा। इससे 5,000 करोड़ रुपये की तरलता उत्पन्न होने का अनुमान है।

वैश्विक निविदाओं को अस्वीकार करना: भारतीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योमों (MSMEs) को विदेशी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए 200 करोड़ रुपये तक की सरकारी खरीद निविदाओं में वैश्विक निविदाओं की अनुमति नहीं दी जाएगी।

कॉरपोरेट्स के लिए कारोबार करने में आसानी: अनुज्ञप्त विदेशी अधिकार क्षेत्रो में भारतीय सार्वजनिक कंपनियों द्वारा प्रतिभूतियों की प्रत्यक्ष सूची की अनुमति दी जाएगी। स्टॉक एक्सचेंजों में गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीडी) को सूचीबद्ध करने वाली निजी कंपनियों को सूचीबद्ध कंपनी नहीं माना जाएगा। एनसीडी ऋण के साधन हैं जो कंपनियों द्वारा व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए धन जुटाने के लिए एक निश्चित कार्यकाल के साथ जारी किए जाते हैं। परिवर्तनीय डिबेंचर के विपरीत, एनसीडी को भविष्य की तारीख में जारी करने वाली कंपनी के इक्विटी शेयरों (equity shares) में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी संचालित शिक्षा: डिजिटल/ऑनलाइन शिक्षा के लिए मल्टी-मोड एक्सेस के लिए प्रधानमंत्री

ई-विद्या (PM eVidya) लॉन्च किया जाएगा। इस कार्यक्रम में DIKSHA योजना (एक राष्ट्र, एक डिजिटल मंच) के तहत राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में स्कूली शिक्षा का समर्थन करने की सुविधाएं शामिल होंगी। नेशनल फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी मिशन दिसंबर 2020 तक शुरू किया जाएगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक बालक 2025 तक ग्रेड 5 में सीखने का स्तर प्राप्त कर ले।

सरकार की नीति और ढांचागत सुधार- कृषि

किसानों को रियायती ऋण बूस्ट: किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से रियायती दरों पर संस्थागत ऋण की सुविधा प्रदान की जाएगी। यह योजना दो लाख करोड़ रुपये की रियायती ऋण के साथ 2.5 करोड़ किसानों को लाभान्वित करेगी।

एग्री इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड: फार्म-गेट और एकत्रीकरण बिंदुओं (जैसे सहकारी समितियों और किसान उत्पादक संगठनों) में कृषि अवसंरचना परियोजनाओं के विकास के लिए एक लाख करोड़ रुपये का कोष बनाया जाएगा। फार्म गेट बाजार को संदर्भित करता है, जहाँ खरीदार सीधे किसानों से उत्पाद खरीद सकते हैं।

किसानों के लिए आपातकालीन कार्यशील पूंजी: किसानों के लिए आपातकालीन कार्यशील पूंजी के रूप में 30,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त फंड जारी किया जाएगा। यह निधि नाबार्ड के माध्यम से ग्रामीण सहकारी बैंकों (आरसीबी) और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को उनकी फसल ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वितरित की जाएगी। इस फंड से तीन करोड़ छोटे और सीमांत किसानों को लाभ होने की उम्मीद है।

मछुआरों को सहायता: प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएमएमएसवाई) समुद्री और अंतर्देशीय मत्स्य के एकीकृत, सतत और समावेशी विकास के लिए प्रारंभ की जाएगी। इस योजना के तहत, समुद्री, अंतर्देशीय मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर में गतिविधियों पर 11,000 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे और 9,000 करोड़ रुपये बुनियादी ढांचे के विकास के लिए खर्च किए जाएंगे (जैसे मछली पकड़ने के बंदरगाह, कोल्ड चेन, बाजार इत्यादि)।

पशुपालन का बुनियादी ढांचा विकास: डेयरी प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, और पशु चारा बुनियादी ढांचे में निजी निवेश का समर्थन करने के उद्देश्य से 15,000 करोड़ रुपये का एक पशुपालन बुनियादी ढांचा विकास कोष स्थापित किया जाएगा। उत्तम डेयरी उत्पादों के निर्यात के लिए संयंत्र स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाएगा।

CAMPA फंड का उपयोग कर रोजगार उकसाव: सरकार आदिवासियों के लिए रोजगार सृजन की सुविधा प्रदान करने के लिए क्षतिपूरक वनीकरण प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (CAMPA) के तहत 6,000

करोड़ रुपये की योजनाओं को मंजूरी देगी।

वैधानिक सुधार

आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत, भारत में कृषि एवं कृषि व्यवसाय का काया कल्प करने के लिये जून 2020 में निम्नांकित तीन अध्यादेश पारित किये गये थे:

आवश्यक वस्तु अधिनियम (संशोधन) अध्यादेश 2020: आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 देश में बिखराव से बचने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को कुछ वस्तुओं के उत्पादन, आपूर्ति और वितरण को नियंत्रित करता है। अधिनियम के तहत शामिल वस्तुओं में खाद्य तेल और बीज, दालें, गन्ना और उसके उत्पाद, और चावल धान शामिल हैं। अधिनियम में अनाज, खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू सहित खाद्य पदार्थों को निष्क्रिय करने के लिए संशोधन किया जाएगा। इस क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करने और प्रतिस्पर्धा को सक्षम करके किसानों के लिए बेहतर मूल्य वसूली की अनुमति देने की उम्मीद है। कीमतों में वृद्धि के साथ राष्ट्रीय आपदाओं और अकाल जैसी असाधारण परिस्थितियों में स्टॉक सीमा लागू की जाएगी। इसके अलावा, कोई ऐसी स्टॉक सीमा संवर्धन (प्रोसेसर) या मूल्य श्रृंखला प्रतिभागी के लिए लागू नहीं होगी, जो उनकी स्थापित क्षमता के अधीन है, या निर्यात मांग के अधीन किसी भी निर्यातक के पास है।

किसान उत्पाद व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अध्यादेश, 2020: उदार व्यापार की अनुमति देना, खरीदारों के बीच प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, अंतरराज्यीय व्यापार में बाधाओं को दूर करना और बेचने और खरीदने के लिए अधिक विकल्प प्रदान करना। ये सभी गतिविधियाँ किसानों की आय बढ़ाने में परिणत होंगी।

किसान (सशक्तिकरण एवं संरक्षण) मूल्य आश्वासन एवं कृषि सेवा समझौता आध्यादेश 2020: बुवाई के समय किसानों को मूल्य की दृश्यता और आश्वासन की सुविधा, आगे के अनुबंधों के आधार पर फसल के फैसले, बाजार के जोखिमों को कम करने और अनियमित खाद्य मूल्य निर्धारण के मुद्दों को हल करने और अनुबंध खेती को प्रोत्साहित करने के लिए। इस प्रकार फोर्वार्ड कॉन्ट्रैक्ट (Forward Contract) से बाज़ार जोखिम कम हो जायेगा।

सितंबर के महीने में इन तीनो अध्यादेशो को निम्न के रूप में संसद के दोनो सदनो द्वारा पारित कर अधिनियम बना दिया गया है। प्रत्येक अधिनियम के मुख्य बिंदु निम्न प्रकार है:

1. किसान उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अधिनियम, 2020 [The Farmers' Produce Trade Commerce (Promotion & Facilitation) Act, 2020]

- नया कानून एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाएगा जहाँ किसान और व्यापारी कृषि-उपज की बिक्री और खरीद अपनी पसंद के आधार पर करेंगे।
- यह राज्य कृषि उत्पादन विपणन संगठनों के तहत अधिसूचित बाजारों के भौतिक परिसर के बाहर अवरोध मुक्त अंतर-राज्य और राज्य के अंदर व्यापार और वाणिज्य को भी बढ़ावा देगा।
- किसानों को उनकी उपज की बिक्री के लिए कोई उपकर या लगान नहीं लिया जाएगा और परिवहन लागत वहन नहीं करनी होगी।
- इलेक्ट्रॉनिक रूप से निर्बाध व्यापार सुनिश्चित करने के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग का भी प्रस्ताव है।
- मंडियों के अलावा फार्मगेट, कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस, प्रोसेसिंग यूनिट आदि पर ट्रेडिंग करने की स्वतंत्रता।
- किसान प्रत्यक्ष विपणन में संलग्न हो सकेंगे, जिससे बिचौलियों को समाप्त किया जा सकेगा, जिसके परिणाम स्वरूप मूल्य की पूर्ण प्राप्ति होगी।

2. किसान (सशक्तीकरण और संरक्षण) मूल्य आश्वासन और कृषि सेवा समझौता, अधिनियम, 2020 [The Farmers (Empowerment & Protection) Agreement of Price Assurance and Farm Services Act, 2020]

- नया कानून किसानों, थोक विक्रेताओं, एग्रीगेटर्स, बड़े खुदरा विक्रेताओं, निर्यातकों आदि के साथ जुड़ने के लिए किसानों को सशक्त करेगा। फसलों की बुवाई से पहले ही किसानों को मूल्य आश्वासन। अधिक बाजार मूल्य के मामले में, किसान न्यूनतम मूल्य से अधिक और ऊपर इस मूल्य के हकदार होंगे।
- यह बाजार की अप्रत्याशितता के जोखिम को किसान से प्रायोजक के लिये स्थानांतरित करेगा। जिससे किसान बाज़ार के उतार - चढाव से प्रभावित नहीं होंगें।
- यह किसान को आधुनिक तकनीक, बेहतर बीज और अन्य इनपुट का उपयोग करने में भी सक्षम बनाएगा।
- यह विपणन की लागत को कम करेगा और किसानों की आय में सुधार करेगा।
- विवाद निवारण के लिए स्पष्ट समय रेखाओं के साथ प्रभावी विवाद समाधान तंत्र प्रदान किया गया है।
- कृषि क्षेत्र में अनुसंधान और नई प्रौद्योगिकी के लिए बढावा देगा।

3. आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम 2020 [Essential Commodities (Amendment) Act 2020]

- खाद्य पदार्थ जैसे कि अनाज, दालें, खाद्य तेल, प्याज, आलू इत्यादि को आवश्यक वस्तु की सूची से हटाया गया है।
- इसमें ऐसे प्रावधान है जिससे बाज़ार में स्पर्धा बढेगी, खरीद बढेगी एवं किसानों को उचित मूल्य मिल सकेगा।

बाजार सुधार

कृषि विपणन सुधार: प्रस्तावित संशोधन कृषि उपज के मुक्त प्रवाह को सक्षम करने और किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्ति के विकल्प प्रदान करने वाली एक सुचारू आपूर्ति श्रृंखला स्थापित करने की आशा करते हैं। इसे प्रदान करने के लिए एक केंद्रीय कानून तैयार किया जाएगा;

- किसानों को उनकी उपज को पारिश्रमिक कीमतों पर बेचने के लिए पर्याप्त विकल्प,
- बाधा मुक्त अंतर्राज्यीय व्यापार,
- कृषि उपज के ई-ट्रेडिंग के लिए एक रूपरेखा। वर्तमान में, किसान केवल कृषि उपज मंडी समितियों (APMC) के लाइसेंस धारियों को अपनी उपज बेचने के लिए बाध्य हैं।

कृषि उपज मूल्य निर्धारण और गुणवत्ता आश्वासन: किसानों को एक निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से प्रोसेसर, एग्रीगेटर, बड़े खुदरा विक्रेताओं और निर्यातकों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाने के लिए एक सुविधाजनक कानूनी ढांचा बनाया जाएगा। किसानों के लिए जोखिम शमन, सुनिश्चित रिटर्न और गुणवत्ता मानकीकरण फ्रेमवर्क का एक अभिन्न हिस्सा होगा। इसका उद्देश्य किसानों को बुवाई के समय फसलों की कीमत का अनुमान लगाने में सक्षम बनाना है, और इससे क्षेत्र में निजी क्षेत्र का निवेश भी बढ़ेगा।

वन नेशन वन मार्केट: राष्ट्रीय कृषि बाजार (E-NAM), कृषि विपणन में एक अभिनव पहल है, जो किसानों को बाजार और खरीदारों की कई संख्या तक डिजिटल रूप से पहुँच बढ़ाती है और उपज की गुणवत्ता के आधार पर मूल्य खोज तंत्र और मूल्य प्राप्ति में पारदर्शिता लाती है। अंतिम किसान तक पहुँचने और अपनी कृषि बेचने के तरीके को बदलने के उद्देश्य से ई-नाम (E-NAM) ने 18 राज्यों और 03 केंद्र शासित प्रदेशों की 1000 मंडियों तक विस्तार किया। नए एफपीओ ट्रेड मॉड्यूल के तहत, किसान उत्पादन संगठन (एफपीओ) ई-नाम (E-NAM) प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने संग्रह केंद्रों से व्यापार कर रहे हैं। इस ऑनलाइन बाजार का

उद्देश्य लेन-देन की लागत को कम करना, सूचना की विषमता को कम करना और किसानों के लिए बाजार तक पहुँच बढ़ाने में मदद करना है।

एफपीओ और किसान समूहों के माध्यम से सहयोग की शक्ति का दोहन

सरकार ने 10,000 किसान उत्पादन संगठनों (एफपीओ) के गठन और संवर्धन के लिए एक नई योजना की घोषणा की है। किसान संगठन को कृषि संगठन बनाने के लिए छोटे और सीमांत किसान को अपने संगठन के रूप में एकत्रित करना एवं कृषि आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय की एक और बड़ी पहल है। यह उत्पादन की लागत को कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और अपनी शुद्ध आय को बढ़ाने के लिए बेहतर विपणन संपर्क की सुविधा के लिए सबसे प्रभावी और उपयुक्त संस्थागत तंत्र साबित होगा। यह न केवल किसानों की आय बढ़ाने में मदद करेगा, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की ओर जमीनी स्तर पर एक आदर्श बदलाव लाएगा। हाल ही में, योजना के परिचालन दिशा निर्देशों को लॉन्च किया गया है। इस योजना की मुख्य विशेषता इस प्रकार है:

- मैदानी क्षेत्र में न्यूनतम सदस्य संख्या 300 है, जबकि उत्तर-पूर्व और पहाड़ी क्षेत्रों में 100 है

- एफपीओ को कंपनी अधिनियम या किसी भी राज्य सहकारी समिति अधिनियम के तहत पंजीकृत किया जाएगा, जैसा कि एफपीओ के सदस्यों द्वारा तय किया गया है
- लक्षित एफपीओ के पंद्रह प्रतिशत का गठन एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स में किया जाना है, और एफपीओ के गठन को अधिसूचित जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिकता दी जानी है
- मूल्य श्रृंखला, प्रसंस्करण और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट की अवधारणा पर योजना को केंद्रित किया जाएगा
- एसएफएसी, एनसीडीसी और नाबार्ड को कार्यान्वयन एजेंसियों के रूप में चुना गया है
- एफपीओ बनाने वाली कृषि मूल्य श्रृंखला संगठन और सदस्यों की उपज के लिए 60% बाजार लिंकेज की सुविधा, एवं एफपीओ प्रबंधन लागत की प्रतिपूर्ति की जा सकती है

- कार्यान्वयन एजेंसी (आईएएस) एफपीओ को बनाने, पंजीकरण करने और बढ़ावा देने के लिए पेशेवर रूप से प्रबंधित क्लस्टर आधारित व्यवसाय संगठन (सीबीबीओ) को संलग्न करेगी।

उपसंहार

आत्मनिर्भर भारत पैकेज में वैसे तो सम्पूर्ण विकास का ध्यान रखा गया है। इसमे कृषक एवं कृषि उद्यमियों का विशेष ध्यान रखा गया है। एक और तो नीतिगत फैसले लिये गये है तो दूसरी और वैधानिक संशोधनो तथा नये अधिनियमों द्वारा इन फैसलों को दृढ बनाया गया है। इस प्रकार हम देखते है कि छात्र इस देश के नवनिर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण सहयोग कृषि उद्यमिता द्वारा दे सकते है। एक कदम उठाने की आवश्यकता है जो कि इन छात्रों के कैरियर में बहुत लम्बी छलांग साबित हो सकता है। अत: नवोचर समर्थित कृषि उद्यमिता अपनायें तथा भारतवर्ष को आत्मनिर्भर बनाये।

1. COVID-19 के मद्देनजर लॉकडाउन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए आर्थिक पैकेज का नाम क्या है?

2. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से कितने आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा की गयी है?

3. आत्मनिर्भर भारत अभियान आर्थिक पैकेज भारत की जीडीपी के कितने प्रतिशत के बराबर है?

4. सरकार का लक्ष्य वन नेशन वन राशन कार्ड को कब लागू किया गया है?

5. डिजिटल/ऑनलाइन शिक्षा के लिए मल्टी -मोड एक्सेस के लिए सरकार द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम का नाम क्या है?

6. PMMSY किसके लिए शुरू किया गया है?

स्टार्टअप इंडिया: भारत के नवोन्मेषी होने की अपार संभावनाएं

प्रस्तावना

यह सर्व विदित है कि स्टार्टअप को एक छोटी फर्म के रूप में लिया जाता हैं, लेकिन वे बहुत नई नौकरियां पैदा करके आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और नवाचार को बढ़ावा देते हैं और प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करते हैं। तथा सीधे उन शहरों के विकास को प्रभावित करते हैं, जिन में ये स्टार्टअप पले बढ़े थे। एक बार जब रोजगार के अवसर बढ़ जाते हैं, तो अनुभवी प्रतिभाएँ भी चुनौतीपूर्ण और उच्च विकास कैरियर बनाने के लिए इन जगहों पर जाने लगती हैं। जैसे-जैसे इन शहरों में अत्यधिक प्रतिभाशाली लोगों की मांग बढ़ती है, हाल के स्नातकों की आमद में वृद्धि होती है। सबसे अच्छे उदाहरण बैंगलोर, हैदराबाद और गुरुग्राम हैं।

बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और स्टार्टअप्स

पेटेंट (संशोधन) नियम, 2017, 2018 और 2019 के माध्यम से स्टार्टअप्स और छोटी इकाइयों को कुछ विशेष लाभ दिए गए हैं, जैसे कि व्यापक परिभाषा, विभिन्न प्रकार के शुल्क में छूट और इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग आदि। स्टार्टअप्स को बौद्धिक संपदा अधिकार (IPRs) के अन्य मंचों की भी रक्षा करनी चाहिए। जैसे कि कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और डिजाइन इत्यादि।

स्टार्टअप की मदद एवं कृषि ऋण के लिए आरबीआई ने प्राथमिकता क्षेत्र के मानदंडों को बदला

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने स्टार्टअप और कृषि सहित सेगमेंट के लिए फंडिंग बढ़ाने के लिए संशोधित प्राथमिकता क्षेत्र ऋण देने के दिशानिर्देश जारी किए। स्टार्टअप्स को 50 करोड़ रुपये तक का बैंक वित्त, ग्रिड से जुड़े कृषि पंपों के सोलराइजेशन के लिए सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना के लिए एवं संपीड़ित बायोगैस (CBG) संयंत्रों की स्थापना के लिए नवीन श्रेणियों के रूप में शामिल किया गया है। प्राथमिकता चिन्हित जिलों में प्राथमिकता वाले सेक्टर को वहां बढावा दिया गया है, जहाँ प्राथमिकता क्षेत्र क्रेडिट प्रवाह तुलनात्मक रूप से कम है।

ज्ञान आधारित समाज एवं विकसित देशों में बहुधा स्टार्टअप इकोसिस्टम को भविष्य में निवेश के पहले से और साथ ही दीर्घकालिक आर्थिक नीति को सक्रिय रूप से डिजाइन करने के पहलू से प्रोत्साहित किया जाता है। स्टार्टअप दुनिया का सुधार कर सकते हैं और आने वाले वर्षों में स्टार्टअप और रचनात्मकता के साथ अधिक संख्या में और भी स्टार्टअप उभरेंगे। उद्यमशीलता ही किसी राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने का एक मात्र उपाय है। और एक छोटा आईडिया बड़े अभिनव समाधान के रूप में भविष्य को बदल सकता है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं

- उद्यमी
- आईडिया, आविष्कार और अनुसंधान, यानी बौद्धिक संपदा अधिकार
- उद्यमिता शिक्षा
- स्टार्टअप टीम के सदस्य
- स्टार्टअप की विभिन्न अवस्थायें
- दूत निवेशक (Angel Investor)
- अन्य व्यवसाय उन्मुख लोग
- स्टार्टअप इवेंट
- स्टार्टअप गतिविधियों वाले अन्य संगठनों के लोग
- स्टार्टअप मेंटर और सलाहकार

विदेश ऊष्मायन के अवसर

भारत-रूस संयुक्त प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और त्वरित व्यावसायीकरण कार्यक्रम

भारत-रूस संयुक्त प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और त्वरित व्यावसायी करण कार्यक्रम विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की एक संयुक्त पहल है; रूसी संघ के छोटे अभिनव उद्यमों (FASIE) को सहायता के लिए फाउंडेशन और भारतीय वाणिज्य और उद्योग महासंघ (FICCI) द्वारा भारत में लागू किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत और रूस के बीच प्रौद्योगिकी विकास और क्रॉस कंट्री प्रौद्योगिकी अनुकूलन के लिए संयुक्त अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का समर्थन करना है। दो वर्षों की अवधि में, डीएसटी दस भारतीय स्टार्टअप/ लघु एवं मध्यम इकाई (SME) को 15 करोड़ रुपये तक का फंड देगा और FASIE रूसी समकक्षों को समानधन मुहैया कराएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है, जिसमें नवीन भारतीय और रूस विशाल एवं प्रोद्योगिकी के नेतृत्व वाले लघु एवं मध्यम इकाई (SME) और स्टार्टअप मिलकर पारस्परिक रूप से समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए व्यावसायिक उपक्रमों को चला सकें।

फोकस क्षेत्र	
आईटी और आईसीटी, बिग डाटा एनालिटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)	जैव प्रौद्योगिकी
दवा और फार्मास्यूटिकल्स	रोबोटिक्स और ड्रोन
नवीकरणीय ऊर्जा	एयरोस्पेस
	स्वच्छ प्रौद्योगिकियों/ वैकल्पिक प्रौद्योगिकी

वांछित लाभ	
निधियों तक पहुँच	प्रौद्योगिकी हस्तांतरण/ अनुकूलन
क्षमता निर्माण	तकनीक प्रदर्शनी
सहायता और सलाह-शिक्षा समर्थन	नेटवर्किंग अवसर

बिजनेस स्टाइल और उनकी फंडिंग

2015 के NSSCOM आंकड़ों के अनुसार, परीधन (एंजेल फंडिंग) का लगभग 68 प्रतिशत बी-2-सी सेगमेंट में जाता है। जबकि B-2-B सेगमेंट को 32 प्रतिशत मिलता है। वेंचर कैपिटल सहित कुल फंडिंग का B-2-B सेक्टर में एग्रीगेटर सेवाओं को 23 प्रतिशत मिलता है, इसके बाद भुगतान सेवाओं को सोलह प्रतिशत (16%) मिलता है। शिक्षा तकनीकी एडुटेक (Edutech) कंपनियों का तेजी से विकास हो रहा है। B-2-B सेक्टर में ई-कॉमर्स में 38 फीसदी और एग्रीगेटर्स को करीब 35 फीसदी मिलता है।

बी-2-बी: यहाँ लेन-देन बिज़नेस से बिज़नेस के बीच होता है, जैसे कि मैन्युफैक्चरिंग (एक छोटी कंपनी पुर्जे बनाती है, जो बड़े मैन्युफैक्चरर्स द्वारा उपयोग किए जाते हैं) या वेब डेवलपर (जो अन्य व्यावसायिक संस्थाओं के लिए वेबसाइट विकसित करते हैं)। एक अन्य उदाहरण डिजिटल मार्केटिंग कंपनियों का भी है।

बी-2-सी: यहाँ लेन-देन बिजनेस से कंज्यूमर के बीच होता है। हम कह सकते है व्यापर से उपभोग्ता के माध्यम जैसे ओलाकैब एग्रीगेटर सेवा या ऑनलाइन शिक्षा सेवा के बीच होता है, जहाँ छात्र उपभोक्ता होते है।

सी-2-बी: यहाँ उपभोक्ता व्यवसाय में मूल्य लाता है, जैसे अमेज़ॅन की प्रतिक्रिया प्रणाली, लोग देखते हैं कि उपभोक्ताओं और रेटिंग द्वारा किस तरह की प्रतिक्रिया दी जाती है और तदनुसार खरीदारी करते हैं। इसी तरह, फूडब्लॉगर भी इस क्षेत्र में कार्य करता है। कई सर्विस फीडबैक कंपनियां भी हैं।

उद्यमिता की यात्रा

वृद्धि चरण	व्यापार सुविधाएँ और धन का स्रोत
धारणा अवस्था	नवाचार जनन (आइडिया क्रॉपिंग), परिवार और मित्र गण धन प्रदान करते है
बीज अवस्था	तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा आइडिया को मान्यता दी जा रही है। प्रौद्योगिकी व्यवसाय इन्क्यूबेटरों जैसे कि ए-आईडिया (a-IDEA) तकनीकी सहायता प्रदान करता है, परन्तु 10 लाख रुपये से अधिक का बीज धन नहीं देता है।

 प्राथमिक अवस्था	प्रारंभिक आउटपुट तकनीकी और व्यावसायिक विशेषज्ञों द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। टी-हब (T-Hub), ए-आईडिया (a-IDEA) या सीआईआईई जैसे प्रौद्योगिकी त्वरक सरकार की योजनाओं के तहत मान्यता प्राप्त त्वरक (Business Accelerator) फंडिंग के माध्यम से सहायता कर सकते हैं। भारत सरकार की योजना के अंतर्गत BIRAC, NIDHI आदि का समर्थन 25.00 - 50.00 लाख रुपये के बीच है।
 युवा अवस्था	व्यावसायिक विशेषज्ञों द्वारा व्यावसायिक क्षमता की पहचान की जाती है। हाई नेटवर्क इंडिविजुअल्स (HNI) मदद करते हैं और उन्हें देवदूत निवेशक "एंजेल इन्वेस्टर" कहा जाता है। हैदराबाद एंजेल और इंडस एंटरप्रेन्योर्स इस प्रकार के देवदूत निवेश देने वाले समूह हैं। एंजेल निवेशक उच्च जोखिम लेने वाले हैं और इक्विटी और उच्च प्रतिफल में अधिक से अधिक भाग की आशा करते हैं। वे मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं, और कभी-कभी बोर्ड के सदस्य के रूप में भी बनना चाहते हैं। इस स्तर पर केट्टो, किकस्टार्टर, सीड्स स्पार्क और कई अन्य जैसे क्राउड फंडिंग प्लेटफॉर्म भी बहुत मदद करते हैं।
 वृद्धि अवस्था	इस अवस्था की पहचान यह है कि बाजार विशेषज्ञ एवं निवेश कंपनियां व्यवसाय की सतत स्थिरता को मान्यता देने लगते है। सीमित देयता भागीदारी (एलएलपी) फर्में, जो निवेशकों से धन जुटाती हैं, वे वेंचर कैपिटल (वीसी) फर्मों का समर्थन करेंगी। वीसी फर्म कम जोखिम लेने वाले हैं, पेशेवर सहायता भी प्रदान करते हैं, और इक्विटी या स्वामित्व हिस्सेदारी के बदले में निवेश करते हैं एवं वे सदा कंपनी बोर्ड में रहने की चेष्टा करते हैं।
 विस्तार अवस्था	व्यावसायिक विकास की संभावनाओं को पेशेवर व्यावसायिक समूहों द्वारा मान्यता प्राप्त हो जाती है। बैंक और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) समग्र समर्थन करते हैं।
 धन-अर्जन अवस्था	यह अंडे देने की अवस्था है, और कंपनी ने महत्वपूर्ण लाभ अर्जित करना प्रारंभ कर दिया है। निजी इक्विटी (पीई), फर्म का समर्थन करने के लिए कूद जायेगें, जैसे कि चीन की कई कंपनियों ने पेटीएम इत्यादि में निवेश किया है। वहाँ कंपनियां इन स्टेक को स्वयं रखती है अथवा अन्य निवेशकों (निजी या संस्थागत) को बेचती हैं। निजी इक्विटी का सामान्य अर्थ है आपकी कंपनी का आंशिक स्वामित्व खोना।

इन्क्यूबेटर्स और एक्सेलेरेटर्स

इनक्यूबेटर्स और एक्सलेरेटर्स स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के महत्वपूर्ण समर्थन केंद्र हैं। इनक्यूबेटर्स एक स्टार्टअप के जीवन चक्र में सहायता प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होते हैं, जबकि त्वरक स्टार्टअप के विकास और गति के लिए अधिक केंद्रित होते हैं। इनक्यूबेटर प्रोग्राम के लिए एक विशिष्ट अवधि 6-36 महीने है, जबकि एक्सेलेरेटर प्रोग्राम के लिए यह 3-12 महीने है। इनक्यूबेटर और एक्सेलेरेटर वर्तमान में प्रौद्योगिकी संचालित हैं, और मोटे तौर पर इसे चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: कॉर्पोरेट, स्वतंत्र, शैक्षणिक और सरकार द्वारा समर्थित।

भारत में कृषि क्षेत्र के प्रमुख ऊष्मायन (Incubator) एवं त्वरक (Accelerators) का वर्णन आगामी पृष्ठों में किया गया है।

ए-आईडिया (कृषि में उद्यमिता के नवाचार विकास के लिए एसोसिएशन):

कृषि में उद्यमिता के नवाचार विकास के लिए एक प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर (टीबीआई) है, जिसे आईसीएआर- राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद (आईसीएआर-नार्म), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग एवं नाबार्ड द्वारा होस्ट किया जाता है। कृषि में नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए ICAR-NAARM के सेंटर फॉर एग्री-इनोवेशन में ए-आईडिया (a-IDEA) को स्थापित किया गया है। ए-आईडिया (a-IDEA) का उद्देश्य उद्यमियों की मदद कर उनके अभिनव प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप को गति देना और तेज करना है, जो कि क्षमता निर्माण, सलाह, नेटवर्किंग और परामर्श सहायता के माध्यम से प्रतिस्पर्धी स्वाद और कृषि व्यवसाय उद्यम बनने के लिए निहित हैं।

कृषि उड़ान: यह नार्म (NAARM) के ए-आईडिया (a- IDEA) और IIM-अहमदाबाद के, CIIE तथा कैस्पियन इम्पैक्ट इन्वेस्टमेंट के साथ साझेदारी में और DST द्वारा समर्थित भारत का प्रथम फूड एंड एग्रीबिजनेस एक्सीलेटर है। कार्यक्रम कठोर मेंटरिंग, उद्योग नेटवर्किंग और निवेशक पिचिंग के माध्यम से स्केल-अप स्टेज फूड एंड एग्रीबिजनेस स्टार्टअप को उत्प्रेरित करने पर केंद्रित है। AGRI UDAAN के लिये 200 एग्रीबिजनेस स्टार्टअप ने त्वरक कार्यक्रम के लिए आवेदन किया है, 40 स्टार्टअप को सलाह दी है, उनके 8 स्टार्टअप मूल्य श्रृंखला के क्षमता अंत से अंत निर्माण किया है और इन 8 में से 3 स्टार्टअप ने 2.5 करोड़ रुपये की कुल निधि प्राप्त की है। फोकस क्षेत्र स्थायी इनपुट, सटीक/ स्मार्ट कृषि, नवीन खाद्य प्रौद्योगिकी, आपूर्ति श्रृंखला प्रौद्योगिकी आदि हैं। इस संघ द्वारा कुछ शॉर्टलिस्टेड इनक्यूबेट इस प्रकार है: जनरल एग्रीटेक;

डेल्मोस रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड; Agricx; इंटेलो लैब्स; Smoodies; Jivabhumi; युक्ती हार्वेस्ट; आरएफ वेव तकनीक; Odaku; Growyi, आदि।

नवाचार ऊष्मायन और उद्यमिता केंद्र (CIIE): CIIE भारत में नवाचार-संचालित उद्यमिता का एक प्रमुख संगठन है। सेंटर फॉर इनोवेशन इनक्यूबेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप (CIIE), आईआईएम अहमदाबाद में एक शोध केंद्र भी है। इसके प्रभाव स्वरुप 500 उद्यमियों को इनक्यूबेट किया गया तथा त्वरित किया गया, 100 स्टार्टअप को वित्त पोषित किया तथा 300 नौकरियों का सृजन हुआ। इसने नार्म (NAARM) के सहयोग से एक खाद्य और कृषि-व्यवसाय त्वरक कृषि उड़ान लॉन्च किया है।

इक्रिसेट (ICRISAT) इनक्यूबेटर: दिसंबर 2002 में, एक गैर-लाभकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठन, इक्रिसेट (ICRISAT) ने भारत सरकार की एजेंसी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के साथ मिलकर एक एग्रीबिजनेस इनक्यूबेटर (एबीआई) विकसित किया है। यह इनक्यूबेटर डीएसटी के राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता विकास बोर्ड द्वारा समर्थित है, जो सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करके स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के विकास और व्यावसायीकरण को बढ़ावा देता है। इक्रिसेट (ICRISAT) ने कृषि तकनीक उद्यमियों, वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों का समर्थन करने के लिए इनोवेशन हब (iHub) का शुभारंभ किया, जिसमें नए विचारों का संपूर्ण कृषि मूल्य श्रृंखला के लिए नवाचार किया जा सके।

टी हब: टी-हब तेलंगाना सरकार तथा हैदराबाद स्थित तीन शैक्षणिक संस्थानों--आईआईआईटी, आईएसबी और नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, एवं प्रमुख निजी क्षेत्र के बीच एक अद्वितीय सार्वजनिक-निजी साझेदारी है। ये इकाइयां हैदराबाद के आसपास केंद्रित एक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए एक स्पष्ट दृष्टिकोण के मध्य एक साथ आई हैं, जो प्रौद्योगिकी, शिक्षा और उद्यमिता और शहर की पारंपरिक सामर्थ्य का लाभ के साथ-साथ इन क्षेत्रों में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसायों के लिए एक गंतव्य स्थान है। टी-हब को प्रौद्योगिकी-संबंधित स्टार्टअप का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका मिशन भारत में अधिक स्टार्टअप सफलता की कहानियों को प्रोत्साहित करना और ऐसी ज्वाला उत्पन्न करना है, जिससे की विश्व के सर्वोतम स्टार्टअप एवं उद्यमी, तेलंगाना राज्य से उत्पन्न होने के पश्चात सम्पूर्ण भारत में फैल जायें।

वी हब (WE HUB): तेलंगाना सरकार ने विशेष रूप से महिलाओं के लिए भारत के पहले नेतृत्व इनक्यूबेटर 'WE Hub' का शुभारंभ किया। वी-हब (WE HUB) महिला उद्यमियों के लिए अपनी तरह का प्रथम और केवल राज्य सरकार द्वारा संचालित मंच है। यह हब सॉफ्ट-लैंडिंग प्रदान करके विविध पृष्ठ भूमि की महिलाओं की मदद करते हैं। टी-हब के विपरीत, जो प्रौद्योगिकी स्टार्टअप के लिए है, वी हब महिलाओं के नेतृत्व में सभी प्रकार के स्टार्टअप के लिए खुला रहेगा।

Ideate. Implement. Inspire

वी हब का उद्देश्य प्रौद्योगिकी में उभरते क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने वाले नवीन विचारों, समाधानों और संस्थाओं के साथ महिला उद्यमियों का समर्थन करना है। यह सेवा क्षेत्र के साथ-साथ कम-खोजी/ अस्पष्टीकृत क्षेत्रों का भी समर्थन करेगा। वी हब का अधिदेश और लक्ष्य महिलाओं के लिए वित्तीय, सामाजिक और अन्य बाधाओं को समाप्त करना और उन्हें अपने उद्यमों में सफल होने में मदद करना है। निम्नलिखित स्टार्टअप वी-हब के अंतर्गत कार्य करते है।

- स्टार्टउन (STARTOON) लैब
- साईं सारस एग्रो फूड्स
- वूबलू (WOOBLOO), पर्सनल असिस्टेंट ऐप
- स्वीटूथ-डिजर्ट एवं ब्रेड (Sweetooth - Dessert and bread) कंपनी
- एक्स्जोटिक ब्लूमिन्ग टीज़ (Exotic Blooming Teas)

वी-हब (WE HUB) द्वारा संचालित प्रमुख योजनाएँ

- TREAD (व्यापार संबंधी उद्यमिता सहायता और विकास) योजना
- महिला उद्योग निधि योजना
- मुद्रा योजना
- अन्नपूर्णा योजना
- महिला उद्यमियों के लिए स्त्री शक्ति पैकेज
- भारतीय महिला व्यवसाय बैंक ऋण
- देना शक्ति योजना
- उद्योगिनी योजना
- सेन्ट कल्याणी योजना

एग्री-टेक स्टार्टअप एक्सेलेरेटर CIE, हैदराबाद:

भारतीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT)-हैदराबाद और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर एक्सटेंशन मैनेजमेंट (MANAGE) ने एग्री टेक स्टार्टअप एक्सेलेंस प्रोग्राम शुरू करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। एग्री टेक स्टार्टअप एक्सेलेरेटर कार्यक्रम, कृषि विशिष्ट मुद्दों को हल करने के लिए नवीनतम तकनीकों और नवाचारों का उपयोग करके विचार-मंच उद्यमों की पहचान, समर्थन और सुविधा प्रदान करेगा।

कृषि व्यवसाय उद्यमियों को संस्थागत समर्थन

केंद्र सरकार और विभिन्न राज्य सरकार के संस्थानों को विभिन्न प्रकार की सहायता और सुविधाएं प्रदान करके कृषि-उद्यमियों की मदद करने का अधिकार है। संस्थागत समर्थन की उपलब्धता नए कृषि-उद्यमियों को कृषि व्यवसाय के लिए प्रेरित करेगी। अग्रिम भाग में हम कृषि-उद्यमियों को उपलब्ध मौजूदा समर्थन संरचना को देख सकते हैं।

ए. कृषि मानव संसाधन प्रबंधन के लिए विशेष प्रशिक्षण संस्थान

1. **राज्य कृषि विश्वविद्यालय:** हाल ही में, भारत में लगभग सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs) कृषि व्यवसाय शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। ऐसा करते समय यह एक साथ कृषि उद्यमों के लिए उपलब्ध भावी पीढ़ियों के बीच कृषि विकास को बढ़ावा भी देता है। कृषि व्यवसाय शिक्षा और उद्यमिता एवं विकास को मजबूत करने के लिए (स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर में) नए पाठ्यक्रम, एवं बढ़ती मांग को देखते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। उदाहरण के लिए TNAU ने अलग-अलग निदेशालय की स्थापना की है, पीएचपी पाठ्यक्रम विभाग: बीएसी (एबीएम), एमबीए, (एबीएम), RAWE-EDP मॉड्यूल इत्यादि।

2. **कृषि विज्ञान केंद्र:** आईसीएआर प्रायोजित केवीके पूरे देश में उपलब्ध हैं, जो कृषि युवाओं के बीच कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देने के व्यापक उद्देश्य के साथ विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ अभिनव प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे जैविक उत्पादों और जैविक आदानों का उत्पादन, मधुमेह अथवा हृदय रोगी के लिए विशेष पैकेज्ड खाद्य पदार्थ, विशेष अवसर और मौसम के लिए फूल व्यवसाय इत्यादि उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है।

3. **कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी:** इसको आत्मा (ATMA) के नाम से पुकारते है। इसकी मौजूदा संरचना एक जिला स्तरीय एजेंसी समूह विशिष्ट कृषि व्यवसाय उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए व्यापक गुंजाइश और समर्थन प्रदान करती है। उदाहरण के लिए समूह खेती, ATMA के प्रावधान का उपयोग करके समूह विपणन।

4. आईसीएआर और भारत सरकार के राष्ट्रीय संस्थान: आईसीएआर और भारत सरकार के विभिन्न राष्ट्रीय संस्थानों ने भी कृषि स्नातकों के बीच कृषि व्यवसाय उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए व्यापक रूप से कृषि व्यवसाय कार्यक्रम शुरू किया है। विशेषत: पहली पंक्ति और दूसरी पंक्ति के प्रबंध संस्थान जैसे, NAARM, NIAM, MANAGE, एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट में PG डिप्लोमा का संचालन करते है।

5. उद्यमिता विकास प्रकोष्ठ (EDC): राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs) और यहाँ तक कि पारंपरिक विश्वविद्यालयों ने छात्रों के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए उद्यमिता विकास सेल का संचालन शुरू किया। उदाहरण के लिए भारतियार विश्वविद्यालय, कोयंबटूर और कोयंबटूर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी (CIMAT) के EDC अच्छी तरह से काम कर रहे हैं।

6. राष्ट्रीय उद्यमिता संस्थान और लघु व्यवसाय विकास (NISEBUD): यह संस्थान नई दिल्ली में कार्यरत है। यह उद्यमियों की विभिन्न श्रेणियों के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह ईडी गतिविधियों में शामिल विभिन्न एजेंसियों के बीच एक मंच स्थापित करता है।

7. राष्ट्रीय लघु उद्योग विस्तार प्रशिक्षण संस्थान (NISIET): यह हैदराबाद में कार्य कर रहा है। यह लघु उद्योग (एसएसआई) के उद्यमियों को प्रशिक्षण देता है। इसके अलावा यह एसएसआई के विकास पर शोध का भी समर्थन करता है। यह एसएसआई को अपनी परामर्श सेवाएं प्रदान करता है।

8. स्वरोजगार और प्रशिक्षण संस्थान के लिए ग्रामीण विकास (RUDSETI): सिंडिकेट बैंक द्वारा इस संगठन को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह मैंगलोर और कन्नूर में प्रशिक्षण संस्थानों का संचालन करता है। यह ग्रामीण बेरोजगार युवाओं के लिए एक आवासीय उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम आयोजित करता है।

9. कैरियर विकास केंद्र (Career Development Centre): राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) द्वारा विश्व बैंक (World Bank) समर्थित राष्ट्रीय उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) के अंतर्गत पाँच कृषि विश्वविद्यालयों में इन केन्द्रों की स्थापना की है।

1. केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (CAU), लमफेलपत, इंफाल
2. इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, (IGKV), रायपुर, छत्तीसगढ़
3. श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय (SKNAU), जोबनेर, राजस्थान
4. श्री वेंकटेश्वारा पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय (SVVU), तिरुपति
5. उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय (UBKV), कूच बिहार, पश्चिम बंगाल

इन कैरियर विकास केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य कृषि छात्रों का विभिन्न प्रकार में क्षमता निर्माण करना तथा उनमें उत्साह वर्धन कर उद्यमिता विकास करना है।

बी. व्यवसाय उद्यमी को बुनियादी ढाँचा समर्थन

छोटे व्यवसाय हमारी अर्थव्यवस्था के चालक हैं, और आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे में निवेश को उनके महत्व के अनुसार को प्रतिबिंबित होना चाहिए। इसका मतलब यह है, कि बड़े निगमों के बजाय सामुदायिक विकास और बुनियादी ढाँचे की पहल से छोटे व्यवसायों और उनके स्थानीय समुदायों को लाभ होता है।

निम्नलिखित उपक्रम तथा संस्थाये व्यवसाय उद्यमी के लिए मुख्य बुनियादी ढाँचा समर्थन के उदाहरण है:

1. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)

एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें व्यापार और व्यापार कानून देश के बाकी हिस्सों से कुछ अलग रहतें हैं। एसईजेड देश की राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर स्थित हैं, और उनके उद्देश्यों में व्यापार संतुलन, रोजगार, निवेश वृद्धि, रोजगार सृजन और प्रभावी प्रशासन शामिल हैं। व्यवसायों को प्रोत्साहित कर क्षेत्र में स्थापित करने के लिए वित्तीय नीतियों को लागू किया जाता है। ये नीतियां आम तौर पर निवेश, कराधान, व्यापार, कोटा, सीमा शुल्क और श्रम नियमों को शामिल करती हैं। इसके अतिरिक्त, कंपनियों को कर अवकाश की पेशकश की जा सकती है, जहाँ एक क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करने पर, उन्हें कम कराधान की अवधि दी जाती है।

- 16 राज्यों और यूटी में 237 एसईजेड
- सिद्धांत: 166 स्वीकृत, और 41 SEZ को औपचारिक रूप से सहायक उद्यमी हेतु अधिसूचित किया गया

2. कृषि निर्यात क्षेत्र (AEZ)

कृषि निर्यात क्षेत्र या AEZ मुख्य रूप से निर्यात के लिए, देश में एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ पर कृषि आधारित प्रसंस्करण किया जाता है। इस शब्द का व्यापक रूप से भारत में निम्नांकित हेतु उपयोग किया जाता है।

- कृषि-निर्यातक की आवश्यकतायें पूरा करने के लिए
- श्रृंखला और रसद की आपूर्ति के लिए कोल्ड चेन का प्रावधान करने के लिए

3. कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA)

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) भारत सरकार द्वारा कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास की संस्था है तथा इसे एपिडा के नाम से पुकारते है, इसका मुख्यालय दिल्ली में है तथा इसका मुखिया एक अध्यक्ष होता है। एपीडा 27 वर्षों से कृषि-निर्यात समुदाय

की सेवा कर रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों में निर्यातकों तक पहुँचने के लिए, APEDA ने मुंबई, बैंगलोर, हैदराबाद, कोलकाता और गुवाहाटी में 5 क्षेत्रीय कार्यालय तथा 13 आभासी कार्यालय, तिरुवनंतपुरम (केरल), भुवनेश्वर (उड़ीसा), श्रीनगर (J&K), चंडीगढ़, इंफाल (मणिपुर), अगरतला (त्रिपुरा), कोहिमा (नागालैंड), चेन्नई (तमिलनाडु), रायपुर (छत्तीसगढ़), अहमदाबाद (गुजरात), भोपाल (मध्य प्रदेश), लखनऊ (उत्तर प्रदेश) और पणजी (गोवा) में स्थापित किए हैं। एपीडा को अनुसूची में सूचीबद्ध 14 कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद समूहों के निर्यात संवर्धन और विकास की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके अलावा, एपीडा को चीनी के आयात की निगरानी करने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई है।

एपीडा एग्रो उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढांचे और गुणवत्ता के उन्नयन के अलावा बाजारों के विकास में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। एग्रो निर्यात को बढ़ावा देने के अपने प्रयास में, एपीडा कृषि निर्यात संवर्धन योजना के उप-घटकों जैसे कि बाजार विकास, बुनियादी ढांचा विकास, गुणवत्ता विकास और परिवहन महत्व के तहत पंजीकृत निर्यातकों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

- कृषि उत्पादों के माध्यम से विदेशी मुद्रा को अधिकतम करना।
- मूल्यवर्धित उत्पादों के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा करना, जैसे कि अंगूर, आम इत्यादि।

4. केरल इन्फ्रास्ट्रक्चर अथॉरिटी (KINFRA)

केरल औद्योगिक अवसंरचना विकास निगम (KINFRA) का उद्देश्य केरल राज्य में उपलब्ध सभी उपयुक्त संसाधनों को एक साथ लाना और राज्य के औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचा विकसित करना है। KINFRA सर्वोतम उद्योग को विशिष्ट-बुनियादी ढाँचा प्रदान करके केरल में औद्योगिक विकास के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

इस संस्था ने 20 से अधिक मुख्य योग्यता क्षेत्रों की पहचान की है। इसमें 12 अच्छी तरह से परिभाषित औद्योगिक पार्क हैं, जिनमें से कई कार्यात्मक हैं और कुछ लॉन्चिंग चरण में हैं। इनमें से प्रत्येक पार्क ग्राहकों को व्यापक बुनियादी ढाँचा और समर्थन सेवाएँ प्रदान करता है। KINFRA की सबसे आकर्षक विशेषता यह है, कि यह एकल-खिड़की निकासी सुविधाएं प्रदान करती है। आकर्षक प्रोत्साहन

विस्तार और विविधीकरण के उत्कृष्ट अवसर भी विशिष्टताएं हैं। निम्नलिखित मुख्य बिंदु इस प्रकार है;

- उद्योगों का विकास
- सामाजिक, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय और पारिस्थितिक संतुलन
- औद्योगिक पार्क/ टाउनशिप/ क्षेत्र

5. स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन (STC)

इस संस्था को वर्ष 1956 में स्थापित किया गया था, भारत सरकार के राज्य व्यापार निगम का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक घराना है; 90% इक्विटी भारत सरकार के स्वामित्व में है। STC बड़ी मात्रा में चावल, गेहूँ, चीनी, दालें, खाद्य तेल, उर्वरक, कोयला, बुलियन इत्यादि जैसे थोक वस्तुओं के आयात और निर्यात का कार्य करता है। यह गेहूँ, चीनी, दालों आदि जैसे बड़े उपभोग की वस्तुओं का आयात भी करता है।

6. ई-नाम (E-NAM)

इस संस्था को प्रचलित रूप में ई-नाम (E-NAM) कहते है। भारत में कृषि समुदायों के लिए यह एक ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म है, तथा एक राष्ट्रीय बाज़ार के रूप में कार्यरत है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा अधीन कार्य करता है। लघु किसानों कृषि व्यवसाय संघ (SFAC) द्वारा नियंत्रित है। यह योजना कृषि विपणन में एकरूपता को बढ़ावा देती है:

- एकीकृत बाजारों में प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करना
- वास्तविक मांग और आपूर्ति के आधार पर वास्तविक समय मूल्य खोज को बढ़ावा देना
- भारत भर में कृषि उपज बाजार समिति (APMCs) को एकीकृत करना
- उपज की गुणवत्ता और समय पर ऑनलाइन भुगतान के आधार पर पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से बेहतर कीमत की खोज प्रदान करना

सी. व्यावसायिक उद्यमियों को संस्थागत वित्त

भारत में, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक वित्तीय संस्थान उपलब्ध हैं। चूँकि भारतीय अर्थव्यवस्था इतनी बड़ी है, इसलिए हर क्षेत्र को अपनी अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए विभिन्न संस्थानों की आवश्यकता होती है। कृषि क्षेत्र का प्रबंधन करने के लिए, भारत सरकार ने कृषि और ग्रामीण विकास के लिए एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की है जिसे नाबार्ड के नाम से भी जाना जाता है। भारत में कृषि के लिए अन्य छोटे वित्तीय संस्थान हैं, जो किसानों की सहायता भी करते हैं। निम्नलिखित संस्थान उद्यमियों को वित्त प्रदान करते हैं।

- वाणिज्यिक बैंक जैसे स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)
- भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI)
- भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI)
- भारतीय औद्योगिक ऋण और निवेश निगम (ICICI)
- राज्य वित्तीय निगम
- राज्य औद्योगिक विकास निगम (SIDC)
- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI)
- एक्सपोर्ट- इंपोर्ट बैंक ऑफ इंडिया (EXIM Bank)
- राज्य कृषि विपणन बैंक (SAMB)

डी. सरकारी योजनाएं और कार्यक्रम

कृषि में स्टार्टअप्स की क्षमता को महसूस करते हुए, सरकार विभिन्न योजनाओं जैसे स्किल इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, एग्री-बिजनेस सेंटर्स स्कीम, उड़ान, कृषि उड़ान, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पंचायत मंडी के माध्यम से स्टार्टअप आंदोलन का सक्रिय समर्थन कर रही है। इनके अलावा और भी बहुत सी योजनायें है जैसे की, राज्य कृषि विपणन बैंक, राज्य विपणन बोर्ड के लिए राष्ट्रीय परिषद, राज्य व्यापार निगम, कृषि में उद्यमियों के विकास के लिए पहल, राष्ट्रीय कृषि बाजार, कृषि विपणन बुनियादी ढांचा, जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद, उद्यम पूंजी सहायता योजना, नवाचार बुद्धि योजना, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

1. स्टार्टअप इंडिया

भारत सरकार ने यह अभिनव योजना शुरू की है, इसका विवरण startupindia.gov.in पर उपलब्ध है।

2. कौशल भारत

स्किल इंडिया 15 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री द्वारा आरंभ किया गया एक अभियान है, जिसका उद्देश्य 2022 तक भारत में 40 करोड़ से अधिक लोगों को विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षित करना है। मुख्य लक्ष्य भारतीय युवाओं की प्रतिभा के विकास के लिए अवसर, उद्यम और क्षमता बनाना है। और उन क्षेत्रों को अधिक विकसित करना जो पहले से ही पिछले कई वर्षों से कौशल विकास के तहत रखे गए हैं और कौशल विकास के लिए नए क्षेत्रों की पहचान करना भी है। इसमें राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राष्ट्रीय नीति-2015, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) और कौशल ऋण योजना जैसी सरकार की विभिन्न पहल शामिल हैं। युवाओं को इस तरह से कौशल देने पर बल दिया जाता है, ताकि उन्हें रोजगार के ज्यादा अवसर मिले और उद्यमिता में भी सुधार हो।

'स्किल इंडिया' कार्यक्रम को 'रूरल इंडिया स्किल' नामक एक हॉलमार्क बनाना होगा, ताकि प्रशिक्षण प्रक्रिया को मानकीकृत और प्रमाणित किया जा सके। तदनुसार, आवश्यकता आधारित कार्यक्रमों को विशेष आयु समूहों के लिए शुरू किया जाएगा, जो भाषा और संचार कौशल, जीवन और सकारात्मक सोच कौशल, व्यक्तित्व विकास कौशल, प्रबंधन कौशल, व्यवहार कौशल, जैसे नौकरी और रोजगार कौशल शामिल हो सकते हैं।

कौशल भारत के लाभ:

- रोजगार वृद्धि
- युवाओं में आत्मविश्वास जगाएं
- उत्पादकता और ज्ञान में सुधार
- युवाओं को ब्लू-कॉलर जॉब दिलाने में सक्षम करना
- स्कूल स्तर पर कौशल का विकास
- सभी क्षेत्रों में संतुलित विकास
- सभी नौकरियों के लिए समान महत्व
- प्रत्येक काम के इच्छुक के लिए अनिवार्य सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण
- ग्रामीण और सुदूर भारत को समकक्ष सुविधायें

3. स्टैंड-अप इंडिया

स्टैंड अप इंडिया योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति एवं देश की महिलाओं को उनकी आवश्यकता के आधार पर 10 लाख रुपये से लेकर 1 करोड़ रुपये तक का ऋण उपलब्ध कराना है एवं उनके बीच उद्यमिता को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत, 1.25 लाख बैंक शाखाओं को प्रत्येक वर्ष कम से कम एक दलित या आदिवासी उद्यमी और एक महिला उद्यमी को उनके सेवा क्षेत्र में पैसा उधार देने की आशा होगी।

स्टैंड अप इंडिया योजना की मुख्य विशेषताएं:

- यह योजना उद्यमिता परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सेवा विभाग (DFS) की एक पहल का हिस्सा है।
- एक नया उद्यम स्थापित करने के लिए कार्यशील पूंजी को सम्मिलित करते हुए ऋण के रूप में प्रदान की जाने वाली 10 लाख रुपये से लेकर एक करोड़ रुपये तक की राशि।
- योजना में कहा गया है, कि प्रत्येक बैंक शाखा को औसतन दो उद्यमशीलता परियोजनाओं को सुविधाजनक बनाने की आवश्यकता है। एक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए और एक महिला उद्यमी के लिए।
- रुपये (RuPay) डेबिट कार्ड ऋण की वापसी के लिए प्रदान किया जाएगा।
- उधारकर्ता का क्रेडिट इतिहास बैंक द्वारा बनाए रखा जाएगा ताकि किसी भी व्यक्तिगत उपयोग के लिए धन का उपयोग न किया जाए।
- लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) के माध्यम से पुनर्वित्त खिड़की के रूप में प्राथमिक राशि 10,000 करोड़ रुपये से प्रारंभ।
- इस योजना के तहत, NCGTC के माध्यम से, क्रेडिट गारंटी के लिए 5000 करोड़ रुपये के कोष का निर्माण।
- पूर्व-ऋण प्रशिक्षण के लिए व्यापक सहायता प्रदान करके उधारकर्ताओं का समर्थन करना, जैसे ऋण की सुविधा, फैक्टरिंग, मार्केटिंग आदि।
- ऑनलाइन पंजीकरण और सहायता सेवाओं के लिए लोगों की सहायता के लिए एक वेब पोर्टल बनाया गया है।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य गैर-कृषि क्षेत्र में बैंक ऋणों की शुरुआत करके जनसंख्या के अल्पसंख्यक वर्गों तक पहुँचकर संस्थागत ऋण संरचना को लाभान्वित करना है।
- यह योजना अन्य विभागों की चल रही योजनाओं के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगी।

- स्टैंड अप इंडिया योजना का नेतृत्व लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) द्वारा किया जाएगा, जिसमें दलित इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (DICCI) की भागीदारी भी होगी। DICCI के साथ, अन्य सेक्टर-विशिष्ट संस्थानों की भागीदारी भी होगी।
- स्टैंड अप कनेक्ट सेंटर (एसयूसीसी) का पदनाम सिडबी और नेशनल बैंक ऑफ एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) को प्रदान किया जाएगा।
- वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) को 10,000 करोड़ रुपये की प्रारंभिक राशि आवंटित की जायेगी।
- इस योजना के लिए एक पूर्व-ऋण और एक परिचालन चरण होगा और सिस्टम और अधिकारी इन चरणों के दौरान लोगों की मदद करते हैं।
- उद्यमियों को क्रेडिट सिस्टम तक पहुँचने में मदद करने के लिए कंपोजिट ऋण के लिए मार्जिन राशि 25 फीसदी तक होगी।
- इस योजना के लिए आवेदन करने वाले लोग ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-मार्केटिंग, वेब-उद्यमिता, फैक्टरिंग सेवाओं और पंजीकरण के अन्य संसाधनों से परिचित होंगे।

स्टैंड अप इंडिया योजना के लाभ:

जब सरकार एक योजना लेकर आती है, तो इसका मुख्य उद्देश्य नागरिकों को लाभान्वित करना है, और यही उद्देश्य स्टैंड अप इंडिया योजना का भी है। नीचे दिए गए स्टैंड अप इंडिया योजना को लॉन्च करने के अनगिनत लाभ हैं:

- पहल का मूल उद्देश्य नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करना और प्रेरित करना है, ताकि बेरोजगारी को कम किया जा सके।
- यदि आप एक निवेशक हैं, तो स्टैंड अप इंडिया आपको सही मंच देता है, जहाँ आपको पेशेवर सलाह, समय और कानूनों के बारे में जानकारी मिलती है। एक और लाभ यह है कि वे आपके काम के शुरुआती दो वर्षों के लिए स्टार्टअप में आपकी सहायता करेंगे। वे सलाहकारों को पोस्ट सेट अप सहायता भी प्रदान करते हैं।
- इसके अलावा, उद्यमियों के लिए एक और लाभ यह है कि उन्हें इस बारे में ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है कि वे उस राशि का भुगतान कैसे करें जो उन्होंने ऋण के लिए ली है, क्योंकि उन्हें सात साल की अवधि में ऋण वापस करने की आवश्यकता होती है, जो उधारकर्ताओं के लिए पुनर्भुगतान के तनाव को कम करता है। हालांकि, उधारकर्ता की पसंद के अनुसार प्रत्येक वर्ष एक निश्चित राशि का भुगतान किया जाना चाहिए।

- यह योजना उद्यमियों के लिए कानूनी, परिचालन और अन्य संस्थागत बाधाओं को भी मिटाने में मदद करेगी।
- दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तीकरण के लिए रोजगार सृजन के मामले में यह बहुत सकारात्मक सिद्ध हो सकती है।
- यह 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी अन्य सरकारी योजनाओं के लिए प्रेरक के रूप में भी काम कर सकता है।
- यह भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश की रक्षा में मदद करेगा। इसका तात्पर्य यह है कि समाज से समस्त वर्गों का सर्वांगीण विकास होगा।
- बैंक खातों और तकनीकी शिक्षा तक पहुँच के साथ, यह समाज के इन वर्गों को वित्तीय और सामाजिक समावेश प्रदान करेगा।

4. उड़ान

भारत के कॉरपोरेट्स और गृह मंत्रालय के बीच साझेदारी है और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा कार्यान्वित की जाने वाली है। जम्मू और कश्मीर के लिए एक विशेष उद्योग पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कौशल प्रशिक्षण द्वारा जम्मू-कश्मीर के बेरोजगार युवाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाना है। इस योजना में स्नातक, स्नातकोत्तर और तीन वर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा धारक शामिल हैं। इस योजना का उद्देश्य बेरोजगार स्नातकों को कॉरपोरेट भारत के सर्वश्रेष्ठ पहलुओं से अवगत करना और तथा राज्य में उपलब्ध समृद्ध प्रतिभा पूल को निखारना है। इस योजना का लक्ष्य पांच वर्षों में जम्मू और कश्मीर के 40,000 युवाओं को यात्रा खर्च, बोर्डिंग और लॉजिंग जैसे अन्य आकस्मिक खर्चों को कवर करना है। इस अवधि में योजना के कार्यान्वयन के लिए 750 करोड़ रुपये रखे गए हैं। प्रशिक्षुओं और प्रशासन की लागत के लिए वजीफा, यात्रा और चिकित्सा बीमा लागत भी दिया जायेगा।

5. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) गैर-कॉर्पोरेट, गैर-कृषि लघु/ सूक्ष्म उद्यमों को 10 लाख तक का ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई एक योजना थी। ये ऋण PMMY के तहत MUDRA ऋण के रूप में

वर्गीकृत किये जाते है। ये ऋण वाणिज्यिक बैंक, आरआरबी, लघु वित्त बैंक, सहकारी बैंक, एमएफआई और एनबीएफसी द्वारा दिए जाते हैं। उधारकर्ता ऊपर उल्लेखित किसी भी उधार देने वाले संस्थान से संपर्क कर सकता है या इस पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकता है। PMMY के तत्वावधान में, MUDRA ने शिशु', किशोर 'और' तरुण' नाम से तीन उत्पाद बनाए हैं, जो उद्यमी की वृद्धि/ विकास और धन की जरूरतों के चरण को दर्शाने के लिए महत्वपूर्ण है।

नाबार्ड के सहयोग से भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने देश भर के प्रत्येक किसान को खेती के बेहतर तरीके अपनाने के लिए एक अनूठा कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि स्नातक के बड़े पूल में उपलब्ध विशेषज्ञता का दोहन करना है। इस कार्यक्रम के लिए प्रतिबद्ध, सरकार कृषि में स्नातक, या कृषि से जुड़े किसी भी विषय जैसे बागवानी, सेरीकल्चर, पशु चिकित्सा विज्ञान, वानिकी, डेयरी, पोल्ट्री फार्मिंग, और मत्स्य पालन आदि के लिए स्टार्टअप प्रशिक्षण प्रदान कर रही है।

6. पंचायत मंडी (कृषि-मंडी)

स्व-शासन की अवधारणा गाँव के बाजारों और मेलों के माध्यम से गाँव की उपज के विपणन के स्तर तक गई है। पंचायत मंडी की अवधारणा बिचौलियों और व्यापारियों के प्रभाव को कम करने के लिए है। यह तभी संभव है जब राज्य पंचायत का कामकाज राज्य विपणन बोर्डों और एपीएमसी (कृषि उपज बाजार समिति) के साथ समन्वय में प्रभावी हो।

7. नेशनल काउंसिल ऑफ स्टेट मार्केटिंग बोर्ड (NCOSAMB)

राष्ट्रीय कृषि विपणन बोर्ड (COSAMB) परिषद, राष्ट्रीय स्तर पर एक मंच है, जो देश में कुशल कृषि विपणन प्रणाली के लिए सभी राज्य कृषि विपणन बोर्डों/ विभागों के बीच समन्वय स्थापित करता है। इसे वर्ष 1988 में उन उद्देश्यों के साथ स्थापित किया गया था जैसा कि इसकी नियमावली में दिये गये है। केंद्र सरकार राज्य को प्रशिक्षण सुविधाएं स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान करती है, ऐसे प्रशिक्षण के कार्यक्रमों का समन्वय का कार्य यह परिषद करती है।

भारत सरकार संगठित विपणन का समर्थन करती है और इस तरह के भौतिक बाजारों से यह सुनिश्चित होता है कि किसानों को उचित लाभ मिले। निष्पक्षता आपूर्ति और मांग की शक्तियों के साथ-साथ बाजार प्रथाओं के विनियमन और लेनदेन में पारदर्शिता के संबंध में है। थोक बाजार खाद्यान्न और फलों और सब्जियों को खरीदने, बेचने और मूल्यवर्धन के लिए एक अद्वितीय स्थान है, जो शहरों में केंद्र में रहता हैं। यह वह जगह है, जहाँ किसान की उपज की वास्तविक कीमत निर्धारित की जाती है और सेवाओं के साथ माल का आदान-प्रदान होता है।

वर्तमान में, देश में ऐसे 7,000 से अधिक बाजार हैं। इन विनियमित बाजारों में से अधिकांश थोक बाजार हैं। इन बाजारों के अलावा 27738 ग्रामीण आवधिक बाजार (हाट इत्यादि) हैं। जिनमें से 15

प्रतिशत विनियमन के दायरे में आते हैं। बाकी 85 प्रतिशत का प्रबंधन स्थानीय स्व-सरकारी संस्थानों या सरकारी विभागों द्वारा किया जाता है।

कृषि से विपणन कार्यों को करने के लिए निम्नलिखित विभिन्न संस्थानों को बढ़ावा दिया गया है:

- विपणन और निरीक्षण निदेशालय
- राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान
- राज्य कृषि विपणन बोर्ड की राष्ट्रीय परिषद
- राज्य कृषि विपणन बोर्ड
- कृषि उपज विपणन समितियाँ

8. नेशनल इनिशिएटिव फॉर डेवलपमेंट एंड हारनेसिंग इनोवेशन (NIDHI)

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST), भारत सरकार द्वारा सफल स्टार्टअप में विचारों और नवाचारों (ज्ञान-आधारित और प्रौद्योगिकी-संचालित) के पोषण के लिए इस कार्यक्रम द्वारा नेतृत्व किया जाता है। इस निधि (NIDHI) परियोजना के अंतर्गत युवा उद्यमियों एवं छात्रों को त्वरक कार्यकम के अंतर्गत ग्रांट देने का प्रावधान है। यह वित्त सहायता देश में स्थित विभिन्न विज्ञान एवं तकनीकी संस्थाओं के माध्यम से दी जाती है, जैसे कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs), नार्म (NAARM) भी इस परियोजना का अंश है।

स्टार्टअप लॉन्च, उत्पाद विकास और सत्यापन के लिए युवा इनोवेटर के कुछ निवेश हिस्से की आवश्यकता होती है। इस समय आवश्यक प्रारंभिक धन आमतौर पर दोस्तों, परिवार, एंजेल निवेशकों और एचएनआई से आता है जो एक प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप में निवेश करेंगे। हालाँकि, जब तकनीक अप्राप्त है, और बाजार अनिश्चित है, तो अनिश्चितता का माहौल बना रहा है, निवेश करने का जोखिम भी वेंचर कैपिटलिस्ट सहित पारंपरिक निवेशकों के लिए बहुत अधिक है। इन पूर्व ऊष्मायन चरण में आवश्यक धनराशि मात्रा के हिसाब से बहुत बड़ी निधि नहीं है। यह निश्चित रूप से स्टार्टअप और युवा इनोवेटर को इस प्रतिस्पर्धी स्थान में एक राहत देता है।

निधि (NIDHI), डिजाइनिंग से लेकर इनोवेशन चेन के सभी लिंक को स्काउटिंग से लेकर सिक्योरिंग तक स्केलिंग से लेकर शोकेसिंग (तकनीक डिस्प्ले) तक मजबूत बनाता है, क्योंकि एक चेन अपने सबसे कमजोर लिंक ठीक करने से ही मजबूत होती है। NIDHI के प्रमुख हितधारकों में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, शैक्षणिक और अनुसंधान एवं विकास संस्थान, संरक्षक, वित्तीय संस्थान, देवदूत निवेशक, उद्यम पूंजीपति, उद्योग चैंपियन और निजी क्षेत्रों के विभिन्न विभाग और मंत्रालय शामिल हैं।

9. ग्राम्य विकास निधि

इस योजना के तहत नाबार्ड कृषि स्नातकों के बीच उद्यमशीलता विकसित करने और इनक्यूबेटरों के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए विचार और नवाचार चुनौतियों कार्यक्रम के माध्यम से इनक्यूबेटर्स/ एक्सलेरेटर का समर्थन कर रहा है। जैसे नाबार्ड ने नार्म (NAARM) के इनक्यूबेटर ए-आईडिया (a-IDEA) को 5 साल का कार्यक्रम दिया है। किसानों को इस लाभ के अलावा, कृषि वैज्ञानिक के प्रति संवेदनशीलता और Technology Business Incubator (टीबीआई) को वित्तीय सहायता भी इनबिल्ट घटक है। इस परियोजना के अंतर्गत ए-आईडिया (a- IDEA) न केवल अपने आपको समर्थ करेगा बल्कि बहुत सारे कृषि उद्यमी भी उत्पन्न करेगा।

10. कृषि में उद्यमियों के विकास के लिए पहल (IDEA)

यह उत्तर पूर्वी क्षेत्र का विकास मंत्रालय की एक अद्भुत योजना है। कृषि में उद्यमियों के विकास के लिए पहल (Idea), उत्तर पूर्वी विकास वित्त निगम लिमिटेड द्वारा की जाती है। इस पहल का उद्देश्य उत्तर पूर्व भारत के क्षेत्रीय भागों में कृषि से जुड़े विभिन्न व्यावसायिक उपक्रमों को बढ़ावा देना है। यह पहल कृषि व्यवसाय योजनाओं के लिए लाभकारी उद्यम निर्धारित करती है। यह कृषि के व्यवसाय उद्यम से जुड़े लोगों के रोजगार के कई अवसरों के प्रावधान फायदेमंद है।

इनपुट और उनके पूरक स्रोतों की विभिन्न सेवाएं और आपूर्ति इस विशेष योजना द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं। जो उम्मीदवार कृषि उद्यमियों के विकास के लिए पात्र हैं, उनमें स्नातक और यहाँ तक कि कृषि क्षेत्र और विषयों से संबंधित स्नातकोत्तर छात्र भी शामिल हैं। उद्यमियों का विकास भागीदारी, स्वामित्व और एक संगठन की स्थापना के क्षेत्रों के आधार पर विशेषताएं हैं। प्रस्तावित इकाई को भारत के विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों के भीतर मौजूद होने पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। उम्मीदवारों को कार्यशील पूंजी के साथ-साथ रियायती ब्याज दर पर व्यावसायिक उद्यम की स्थापना के लिए ऋण प्रदान किया जाएगा।

आईडीईए द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता उम्मीदवारों की आवश्यकताओं और व्यापार परियोजनाओं के प्रकार पर निर्भर करती है। वित्तीय सहायता के प्रावधान से पहले प्रमोटर की योग्यता स्तरों का भी विश्लेषण किया जाता है। जो परियोजनाएं शुरू की गई हैं, वे 25 लाख रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए। प्रमोटर को परियोजना से संबंधित लागत का लगभग 25% योगदान करना आवश्यक है। वित्तीय सहायता के लिए पात्र उम्मीदवारों को वित्तीय निकाय को 3 से 7 साल के भीतर ऋण राशि चुकाने की आवश्यकता होती है।

11. जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC)

जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), भारत सरकार द्वारा स्थापित एक अंतर-लाभकारी धारा 8, अनुसूची बी, सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है।

इसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक उत्पाद विकास आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए, रणनीतिक अनुसंधान और नवाचार करने के लिए बायोटेक्नोलॉजी उद्यम को सशक्त बनाना है।

बीआईआरएसी एक उद्योग-अकादमिक इंटरफ़ेस है और प्रभाव की पहल की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से अपने अधिदेश को लागू करता है। यह अपने आठ वर्षों के अस्तित्व में, बीआईआरएसी ने कई योजनाओं, नेटवर्क और प्लेटफार्मों की शुरुआत की है जो उद्योग-शिक्षा नवाचार अनुसंधान में मौजूदा अंतराल को पाटने में मदद करते हैं और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से नवाचार, उच्च गुणवत्ता वाले किफायती उत्पादों के विकास की सुविधा प्रदान करते हैं। BIRAC ने अपने अधिदेश की मुख्य विशेषताओं को सहयोग करने और वितरित करने के लिए कई राष्ट्रीय और वैश्विक साझेदारों के साथ भागीदारी शुरू की है।

प्रमुख रणनीतियाँ :

- नवाचार और उद्यमिता का पालन-पोषण करना
- प्रमुख सामाजिक क्षेत्रों में सराहनीय नवाचार को बढ़ावा देना
- स्टार्टअप और छोटे और मध्यम उद्यमों का सशक्तिकरण
- क्षमता बढ़ाने और नवाचार के प्रसार के लिए भागीदारों के माध्यम से योगदान करना
- अनुसंधान का व्यावसायीकरण सक्षम करना
- भारतीय उद्यमों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना

12. वेंचर कैपिटल असिस्टेंस स्कीम

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत वेंचर कैपिटल असिस्टेंस, लघु कृषक कृषि व्यवसाय कंसोर्टियम (एसएफएसी) द्वारा प्रदान की जाने वाली ब्याज मुक्त ऋण के रूप में वित्तीय सहायता है, जो परियोजना के कार्यान्वयन के लिए पूंजी की आवश्यकता में कमी को पूरा करने के लिए है।

लाभ:

- वित्तीय भागीदारी के माध्यम से कृषि व्यवसाय परियोजनाओं की स्थापना में निवेश करने के लिए कृषि उद्यमी की सहायता करने में लाभप्रद है।

- परियोजना विकास सुविधा (पीडीएफ) के माध्यम से बैंक योग्य विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के लिए वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है।

13. एस्पायर (ASPIRE)

एस्पायर (ASPIRE)- यह योजना सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के तहत चलती है और इसका उद्देश्य भारत में नवाचार, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता को बढ़ावा देना है। इस योजना को मार्च 2015 में 200 करोड़ रुपये ग्रामीण और कृषि आधारित उद्योग में नवाचार और उद्यमिता के लिए स्टार्टअप, प्रौद्योगिकी केंद्रों, ऊष्मायन केंद्रों का एक नेटवर्क स्थापित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिये गये थे।

योजना का उद्देश्य:

- नई नौकरियां पैदा करना और बेरोजगारी कम करना
- भारत में उद्यमिता संस्कृति को बढ़ावा देना
- जिला स्तर पर आधारभूत आर्थिक विकास
- अन-मेट सामाजिक आवश्यकताओं के लिए नवीन व्यावसायिक समाधान की सुविधा
- एमएसएमई क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता को और मजबूत कर नवाचार को बढ़ावा देना

14. अटल इनोवेशन मिशन (AIM)

अटल इनोवेशन मिशन (AIM) जिसमें स्व-रोजगार और प्रतिभा उपयोग (SETU) शामिल है, नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार का एक अभिनव प्रयास है। इसका उद्देश्य विश्व स्तरीय नवाचार हब, भव्य चुनौतियों, स्टार्टअप व्यवसायों और विशेष रूप से प्रौद्योगिकी संचालित क्षेत्रों में स्व-रोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में सेवा करना है। इसके दो मुख्य घटक हैं:

- स्व-रोजगार और प्रतिभा उपयोग (SETU) के माध्यम से उद्यमशीलता को बढ़ावा देना
- इनोवेशन प्रमोशन के लिये एक ऐसा मंच प्रदान करना, जहाँ अभिनव विचार उत्पन्न होते हैं

इस परियोजना के अंतर्गत अधिकतम पाँच वर्षों के लिए प्रत्येक अटल ऊष्मायन केंद्र को 10 करोड़ रुपये की अनुदान-सहायता प्रदान की जाती है। इस राशि से पूंजीगत एवं परिचालन व्यय को पूरा कर सकते है।

15. न्यूजेन (NewGen) नवाचार और उद्यमिता विकास केंद्र (NewGen IEDC)

सरकार का NewGen IEDC स्टार्टअप प्रोग्राम राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता विकास बोर्ड

(NSTEDB) द्वारा शैक्षणिक संस्थानों में लागू किया गया है। एक वर्ष में अधिकतम 20 नई परियोजनाओं का समर्थन किया जाता है। इस योजना के तहत संस्थानों को 25 लाख रुपये की राशि दी जाती है। जिसका उपयोग स्थापना लागत, स्टार्टअप के लिये क्युबिकल (Cubicle) खरीदना तथा गैर आवर्ती खर्च जैसे कंप्यूटर, प्रिंटर इत्यादि के लिये करते है।

16. मेक इन इंडिया

भारत को एक वैश्विक डिजाइन और निर्माण केंद्र में बदलने के उद्देश्य से यह पहल की गई है। मेक इन इंडिया ने पुराने और अप्रचलित ढांचे को नवीनतम और उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीकों से बदलना सुनिश्चित किया है। और बदले में, इसने निवेशों की खरीद, नवाचार को बढ़ावा देने, कौशल विकसित करने, बौद्धिक संपदा की रक्षा करने और सर्वोत्तम विनिर्माण बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद की है।

17. व्यापार संबंधित उद्यमशीलता सहायता और विकास (TREAD)

यह कार्यक्रम गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) की मदद से इच्छुक महिलाओं को ऋण प्रदान करता है। महिलाएं ऋण प्राप्त करने की सुविधा में पंजीकृत गैर सरकारी संगठनों का समर्थन प्राप्त कर सकती हैं, और प्रस्तावित उपक्रमों को आरंभ करने के लिए परामर्श और प्रशिक्षण के अवसर प्राप्त कर सकती हैं।

18. महिलाओं के लिए योजनाएं

भारत सरकार ने महिलाओं के लिये विशिष्ट योजनाएं प्रदान की हैं, जैसे प्रशिक्षण और महिला समर्थन रोजगार कार्यक्रम (एसटीईपी)। इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य उन महिलाओं को शिक्षित और प्रशिक्षित करना है, जिनके पास औपचारिक कौशल शिक्षा तक पहुँच नहीं है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र को लक्षित करना। इस योजना के अंतर्गत कृषि, बागवानी, खाद्य प्रसंस्करण, हथकरघा, कढ़ाई, यात्रा और पर्यटन, आतिथ्य, कंप्यूटर और आईटी सेवाओं जैसे पारंपरिक शिल्प सहित विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान और प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके आलावा कई अन्य सेक्टर विशिष्ट नीतियां हैं, जैसे पेटेंट रजिस्टर करने के लिए शुल्क में छूट है।

ई. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की कृषि उद्यमिता पहल

राष्ट्रीय कृषि नवाचार कोष: आईसीएआर ने बौधिक संपदा आईपी के माहौल में तकनीकी एवं व्यावसायिक योगदान करने के लिए इस योजना की शुरुआत की है। इस योजना के कार्यान्वयन से आईपीआर-फाइलिंग (पेटेंट, पौधों के संरक्षण अधिकार, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, आदि) बढ़ गए हैं। इस योजना के तीन घटक हैं:

1. घटक I: नवाचार निधि (बौद्धिक संपदा प्रबंधन और कृषि प्रौद्योगिकियों का स्थानांतरण/ व्यवसायीकरण)

2. घटक II: ऊष्मायन निधि (कृषि तकनीकों को विकसित करने वाले संस्थानों में कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन केंद्रों का समर्थन करना)

3. घटक III: कृषि में ग्रामीण युवाओं को आकर्षित करना (ARYA), जिसे आईसीएआर के एक्सटेंशन डिवीजन के माध्यम से लागू किया गया।

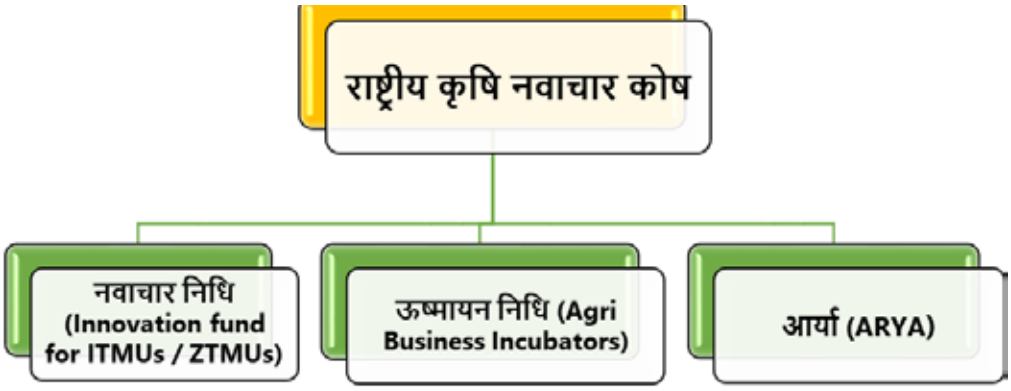

राष्ट्रीय कृषि नवाचार निधि के घटक

1. इनोवेशन फंड (इंस्टीट्यूट टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट यूनिट्स/ जोनल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट यूनिट्स): ICAR में सभी 100 संस्थानों में संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाइयाँ (ITMU) स्थापित की गईं। संबंधित क्षेत्रों में ITMU की गतिविधियों की देखरेख के लिए अधिदेश के साथ पाँच ज़ोनल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट यूनिट (ZTMU) का गठन किया गया था।

2. इनक्यूबेशन फंड: राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (NARS) में पचास के लगभग एग्री-बिजनेस इनक्यूबेटर सेंटर (ABI), इन नवाचार केन्द्रों का मुख्य कार्य प्रौद्योगिकी और कौशल प्रदान करना, उद्यमों को व्यवहार्य उद्यमों और स्थायी रोजगार को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी और कौशल प्रदान करना, तथा आदानों की आपूर्ति एवं बाजार का समर्थन करना है।

3. कृषि में युवा को आकर्षित करना (ARYA): मेंटर के माध्यम से संभावित ग्रामीण युवाओं को तकनीकी और वित्तीय सहायता के साथ प्रोत्साहित करना और स्थायी आय और रोजगार के लिए कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को आकर्षित करना। इस योजना में एक चुनौती तो युवाओं को कृषि की और आकर्षित करने की है तथा दूसरी और उन्हें कृषि तथा कृषि व्यवसाय में स्थायित्व देकर बनाएं रखने की है।

4. भा. कृ. अनु. प. (ICAR) के कृषि उद्यमिता के प्रमुख प्रकाशन: भा. कृ. अनु. प. (ICAR) ने युवाओं एवं छात्रों में कृषि उद्यमिता का उत्साह वर्धन करने के उद्देश्य से कुछ सम्बंधित दस्तावेजों एवं किताबों का प्रकाशन भी किया है, जो आईसीएआर के प्रत्येक अनुसंधान संस्थान के पुस्तकालय में उपलब्ध है। कुछ प्रकाशन निम्नलिखित है,

एस.के. सोम, सूर्या राठौड़, आलोक कुमार, एन. श्रीनिवास राव और सी. एच. श्रीनिवास राव (2019). क्रिएटिंग जॉब्स - ए ट्रेनिंग मैनुअल फॉर प्रोस्पेक्टिव एग्रीप्रेन्योर, आईसीएआर-नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च मैनेजमेंट, हैदराबाद। पृष्ठ संख्या 1-64 ISBN: 978-81-943030-3-1

जेरार्ड मंजू, गुप्ता मोनिका, श्रीनिवास के., सिंह विक्रम, सक्सेना संजीव, राव, सी. एच. श्रीनिवास राव (2019). आईसीएआर-एग्री बिजनेस इन्क्यूबेटरों के माध्यम से प्रौद्योगिकी प्रबंधन: स्थिति और रणनीतियाँ। आईसीएआर-नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च मैनेजमेंट, हैदराबाद-500030

के. श्रीनिवास, मंजू जेरार्ड, विक्रम सिंह, मोनिका गुप्ता, एस. के. सोम, ए. अरुणाचलम, शिव दत्ता, संजीव सक्सेना, और सी. एच. श्रीनिवास राव (2018). एग्री स्टार्टअप: रिफ्लेकशन ऑफ आई सी ए आर टेक्नोलॉजीज इन मार्केट। भारतीय कृषि अनुसंधान परिसद, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 1-121, ISBN: 978-81-933781-2-0 (हिंदी संस्करण (AGRIM): एग्री-स्टार्टअप बाजार में आईसीएआर प्रौद्योगिकियों का प्रतिबिंब)

सही/गलत:

1. बीज अवस्था के तहत तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा आइडिया को मान्यता दी जा रही है। (सही/गलत)
2. एक इनक्यूबेटर कार्यक्रम के लिए एक विशिष्ट अवधि 3-12 महीने है। (सही/गलत)
3. टी-हब एग्रीटेक सेक्टर में प्रमुख इनक्यूबेटर्स और एक्सेलेरेटर्स है। (सही/गलत)
4. ई-एनएएम (E-NAM) का मतलब राष्ट्रीय कृषि बाजार है। (सही/गलत)
5. स्किल इंडिया योजना 15 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई है। (सही/ गलत)

उपसंहार

नवाचार को देश की आर्थिक एवं समाजिक सफलता एवं संवर्धन के लिये एक केंद्र बिंदु के रूप में लिया जाना चाहिए। स्टार्टअप में अभिन्न प्रयोग एवं नवाचार द्वारा उद्यमशीलता युवाओं एवं छात्रों के लिये एक वरदान हो सकता है। इस अध्याय में नवाचार के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ-साथ केंद्र सरकार के विभिन्न विभागो के कार्यक्रमो की भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी है। ढांचागत विकास तथा योजनाए छात्रों को एक सफल कृषि उद्यमी बनाने में सहयोगी सिद्ध होगीं।

1

राष्ट्रीय कृषि नवाचार कोष का शुभारंभ किसने किया?

2

केंद्रीय वृक्षारोपण फसल अनुसंधान संस्थान इनक्यूबेटर कहाँ स्थित है?

3

ASPIRE का पूर्ण रूप क्या है?

4

स्टार्टअप इंडिया तक कैसे पहुँचे?

5

किस अवस्था को कहा जाता है, उद्यमिता के अंडे देने की अवस्था?

6

व्यापार शैली के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

अनुबंध

आईसीएआर अनुसंधान संस्थानों में सक्रिय कृषि व्यवसाय केंद्र

ABI (Agri Business Incubators)

1.	भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
2.	भाकृअनुप-भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद
3.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक
4.	भाकृअनुप-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद
5.	भाकृअनुप-गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर
6.	भाकृअनुप-सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर
7.	भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर
8.	भाकृअनुप-तोरिया और सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर
9.	भाकृअनुप-मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़
10.	भाकृअनुप-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
11.	भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
12.	भाकृअनुप-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी
13.	भाकृअनुप-भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची
14.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली
15.	भाकृअनुप-केन्द्रीय रोपण फसलें अनुसंधान संस्थान, कासरगोड
16.	भाकृअनुप-केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला
17.	भाकृअनुप-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरू
18.	भाकृअनुप-भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कालीकट
19.	भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी
20.	भाकृअनुप-केन्द्रीय कंदीय फसलें अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम
21.	भाकृअनुप-प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, पुणे
22.	भाकृअनुप-काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तुर
23.	भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद
24.	भाकृअनुप- राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे
25.	भाकृअनुप-केन्द्रीय नींबू वर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर
26.	भाकृअनुप-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ
27.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, त्रिची
28.	भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
29.	भाकृअनुप-केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
30.	भाकृअनुप- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

31.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय मांस अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद
32.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी
33.	भाकृअनुप-केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
34.	भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, हैब्बल, बेंगलुरू
35.	भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि
36.	भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई
37.	भाकृअनुप-केन्द्रीय खारा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, चैन्नई
38.	भाकृअनुप-केन्द्रीय ताजा जल जीव पालन संस्थान, भुबनेश्वर
39.	भाकृअनुप-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल
40.	भाकृअनुप-केन्द्रीय कटाई उपरांत अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना
41.	भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुंबई
42.	भाकृअनुप - राष्ट्रीय जूट एवं संबद्ध रेशे प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता
43.	भाकृअनुप-भारतीय प्राकृतिक रेज़िन और गोद संस्थान, रांची
44.	भाकृअनुप- पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र परिषद
45.	भाकृअनुप-केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा
46.	भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
47.	भाकृअनुप-भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम
48.	भाकृअनुप-पूर्वी क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिसर, पटना
49.	भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद

स्टार्टअप, उद्यमिता और कौशल विकास हेतु सरकारी पहल

प्रस्तावना

कृषि में स्नातक की डिग्री एक व्यवसायी डिग्री है व निसंदेह कृषि स्नातक अपने पाठ्यक्रम के माध्यम से उन व्यवहारिक कलाओ से परिपूर्ण होते है जिनमे उद्यमिता विकास भी एक हैं। इस कला का निर्माण विभिन्न प्रायोगिक अभ्यास के माध्यम से संभव है, जैसे स्टूडेंट रेडी, ग्रामीण कृषि कार्य अभ्यास (रूरल एग्रीकल्चर वर्क एक्सपीरियंस), सिखने के साथ-साथ कमाना (Earn While You Learn) इत्यादि । इसके अतिरिक्त यह आवश्यक है कि कृषि स्नातको को विभिन्न सरकारी योजनाओ और कार्यकर्मो के बारे में ज्ञान हो जिसके माध्यम से वे सफल उद्यमी बन सके व रोजगार प्रदाता बन सके ताकि बेरोजगारी की समस्या का निदान किया जा सके। प्रारंभिक चरण में एक कृषि स्नातक में उद्यमिता का बीज बोने में स्टार्टअप इंडिया, भारतीय कृषि कौशल परिषद ASCI, एग्री क्लिनिक और एग्री बिज़नेस सेंटर (AC & ABC) प्रमुख हैं।

स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र बनाना हैं, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण देश में नवाचारो का पोषण हो सके।

इसके अंतर्गत सभी प्रकार के स्टार्टअप सम्मिलित हैं, जैसे कि संकिय समाधान, विनिर्माण, सामाजिक क्षेत्र, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा व निसंदेह कृषि। भारत सरकार का उद्देश्य है कि नवाचारों व नवीन नमूनों के माध्यम से स्टार्टअप का विस्तार करके सशक्त किया जाये। स्टार्टअप इंडिया पहल के तीन स्तंभ हैं:

भौगोलिक व्यापकता की बात करे तो इसमें ग्रामीण, अर्ध-शहरी और शहरी शामिल हैं। सरकारी योजनाओं के संदर्भ में स्टार्टअप एक ऐसी इकाई को संदर्भित करता है, जो भारत में निगमित या पंजीकृत है व उसका पिछले दस वर्षो मे किसी भी वर्ष में 100 करोड़ रुपये से अधिक का वार्षिक कारोबार नहीं है व उसके फलस्वरूप तकनीकी या बौद्धिक संपदा से लैस नवाचार, विकास एवं नए उत्पादों का व्यावसायीकरण, प्रक्रिया एवं सेवाओ का उत्पन्न होना निश्चित हो। पूर्व स्थित व्यवसाय के पुनर्निर्माण या विभाजन से बनने वाली इकाई को स्टार्टअप की श्रेणी में नहीं माना जायेगा। उदाहरण: यदि रमेशचंद की कपडे की दूकान हैं, व उसकी बेटी उसमे नवीनता जोड़ती है व उसे फैशन बूटीक में परिवर्तित कर देती है, तो यह स्टार्टअप नहीं कहलायेगा, क्योकि यह पूर्वस्थित व्यवसाय का पुनर्निर्माण हैं।

आपके लिए क्या है?

जैसा कि हम समझते हैं, कि स्टार्टअप उद्यमिता के प्रारभिक चरण से संबंधित हैं और उसका पोषण उसी प्रकार से किया जाना चाहिए जैसे की एक असामयिक जन्मे शिशु को पोषित किया जाता हैं ।

इस हेतु विभिन्न परियोजनाएं जैसे तकनीकी प्रौद्योगिकी इनक्यूबेटर (टेक्नोलॉजी बिजनेस इन्क्यूबेटर्स), ए.बी.आई. (एग्री-बिजनेस इन्क्यूबेटर्स) और जैव तकनीकी परियोजनाओ के लिए BioNEST हैं। ए.बी.आई. योजना के अंतर्गत, युवाओं और उद्यमियों को कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में स्टार्टअप के लिए मार्गदर्शन, तकनीकी एवं बुनियादी ढांचा प्रदान किया जाता हैं।

कृषि व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में नवाचारों, कौशल निर्माण और उद्यमिता विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं और कृषि के विकास के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। ये इनक्यूबेटर उद्योग के विशेषज्ञों के नेटवर्क और नेटवर्क पर अप्रत्यक्ष तकनीकी और व्यावसायिक परामर्श प्रदान करते हैं, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक अच्छी संख्या में सरकारी अनुदान और वित्तपोषण मंच हैं। ये सभी अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए एग्री-स्टार्टअप का समर्थन करते हैं और अपने उत्पादों का व्यवसायीकरण करते हैं।

भारत में किसी भी तीन कृषि-इन्क्यूबेटरों का नाम बताइए

1. _____
2. _____
3. _____

अधिक जानकारी के लिए, यहाँ जाएं:

https: //www.indianweb2 com / complete-list-incubators-india/

भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI)

ASCI, का पूर्ण रूप एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ़ इंडिया है, जो कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) द्वारा समर्थित है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि ASCI को भारतीय कृषि के परिवर्तन की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिससे हमारे देशवासियों का कृषि के आगामी और उभरते क्षेत्रों में कौशल विकसित हो रहा है। ASCI ने 169 योग्यता पैक के माध्यम से कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में विभिन्न विषयों को आच्छादित किया है:

- सटीक खेती और कृषि मशीनीकरण
- कृषि-सूचना का प्रबंधन
- पोस्ट-हार्वेस्ट सप्लाई चेन मैनेजमेंट
- वानिकी और कृषि वानिकी
- जल विभाजन प्रबंधन
- बागवानी और भूनिर्माण
- उत्पादन बागवानी
- बीज उद्योग
- मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन
- डेयरी फार्म का प्रबंधन
- पोल्ट्री फार्म का प्रबंधन
- मछली पालन
- पशुपालन
- वस्तु प्रबंधन
- कृषि उद्यमिता और ग्रामीण उद्यम
- अन्य संबद्ध क्षेत्र

कौशल उन्नयन और रोजगार सृजन के अपने कार्य को पूरा करने के लिए, ASCI को कृषि और पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों और संबंधित अनुसंधान संस्थानों सहित सभी प्रमुख हितधारकों के साथ सहयोग करना है। इसमें कुछ विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) है, ताकि एएससीआई द्वारा विकसित योग्यता पैक के साथ विश्वविद्यालयों के अल्पकालिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सम्मिलित किया जा सके, जो निसंदेह भारत सरकार के राष्ट्रीय कौशल योग्यता के अनुरूप है। एएससीआई कौशल विकसित करता है और फिर प्रशिक्षुओं को रोजगार के लिए विभिन्न कंपनियों से जोड़ता है।

अधिक जानकारी के लिए, यहाँ जाएं: http://www.asci-india.com

एग्रीक्लिनिक और एग्रीबिजनेस सेंटर (एसी और एबीसी)

एग्रीक्लिनिक्स और एग्रीबिजनेस सेंटर कृषि-संबंधित पाठ्यक्रमों में स्नात्तकोतर के साथ-साथ कृषि डिप्लोमा धारकों या कृषि में इंटरमीडिएट, कृषि स्नातकों या जैविक विज्ञान स्नातकों के लिए लाभकारी स्व-रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए हैं। एग्रीक्लिनिक्स जैसा कि नाम विभिन्न कृषि प्रौद्योगिकियों जैसे कि फसल प्रथाओं, मृदा स्वास्थ्य, पौध सरंक्षण, कटाई के बाद की तकनीक, विभिन्न फसलों के बाजार मूल्य, जानवरों के लिए नैदानिक सेवाओं सहित फसल बीमा, उनके फ़ीड और चारा प्रबंधन जैसी विभिन्न तकनीकों पर किसानों को विशेषज्ञ सलाहकार सेवाएं प्रदान करता है। दूसरी ओर एग्रीबिजनेस सेंटर कृषि और संबद्ध उद्यमों की व्यावसायिक इकाइयों को संदर्भित करता है, जो प्रशिक्षित कृषि व्यवसायों द्वारा स्थापित और संधारित किया जाता है।

क्या मैं एसी और एबीसी का लाभ उठाने हेतु योग्य उम्मीदवार हूँ?

हाँ, निश्चित रूप से यदि:

- आपकी उम्र 18-60 वर्ष के बीच है
- आप कृषि और संबद्ध क्षेत्रों जैसे बागवानी, सेरीकल्चर, डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन, गृह/ सामुदायिक विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिक, वानिकी जैसे पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी, खाद्य पोषण और आहार विज्ञान आदि के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/ केंद्रीय विश्वविद्यालयों से स्नातक हैं। यूजीसी/ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त पर्यावरण विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञानं और रसायन विज्ञान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सम्बद्ध विश्वविद्यालय से स्नातक

या

- आपके पास किसी भी अन्य एजेंसी द्वारा प्रस्तुत कृषि और संबद्ध विषयों में डिग्री है जो राज्य सरकार की सिफारिशों पर कृषि सहयोग और किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार की स्वीकृति

या

- आप राज्य सरकार की सिफारिशों पर भारत सरकार के कृषि सहयोग और किसान कल्याण विभाग के अनुमोदन के अधीन कृषि और संबद्ध विषयों द्वारा कृषि और संबद्ध विषयों में डिप्लोमा धारक हैं।

प्रशिक्षण और प्रारंभिक समर्थन

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन मैनेजमेंट (MANAGE), हैदराबाद, एक नोडल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स (NTI) के माध्यम से प्रशिक्षण और हैंड होल्डिंग सपोर्ट प्रदान करता है। ये एनटीआई एक कृषि विश्वविद्यालय, एक कृषि विज्ञान केंद्र, एक निजी कंपनी या एक सरकारी संस्थान में हो सकते हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं। एसी और एबीसी प्रशिक्षण के लिए आवेदन ऑनलाइन पोर्टल http: // acabc.gov.in के माध्यम से स्वीकार किए जाते है। फिर आवेदनों की जाँच की जाती है और एग्री-ग्रेजुएट/ पात्र उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है और उनका चयन किया जाता है।

एग्रीक्लीनिक और एग्रीबिजनेस सेंटर की स्थापना के लिए नि: शुल्क प्रशिक्षण और बैंक ऋण

दो महीने का विशेष प्रशिक्षण नि: शुल्क उन एग्री - स्नातकों को प्रदान किया जाता है, जो एग्रीक्लीनिक और एग्रीबिजनेस सेंटर स्थापित करने में रुचि रखते हैं। पाठ्यक्रम में उद्यमिता और व्यवसाय प्रबंधन के साथ-साथ कार्य कौशल सुधार के लिए मॉड्यूल शामिल हैं। अपने प्रशिक्षण के अंत तक, आप ऋण प्रक्रियाओं के लिए बैंकों से जुड़ जायेंगे। बैंक आपके द्वारा निर्धारित उद्यम के प्रकार के आधार पर ऋण के लिए आपकी पात्रता, ऋण पर ब्याज, मार्जिन और सुरक्षा की दर तय करते हैं। प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद, आप अपने उद्यम के लिए विशेष स्टार्टअप ऋण हेतु आवेदन कर सकते है।

अधिक जानकारी के लिए, यहाँ जाएं: http://acabcmis.gov.in

अन्य योजनाएं

वेंचर कैपिटल असिस्टेंस स्कीम (कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय)

वेंचर कैपिटल असिस्टेंस स्कीम ब्याज मुक्त ऋण के रूप में एक तरह की वित्तीय सहायता है, जो छोटे किसानों को कृषि-व्यवसाय कंसोर्टियम (एसएफएसी) द्वारा उन योग्य परियोजनाओं के लिए प्रदान की जाती है, जिन परियोजनाओ को लागू करने के लिए पूंजी की आवश्यकता में कमी पड़ जाती हैं। यह योजना कृषि व्यवसायियों को वित्तीय सहायता के माध्यम से कृषि व्यवसाय परियोजनाओं की स्थापना में निवेश करने का आश्वासन देती है, इस प्रकार परियोजना विकास सुविधा (पीडीएफ) के माध्यम से बैंक योग्य विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में सहायता करती है।

इसका लाभ कौन उठा सकता है?

- किसान
- निर्माता समूह
- स्वयं सहायता समूह (SHG)
- कंपनियाँ
- कृषि उद्यमी
- कृषि-स्नातक (व्यक्तिगत या समूहों में) कृषि व्यवसाय परियोजनाओं की स्थापना के लिए

डेरी उद्यमिता विकास योजना

डेरी क्षेत्र में स्व-रोजगार के अवसरों को उत्पन्न करने के लिए पशु पालन, डेरी एवं मतस्य पालन विभाग ने डेरी उद्यमिता विकास योजना (डी.ई.डी.एस) लागू की हैं, जिनमे दुग्ध उत्पादन व खरीद जैसी गतिविधियाँ समिलित हैं। इसमें दूध उत्पादन, खरीद, संरक्षण, परिवहन, प्रसंस्करण और दूध की उत्पदिकता बढ़ाने जैसी गतिविधियों को शामिल किया गया है, ताकि बैंक योग्य परियोजनाओं के लिए पूंजीगत सब्सिडी प्रदान की जा सके और इसे राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) द्वारा लागू किया जा सके। यहाँ, परियोजना की कुल लागत का एक चौथाई भाग (25%) सब्सिडी के रूप में प्रदान किया जाता है । इस योजना के तहत किसानो को 10 पशु इकाई के लिए 7 लाख रुपए का कर्ज मिल सकता हैं, इकाई का आकार दो जानवर से लेकर दस तक हो सकता हैं। इसके अलवा सब्सिडी को अदिकतम 10 जानवरों तक प्रतिबंधित किया जाता हैं, जिसकी सीमा प्रति पशु रु 15000/- के अधीन हैं।

योजना के उद्देश्य:

- स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए आधुनिक डेयरी फार्म स्थापित करना
- हेफ़र बछड़ा पालन करके अच्छे प्रजनन स्टॉक का संरक्षण करना
- गाँव में दूध के प्रारंभिक प्रसंस्करण को प्रोत्साहित करने के लिए असंगठित क्षेत्र में संरचनात्मक सुधार लाना
- व्यावसायिक स्तर पर दूध की गुणवत्ता और पारंपरिक तकनीक में उन्नयन लाना

कौन आवेदन कर सकता है?

- किसान, उद्यमी, कंपनियाँ, स्वयं सहायता समूह (SHG), गैर - सरकारी संगठन, डेयरी सहकारी समितियाँ, दुग्ध संघ, दुग्ध महासंघ और असंगठित क्षेत्र

क्या मेरे भाई को उसी योजना के लिए सहायता मिल सकती है?

- हाँ, इस योजना के तहत एक परिवार के एक से अधिक सदस्य लाभान्वित हो सकते हैं, उन्होंने अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग इकाइयाँ स्थापित की हैं जिनकी न्यूनतम दूरी 500 मीटर है।

क्या मैं योजना के सभी घटकों के लिए सहायता प्राप्त करने के योग्य हूँ?

- आप योजना के तहत सभी घटकों के अंतर्गत सहायता प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन प्रत्येक घटक एक बार में।

अन्य कुछ .....

सरकार ने देश में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उद्यमियों की सहायता के लिए एक कृषि उद्यमिता संवर्धन योजना (AEPS) शुरू की है। इस योजना को 2018 के दौरान शुरू किया गया था। कृषि में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के प्रयास में, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रौद्योगिकी व्यापार इनक्यूबेटर (टीबीआई)

- NAARM ने एक नया AGRI-UDAAN कार्यक्रम शुरू किया है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में अभिनव शुरुआत के लिए मदद करेगा। कृषि में प्रभावी सुधार के लिए नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, भारत सरकार ने विश्व स्तरीय स्टार्टअप व्यवसायों, नवाचार हब और प्रौद्योगिकी संचालित स्वरोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में सेवा करने के उद्देश्य से अटल इनोवेशन मिशन (एआईएम) का शुभारंभ किया। SETU घटक के तहत, स्व-रोजगार एवं प्रतिभा उपयोगिता के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाता है। घटक इनोवेशन प्रमोशन के तहत अभिनव विचारों की पीढ़ी के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है।

अटल इनक्यूबेशन सेंटर की फंडिंग संरचना

अटल इनोवेशन मिशन केंद्र चलाने के लिए पूंजी और परिचालन व्यय को वहन करने के लिए पांच साल की अवधि के लिए अटल इनक्यूबेशन केंद्रों में से प्रत्येक को 10 करोड़ रुपये का वित्तपोषण प्रदान करता है।

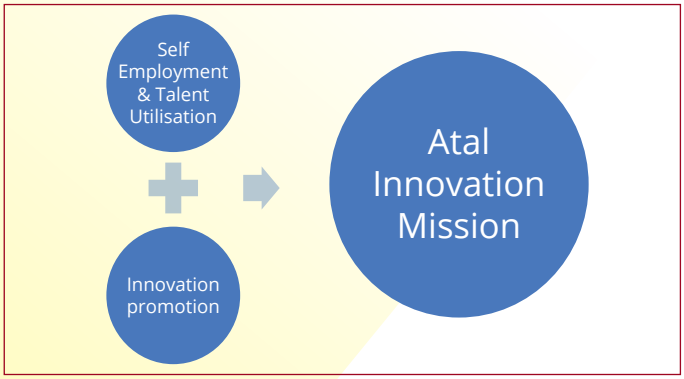

अटल इनोवेशन मिशन के घटक

शैक्षिक संस्थानों के लिए क्या?

राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता विकास बोर्ड (NSTEDB) स्टार्टअप प्रोग्राम के तहत सरकार की नई पीढ़ी के नवाचार और उद्यमिता विकास केंद्र (IEDC) को उच्च शिक्षा संस्थानों में लागू किया गया है। एक वर्ष में लगभग 20 नई परियोजनाओं को मंजूरी दी जाती है, और एक बार में 25 लाख रुपये तक का गैर-आवर्ती बजट सरकार द्वारा एक संस्थान को स्थापना लागत के रूप में प्रदान किया जाता है, जिसमें स्टार्टअप्स के लिए क्यूबिकल्स का विकास और सजावट करना, व्यक्तिगत कंप्यूटर, प्रिंटर, लैपटॉप, 3 डी प्रिंटर, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर, किताबें, जर्नल आदि की खरीद सम्मिलित हैं।

इस अध्याय के उल्लेखित मुद्दों के बारे में पाठक अधिक जानकारी के लिये निम्नलिखित वेबसाईट देखे:

1. http://acabc.gov.in http://acabcmis.gov.in/home.aspx http://www.asci-india.com
2. https://www.indianweb2.com/complete-list- incubators-india/
3. http://manage.gov.in

4. http://www.naarm.org.in

उपसंहार

किसी भी नये उद्यमी को प्रारंभिक अवस्था में कौशल, प्रशिक्षण एवं धन की आवश्यकता होती है। केंद्रीय सरकार ने ऐसे विभिन्न प्रकार के कदम उठाये है, जिनसे प्रशिक्षाओं को इन तीनों ही क्षेत्रों में सहायता प्राप्त हो। इस अध्याय में इन से सम्बंधित योजनाओं एवं संस्थानों का पूर्ण विवरण दिया है।

1. भारत सरकार का कौन सा कार्यक्रम नवाचारों और स्टार्टअप का पोषण करता है?

2. एसी और एबीसी के लाभों का लाभ उठाने के लिए आयु क्या है?

3. पूसा कृषि इन्क्यूबेटर कहाँ स्थित है?

4. स्टार्टअप कहलाने के लिए, एक जैव प्रौद्योगिकी परियोजना कितने वर्ष से पुरानी नहीं होनी चाहिए?

5. एएससीआई ऑनलाइन कैसे पहुँचें?

नवाचार: स्टार्टअप और उद्यमिता हेतु एक प्राथमिक आवश्यकता

प्रस्तावना

उद्यमी, को अंग्रेजी में इंटरप्रेन्योर (Entrepreneur) कहते है, जो कि एक फ्रांसीसी क्रिया है 'एन्टरप्रेंड्रे (Entreprendre)', जिसका अर्थ है आरंभ करना। उद्यमी अवधारणा सदियों से मौजूद है। उद्यमी कोई भी व्यक्ति हो सकता है, जो जोखिम लेने और एक बौद्धिक कल्पना या नवाचार के आधार पर उद्यम विकसित करने के लिए तैयार हो। ये उद्यमी वे हैं, जो रोजगार सृजन, आर्थिक लाभ और सामाजिक प्रभाव के लिए संगठन बनाते हैं। छोटे व्यवसाय के मालिकों की तुलना में उद्यमी भिन्न होता है, क्योंकि छोटे व्यवसाय के मालिक ज्ञात जोखिमों के साथ काम करते हैं, जबकि उद्यमी अज्ञात जोखिम लेते हैं। इसके अलावा, स्टार्टअप उद्यमियों के लिए अलग हैं, क्योंकि स्टार्टअप विचारों अथवा आईडिया में अभिन्न हैं।

उद्यमिता और इनक्यूबेटर्स की पृष्ठभूमि

उद्यमी की यात्रा जोखिम भरी है और इसलिए अधिकांश लोग जो जोखिम लेने से घबरा जाते हैं वे उद्यमी बनने से पीछे हट जाते हैं। वास्तव में, ऐसे आंकड़े हैं जो दावा करते हैं कि 90 प्रतिशत से अधिक उद्यम निगमन के पहले तीन वर्षों के भीतर विफल हो जाते हैं। इनमें से अधिकांश उद्यम ज्ञान जोखिम, नेटवर्क जोखिमों और वित्तपोषण जोखिमों के कारण प्रारंभिक चरण में विफल हो जाते हैं।

यद्यपि उद्यमिता में जोखिम अपरिहार्य हैं, हालांकि किसी भी देश में उद्यमशीलता की संस्कृति का निर्माण अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगा, क्योंकि यह युवाओं में आत्मविश्वास पैदा करता है, आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ-साथ दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। भारत में जैसे श्री रतन टाटा, श्री धीरूभाई अंबानी, श्री नारायणमूर्ति, श्री अजीम प्रेमजी, श्री लक्ष्मी मित्तल आदि विभिन्न क्षेत्रों में सफल उद्यमियों के उदाहरण हैं।

अन्य क्षेत्रों में ही नहीं, कृषि व्यवसाय क्षेत्र (Agribusiness Space) में भी सफल उद्यमी हैं, जिन्होंने एग्रीबिजनेस के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किया है और भारत में सफल एग्रीबिजनेस के निर्माण के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। सफल अग्रणी मॉडल बनने वाले इन अग्रणी उद्यमियों में शामिल हैं: डॉ बीआर बरवाले, माहिको के संस्थापक अध्यक्ष, श्री भवरलाल जैन, जैन इरीगेशन (Jain Irrigation) के अध्यक्ष, श्री लक्ष्मण

दास मित्तल, सोनालिका समूह के अध्यक्ष, श्री वेंकटरामैया, नुजिवेदु सीड्स के संस्थापक। इसके अलावा ऐसे कई अनसुने हीरो हैं, जिन्होंने उद्यमिता के लिए जोखिम उठाया है, तथा सफल हुए है।

किसी भी दो सफल भारतीय उद्यमियों के नाम बताइए

(1) _____

(2) _____

नुजिवेदु सीड्स के संस्थापक अध्यक्ष कौन हैं?

(1) _____

(2) _____

किस देश में पहला व्यापार ऊष्मायन (Incubator) विकसित किया गया था?

(1) _____

तीन देशों के बीच; संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और भारत में से किसके पास आज की तारीख में प्रौद्योगिकी स्टार्टअप की संख्या सर्वाधिक है?

(1) _____

(2) _____

(3) _____

आकांक्षी उद्यमियों के लिए धन सहित ज्ञान, नेटवर्क और संसाधनों तक पहुँच के ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए, इनक्यूबेटरों की एक अवधारणा विकसित की गई थी। बिजनेस इनक्यूबेटर एक ऐसी संस्था है, जो नई और स्टार्टअप कंपनियों को प्रबंधन प्रशिक्षण या कार्यस्थल जैसी सेवाएं प्रदान करके विकसित करने में मदद करती है। पहला व्यवसाय ऊष्मायन 1959 में संयुक्त राज्य अमेरिका में बाटाविया औद्योगिक क्लस्टर में विकसित हुआ। इसके अलावा, इस इनक्यूबेटर्स अवधारणा ने रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी। अब तक वैश्विक स्तर पर 7,500 इनक्यूबेटर हैं। भारत में, इन्क्यूबेटर्स अर्थात प्रौद्योगिकी व्यवसाय इन्क्यूबेटरों (TBI के रूप में संक्षिप्त) को 1983 में राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमिता विकास बोर्ड (NSTEDB), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा शुरू किया गया था। बाद में, अन्य विभिन्न मंत्रालय देश में अधिक से अधिक इनक्यूबेटरों का समर्थन करने में लीग में शामिल हो गए। जैसे जैव प्रौद्योगिकी इग्निशन

रिसर्च एडवाइजरी काउंसिल (BIRAC) डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी (DBT), मिनिस्ट्री ऑफ माइक्रो स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज (MSME), इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना मंत्रालय प्रौद्योगिकी (MEITY), नीति आयोग इत्यादि। वर्तमान में भारत में इन एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित 300 से अधिक इनक्यूबेटर हैं।

भारत में, 2015 में भारत सरकार के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा शुरू किए गए स्टार्टअप इंडिया पहल के आगमन के बाद, नवीन उत्पादों, प्रक्रियाओं के साथ देश में इन स्टार्टअप के साथ-साथ इन्क्यूबेटरों की संख्या भी बढ़ गई है। कृषि में कई क्षेत्रों में इनक्यूबेटर उपलब्ध है जैसे कि उत्पाद, प्रक्रियाये, सेवाये एवं व्यापर मॉडल इत्यादि। अब तक, भारत के पास अमेरिका और ब्रिटेन से की अधिक लगभग 7,700 प्रौद्योगिकी स्टार्टअप हैं, जबकि वर्तमान में स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम में वर्ष 19,280 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं। हाल ही में राष्ट्रपति के अभिभाषण के अनुसार, भारत में वर्ष 2024 तक 50,000 स्टार्टअप को पार करने की संभावना है।

कृषि क्षेत्र में, भारत में प्रथम कृषि इनक्यूबेटर की स्थापना हैदराबाद स्थित एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान इक्रिसेट (ICRISAT) में वर्ष 2005 में हुई। इसके पश्चात एग्रीबिजनेस डेवलपमेंट (एबीडी), TANU में और सोसाइटी फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप इन डेयरिंग (SINED), नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (NDRI) में शुरू हुआ। बाद में 2014 में, एसोसिएशन फॉर इनोवेशन डेवलपमेंट ऑफ एग्रीकल्चरशिप इन एग्रीकल्चर (a-IDEA), आईसीएआर का एक इनक्यूबेटर - नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च मैनेजमेंट (NAARM) आया। कुछ और इनक्यूबेटर्स संघ (League) में शामिल हो गए, जैसे कि तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (TNAU) - कोयम्बटूर, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (CCSHAU), हिसार, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च (IIMR) आदि। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने 2015 से परियोजना मोड पर 50 एग्रीबिजनेस इनक्यूबेटरों को बढ़ावा दिया है, 2018 के अंत तक कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय (MoAFW) ने RAFTAAR योजना शुरू की, जिसके तहत 30 ग्रामीण ऊष्मायनों (R-ABIs) को एक परियोजना के आधार पर विकसित किया गया है। उपर्युक्त इनक्यूबेटर्स विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से प्रौद्योगिकी विकास, व्यवसाय परामर्श, अनुपालन और वित्त पोषण के विभिन्न पहलुओं में स्टार्टअप का समर्थन करने में मदद करते हैं। ये ऊष्मायन कार्यक्रम (Incubator Programme) शुरुआती चरण के उन स्टार्टअप के लिए है, जो 0-1 वर्ष पुराने हैं और उत्पाद विकास/ प्रोटोटाइपिंग के शुरुआती चरण में हैं और बाजार में प्रवेश के लिए रास्ते तलाश रहे हैं। आमतौर पर ऊष्मायन कार्यक्रम समर्थन की अवधि इनक्यूबेटर से इनक्यूबेटर में भिन्न होती है, हालांकि इन इनक्यूबेटरों में शुरूआती चरण के अधिकांश स्टार्टअप 1-2 साल के लिए समर्थित होते हैं।

इसके अलावा, कृषि के क्षेत्र में दो से तीन साल पुराने स्टार्टअप के लिए और भी कई अवसर हैं। इस तरह के स्टार्टअप एक त्वरक कार्यक्रम (Accelerator Programme) के लिए आवेदन कर सकते हैं। ऊष्मायन कार्यक्रम के विपरीत, एक्सेलेरेटर प्रोग्राम कठोर, क्षमता निर्माण, सलाह, नेटवर्किंग और फंड जुटाने के माध्यम

से परिपक्व चरण में स्टार्टअप के सहयोग के लिए स्काउट, पोषण और स्केल करने के लिए 6 महीने के कार्यक्रम हैं। भारत के पहले खाद्य और कृषि व्यवसाय त्वरक (Food and agribusiness Incubator) को 2015 के लिए भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), अहमदाबाद के सेंटर फॉर इनोवेशन, इन्क्यूबेशन, एंटरप्रेन्योरशिप (CIIE) के सहयोग से नार्म (NAARM) के इनक्यूबेटर, ए-आईडिया (a-IDEA) द्वारा लॉन्च किया गया था। इसके अंतर्गत 2017 में खाद्य और कृषि व्यवसाय त्वरक एग्री उडान (Agri Udaan) 2.0 का आयोजन किया गया था।

क्या तुम्हें पता था?

ICRISAT का एग्रीबिजनेस इनोवेशन प्लेटफ़ॉर्म (IP) भारत में स्थापित पहला कृषि केंद्रित इनक्यूबेटर था

- भारत का प्रथम खाद्य तथा कृषि व्यवसाय त्वरक ए-आईडिया (a-IDEA), नार्म (NAARM) के प्रौद्योगिकी इनक्यूबेटर द्वारा प्रारंभ किया गया
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) 2015 के बाद से एक परियोजना मोड पर 50 एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेटरों को बढ़ावा दे रहा है।
- उद्यमिता में अधिक जानकारी हासिल करने के लिए, आप कृषि कल्प और ए-आईडिया (a-IDEA) अथवा अन्य राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित ईडीपी पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

वर्ष 2018 में, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने कृषि में विचार मंच और प्रारंभिक चरण स्टार्टअप को पोषित करने के लिए ग्रैंड चैलेंज का शुभारंभ किया। एग्रीटेक स्टार्टअप लेने वाले छात्रों की संख्या हालांकि वर्तमान में कम है, लेकिन यह संख्या निरंतर बढ़ रही है। बहुत सारे छात्र अब खाद्य और एग्रीटेक स्टार्टअप बनाने को उत्सुक हैं। आइए ऐसे छात्रों द्वारा स्थापित स्टार्टअप के निम्नलिखित प्रेरक उदाहरण देखें

- कीटों और बीमारियों का पता लगाने के लिए ड्रोन आधारित हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग पर काम करने वाला एक प्रारंभिक चरण फूड एंड एग्रीटेक स्टार्टअप भारत रोहण, यह स्टार्टअप श्री अमनदीप पंवार और श्री ऋषभ चौधरी का है।

- रॉबिक रुफर्म, एक प्रारंभिक अवस्था स्टार्टअप जो एक इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) पर आधारित है, जो कि झींगा खेतों में EC, PH, BOD जैसे मापदंडों का पता लगाने के लिए हार्डवेयर आधारित है। इस स्टार्टअप की स्थापना श्री कीर्ति मदीना एवं अन्य ने की थी।

- पखानसा- प्रारंभिक चरण में एक और दिलचस्प छात्र-आधारित स्टार्टअप है, जो पानी-पूरी वेंडिंग मशीनों को विकसित कर रहा है। यह स्टार्टअप श्री सौरभ और श्री अभिजीत द्वारा शुरू किया गया था।

स्टार्टअप इकोसिस्टम को समझिये

जो छात्र स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के संपर्क में आने के इच्छुक हैं, वे इनक्यूबेटरों द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं। कृषि में वे छात्र, जो स्टार्टअप इकोसिस्टम के प्रति अपनी समझ के निर्माण के शुरुआती चरण में हैं और उद्यमिता के प्रति अपना झुकाव विकसित करने के लिए विभिन्न संवेदीकरण कार्यशालाओं से अवगत होने का एक बड़ा अवसर है, ए-आईडिया (a-IDEA) द्वारा आयोजित कृषि कल्प नामक बौद्धिक विचार जनक कार्यक्रम (Ideation programme) भी शामिल होते हैं। ए-आईडिया (a-IDEA) और अन्य राष्ट्रीय और राज्य स्तर के विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित केंद्रित उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP)

में भाग ले सकते हैं। यही नहीं, विभिन्न इनक्यूबेटरों द्वारा आयोजित कई हैकथॉन, इनोवेशन चुनौतियाँ जैसे स्मार्ट इंडिया हैकथॉन आदि हैं, जो छात्रों के विचारों को प्रदर्शित करने और विशेषज्ञों से सलाह लेने के लिए ऐसे प्लेटफॉर्म पर भाग ले सकते हैं और विभिन्न अवसरों की प्राप्ति कर सकते हैं।

छात्रों को समर्थन कैसे मिलता है?

ऊष्मायन कार्यक्रमों के तहत समर्थित होने के लिए

यदि छात्र अपने अभिनव विचारों के लिए समर्थन प्राप्त करना चाहते हैं और ऊष्मायन कार्यक्रम और सेवाओं का लाभ उठाने की इच्छा रखते हैं, तो वे स्टार्टअप इंडिया वेबसाइट पर जा सकते हैं: startupindia.gov.in और इनक्यूबेटरों के डोमेन विशेषज्ञता और अपने क्षेत्र के अनुसार निकटतम संभव इनक्यूबेटर के अनुसार भारत भर में इनक्यूबेटरों की सूची के लिए वेब ब्राउज़ करें और ऊष्मायन समर्थन सेवाओं का लाभ उठाएं।

धन सहायता के लिए

छात्र शुरुआती फंडिंग अवसर की तलाश में विचार (Ideation) के प्रारंभिक चरण में, इस फंडिंग योजना के अधिक विवरण प्राप्त करने के लिए इनक्यूबेटरों से सहायता प्राप्त कर सकते हैं या फिर वे सीधे सहायता के लिए अनुदान की घोषणाओं का मसौदा प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए

- भारत सरकार की NSTEDB, एवं NIDHI प्रयास योजनाओं के तहत 10 लाख रुपये तक की राशि का अनुदान हैं।

- प्रारंभ चरण के तहत 5 लाख रुपये की राशि और स्टार्टअप चरण के तहत 25 लाख रुपये अनुदान के लिए अनुदान हैं, ये कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय की रफ़्तार (RAFTAAR) योजना के तहत हैं।

- जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद की जैव प्रौद्योगिकी इग्निशन ग्रांट (बीआईजी) योजना के तहत प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्ट (POC) रूपांतरण के शुरुआती चरण के विचार के लिए धन के अवसर हैं, जिसके तहत 50 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त किया जा सकता है। कृषि और एग्रीबायोटेक में स्टार्टअप्स इस वित्त पोषण सहायता का लाभ उठा सकते हैं, नार्म (NAARM) के टेक्नोलॉजी बिजनेस इंक्यूबेटर ए-आईडिया (a-IDEA), भी इस तरह के स्टार्टअप कार्यकम के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

परिभाषाएं

नवाचार, नवपरिवर्तन अथवा नवोन्मेष (Innovation) किसी विचार (Idea) या आविष्कार को एक अच्छी या सेवा में बदलने की प्रक्रिया जो मूल्य पैदा करती है या जिसके लिए ग्राहक भुगतान करते है, को एक नवाचार कहा जाता है, एक विचार एक किफायती लागत पर प्रतिकृत होना चाहिए और एक विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करना चाहिए। नवाचार में संसाधनों से अधिक या विभिन्न प्रकार के मूल्यों को प्राप्त करने के लिए सूचना, कल्पना और पहल का जाना-समझा मिश्रित उपयोग शामिल है, और इसमें सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं जिनके द्वारा नए विचारों को उत्पन्न किया जाता है और उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। जब ग्राहकों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए कंपनी द्वारा नवीन विचारों को लागू किया जाता है, तब व्यवसाय में, नवाचार अक्सर परिणाम देता है।

स्टार्टअप इंडिया इनिशिएटिव ऑफ डीआईपीपी, जीओआई के तहत एक स्टार्टअप परिभाषा को पूरा करने के लिए, निम्नलिखित शर्तें:

(i) कंपनी की आयु - निगमन की तिथि से अस्तित्व और संचालन की अवधि 10 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(ii) कंपनी प्रकार - एक पंजीकृत भागीदारी फर्म या सीमित देयता भागीदारी फर्म (LLP) या प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में शामिल।

(iii) वार्षिक टर्नओवर - निगमन के बाद से किसी भी वित्तीय वर्ष के लिए 100 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए।

(iv) अभिनव - उत्पाद, प्रक्रिया, या सेवा के विकास की दिशा में काम करना चाहिए या धन और रोजगार सृजन के लिए उच्च प्रभाव के साथ स्केलेबल बिजनेस मॉडल होना चाहिए।

(v) मूल इकाई - इकाई को पहले से मौजूद इकाई को विभाजित या पुनर्निर्माण करके नहीं बनाया जाना चाहिए।

उद्यमी (Entrepreneur)

एक उद्यमी वह है, जो एक अभिनव विचार पर कार्य कर रहा है और एक उद्यम निर्माण के माध्यम से एक व्यवसाय विकसित करने की तैयारी में है। और आगे अपने व्यवसायों को लाभदायक बनाने की दिशा में कार्यरत है।

महत्वपूर्ण लिंक

शब्दकोष: खाद्य और कृषि व्यवसाय में स्टार्टअप उद्योग के प्रमुख स्टार्टअप संक्षिप्त विवरण दिये गए है। यह स्टार्टअप उद्योग के शब्दजाल का संकलन है। छात्र इसे नार्म (NAARM) के इंक्यूबेटर ए-आईडिया (a-IDEA) की वेबसाईट पर देख सकते है।

1. https://aidea.naarm.org.in/publications/Startups%20Shabdkosh.pdf
2. https://www.startupindia.gov.in/
3. https://www.e-startupindia.com/

उपसंहार

इस अध्याय में मुख्यत स्टार्टअप इनक्यूबेटर एवं एक्सेलेरेटर का वर्णन किया गया है। कृषि उद्यमिता में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं की जानकारी एक नये उद्यमी के लिये बहुत ही उपयोगी होगी। उद्यमिता में प्रयुक्त परिभाषाओं को भी एक सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

1

एक व्यक्ति है जो जोखिम लेने को तैयार है और नवाचार के आधार पर एक उद्यम विकसित कर रहा है। वह कौन है?

2

IIM, अहमदाबाद का इनक्यूबेटर किस वर्ष लॉन्च किया गया था?

3

ए-आईडिया (a-IDEA) किस संस्थान का इनक्यूबेटर है?

4

रफ़्तार (RAFTAAR) का शुभारंभ किस मंत्रालय ने किया?

कृषि स्नातकों का कृषि उद्यमियों के रूप में निर्माण

प्रस्तावना

प्रत्येक दो में से एक भारतीय कृषि पर निर्भर रहता है। कृषि परिदृश्य में काफी बदलाव आया है, भारत में कृषि हरित क्रांति को पूरी तरह से एक नए दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी के नए रूप की आवश्यकता है। एक ऐसी अवधि जब नई प्रगति के परिणामस्वरूप वैश्विक कृषि की उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। इस समयावधि के दौरान, नए रासायनिक उर्वरकों और कृत्रिम खरपतवारनाशी (Synthetic Herbicides) और कीटनाशकों के निर्माण में भी काफी बढ़ोतरी हुई थी। इसलिए, हमारा मानना है, कि उद्यमी कल के नवाचारों के प्रमुख चालक हैं और एक संपन्न अर्थव्यवस्था बनाने के लिए अभिन्न हैं। पिछले कुछ दशकों के दौरान, अर्थव्यवस्था के विकास में मैन्यूफैक्चरिंग और सेवा क्षेत्रों का योगदान तेजी से बढ़ रहा है, जबकि कृषि क्षेत्र के योगदान में गिरावट हुई है। 1950 के दशक में जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान जहाँ 57.7 प्रतिशत था, वहीं 2019-20 में यह गिरकर 15.4 प्रतिशत रह गया है (चित्र 1)। हालांकि, कृषि-केंद्रित अर्थव्यवस्था से उद्योग-केंद्रित अर्थव्यवस्था में बदलाव उद्योगों के आगमन के साथ अपरिहार्य है। तथा जिस गति से पेड़ लगाए जा रहे हैं, उससे अधिक गति से बढ़ने वाले उद्योगों के साथ (पेड़ काटे जा रहे है), एक समय होगा जब कृषि की उत्पादकता घटेगी, तब समय के साथ कृषि, कृषि व्यवसाय और कृषि-उद्योग के सामरिक महत्व की मान्यता में काफी वृद्धि होगी।

इन कृषि व्यवसायियों और कृषि-उद्योगों के पीछे कृषि उद्यमी राष्ट्रीय विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, प्रभावशाली नवाचार लाते हैं जो कृषि उत्पादकता एवं कृषि व्यवसाय में सुधार करते हैं और कई लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। एग्रीबिजनेस उद्यमी, या कृषि-उद्यमी, कृषि खाद्य प्रणाली विकास के प्रमुख संचालक हैं। जब एग्रीप्रेन्योर लाभदायक और प्रतिस्पर्धी फर्मों को बनाने और विकसित करने में सफल होते हैं, तो वे न केवल अपने लिए लाभ उत्पन्न करते हैं, बल्कि इससे भी आवश्यक बात यह है कि वे रोजगार और कर राजस्व उत्पन्न करते हैं, इसके साथ वे आवश्यक उत्पादों, सेवाओं या बाजारों का भी निर्माण करते हैं।

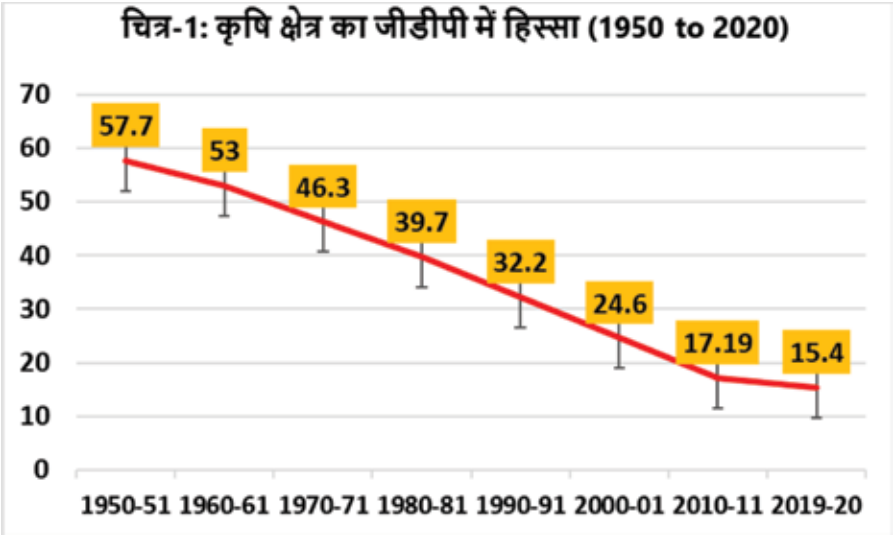

भारत में कृषि अर्थव्यवस्था की स्थिति

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत में कृषि सिंधु घाटी सभ्यता के समय से की जाती रही है। 1960 के बाद कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति के साथ एक नया दौर आया जहाँ, रेनबो क्रांति (ग्रीन, व्हाइट, येलो और ब्लू क्रांति) द्वारा नेतृत्व में, भारत ने कृषि-खाद्य प्रणाली में अभूतपूर्व वृद्धि हासिल की है, पिछले पाँच दशकों के दौरान प्रमुख वस्तुओं में 4 से 10 गुना वृद्धि प्राप्त की है। और इसी तरह दुनिया भर में भारत, कृषि अर्थव्यवस्था में दुसरे स्थान पर पहुँच गया है। इस परिवर्तन ने देश को न केवल खाद्य आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि कृषि उत्पादों का एक प्रमुख निर्यातक भी बनाया है। रेनबो क्रांति ने भूख, गरीबी और कुपोषण की घटनाओं को कम किया है। फिर भी, हमें मीलों चलना है। भारत अभी भी लगभग 200 मिलियन भूखे, गरीब और कुपोषित लोगों और दुनिया के लगभग 35 प्रतिशत भूखे बच्चों का घर है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDG-2030 (https://sustainabledevelopment.un.org/?menu=1300) के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक और कृषि-पारिस्थितिक सुरक्षा के अनुसार, यह जीरो हंगर, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण मुख्य तत्व है। इसके साथ यह सतत विकास वंचित समूहों सहित आम लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर उद्यमिता की भूमिका को भी मान्यता प्रदान करता हैं। इसलिए आने वाले वर्षो में कृषि उद्यमिता को परिवर्तन प्रक्रिया के साथ एक नए दृष्टिकोण के रूप में देखा जाएगा।

कृषि-उद्यमी कृषि परिवर्तन की कुंजी है

भारत में कृषि-उद्यमिता या मेक-इन-इंडिया (स्वदेशी आंदोलन) कोई नई बात नहीं है। हालांकि, स्वतंत्रता के बाद के युग में भारत ने, स्व-रोजगार और कृषि उद्यमशीलता को उतना बढावा नहीं दिया है। लेकिन अब आने वाले समय में अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न रोजगार का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में सृजित होगा। इन स्वरोजगार कृषि उद्यमियों को विपणन, वित्त और लेखा और प्राथमिक प्रबंधन में निपूर्ण करने के लिए उत्पादन कौशल से परे जाकर बहु-कौशल विविधता के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इस तरह के कौशल को संरचित औपचारिक प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित नहीं किया जा सकता है, इसके लिये वास्तविक व्यावसायिक परिस्थितियों में मेंटर के मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। जो स्वरोजगार को रोजगार-सृजन के साधन के रूप में बढ़ावा देंगे, और उन्हें आगे के रोजगार सृजन के लिए कृषि-उद्यमिता द्वारा मार्ग दिखायेंगे।

भारत के आयाम की एक कृषि अर्थव्यवस्था में, बेरोजगार युवा और छोटे किसानों द्वारा पूर्वनिर्धारित, उद्यमशीलता को कृषि परिवर्तन और बहुसंख्यक युवाओं और सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण चालक की आवश्यकता होगी, जो अक्सर तेजी से जटिल और प्रतिस्पर्धी वैश्विक अर्थव्यवस्था के किनारों पर काम करते हैं। और इसी तरह आगे बढ़ने के लिये रोजगार सुरक्षा और विशाल जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करने में भी सहायता प्रदान करेंगें।

एग्रीप्रेन्योर: वे कौन हैं और क्यों महत्वपूर्ण हैं?

कृषि उद्यमिता एवं एग्रीप्रेन्योरशिप, कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में की गई उद्यमशीलता की प्रक्रिया है। यह बेहतर उत्पादन और आर्थिक कमाई के लिए नए तरीकों, प्रक्रियाओं, तकनीकों को अपनाने की कार्यविधि है। एग्रीप्रेन्योरशिप, सामान्य कृषि को एक उद्यमशील गतिविधि में परिवर्तित करती है, और अभिनव विचारों को अपनाकर, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बदलाव लाते हैं।

एग्रीप्रेन्योरशिप एक ऐसी सोच है, जिसके बारे में हमने हाल ही में चर्चा शुरू की है। परंपरागत रूप से, कृषि को विशेष रूप से भारत में जीवन के एक नये तरीके के रूप में देखा जाता है, जहाँ किसान ज्यादातर नई चीजें करने के बजाय बेहतर कार्य करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हालांकि, मुख्य रूप से निम्न कारणों से स्थिति तेजी से बदल रही है:

- साक्षरता और शिक्षा के बढ़ते स्तर
- आर्थिक उदारीकरण और व्यावसायीकरण
- कृषि बाजारों को नियंत्रण मुक्त करना
- संचार और परिवहन के बेहतर साधन

बदलते बाजार की गति के साथ, कई विकल्प उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध हैं। कृषि उत्पादकों और विशेष रूप से कृषि कंपनियों को बाजार की मांग, उपभोक्ता आदतों को बढ़ाने, पर्यावरणीय नियमों को बढ़ाने, उत्पाद की गुणवत्ता के लिए नई आवश्यकताओं, श्रृंखला प्रबंधन, खाद्य सुरक्षा, स्थिरता, आदि के लिए तेजी से अनुकूलित करना पड़ता है। इन परिवर्तनों के कारण ही कृषि और सम्बंधित क्षेत्रों में नए प्रवेशकों, नवाचार और पोर्टफोलियो उद्यमशीलता के लिए नया रास्ता बनाया है।

एग्रीप्रिन्योरशिप को क्यों बढ़ावा देना होगा?

एग्रीप्रिन्योरशिप के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास और कृषि उद्यमिता के विकास में विभिन्न भूमिका निभाता है, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आय के स्तर और रोजगार के अवसरों को बढ़ाता है। एग्रीप्रिन्योरशिप को बढ़ावा देने के लिये निम्नलिखित भारतीय संदर्भ में लाभ दायक हुए हैं-

- एग्रीप्रेन्योरशिप प्राथमिक कृषि के लिए महत्त्व बढ़ाता है और कृषि आय में भी वृद्धि उत्पन्न करता है।
- एग्रीप्रेन्योरशिप ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के लिए नौकरी के अवसरों को भी बढ़ाते है।
- बढती हुई एग्रीप्रेन्योरशिप गतिविधि से ग्रामीण बुनियादी ढांचे में सुधार किया जा सकता है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कृषि-भिन्न व्यावसायिक गतिविधियों के विकास एवं उन्नति के लिये भी प्रोत्साहित कर सकता है।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

हमारे देश के युवा हमारे राष्ट्र का भविष्य हैं और जनसंख्या के सबसे गतिशील खंड का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत जैसे राष्ट्र के विकास में युवाओं और उनके कार्यों का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे देश का प्रत्येक नागरिक हमारे देश की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि युवा कार्यस्थल से बाहर हैं, तो यह देश की अर्थव्यवस्था में नकारात्मक प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है।

25 वर्ष से कम आयु के युवा पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे और पृथ्वी के ऊपर सबसे शक्तिशाली संसाधन हैं। हमें उन्हें मूल्य-आधारित शिक्षा और नेतृत्व के माध्यम से सशक्त करना होगा

- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की दो तिहाई आबादी कृषि पर निर्भर है। युवा देश की रीढ़ हैं, युवाओं में नए नवाचार और कृषि से जुड़ी नई प्रथाओं को समझने की क्षमता होती है। दुनिया भर में लाखों युवाओं के लिए, एक अच्छी नौकरी ढूंढना अभी भी एक कठिन संघर्ष है। वैश्विक युवा श्रम शक्ति का लगभग आधा हिस्सा अभी भी बेरोजगार है या गरीबी में रहकर काम कर रहा है। इसके अलावा, वैश्विक युवा में बेरोजगारी की दर बढ़ रही है और इसलिए उन्हें व्यावसायिक संगठनों द्वारा रोजगार सृजन की आवश्यकता है।

भारत एक युवा देश है: वैश्विक जनसंख्या 2050 तक बढ़कर 9 बिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है, जिसमें युवाओं (15-24 वर्ष की आयु) का कुल 14 प्रतिशत हिस्सा है। भारत में ग्रामीण जनसंख्या, 68 प्रतिशत (90.22 करोड़) है, कुल युवा जनसंख्या 28 प्रतिशत (35.6 करोड़) है, जिनकी आयु 10-24 वर्ष के बीच है। भारत विश्व में भविष्य के युवा राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। इसके अलावा, देश हर साल दो मिलियन युवाओं को बेरोजगारों की श्रेणी में भी शामिल कर रहा है। इसलिए यह सामाजिक अशांति और अव्यवस्था सहित जबरदस्त लागत की संभावना प्रकट करता है।

जब तक खेती बौद्धिक रूप से उत्तेजक और आर्थिक रूप से पुरस्कृत दोनों नहीं हो जाती, तब तक ग्रामीण युवाओं को खेती में आकर्षित करना या बनाए रखना मुश्किल होगा

– डॉ. एम एस स्वामीनाथन

भारत में कृषि व्यवसाय के अवसर

भारत एक विकासशील देश है, इसलिए यहाँ कृषि क्षेत्रो में व्यापार करने के अवसर बहुत अधिक हैं। जैसे कि, फ्रूट पल्प, फ्रोजन फ्रूट्स, एवं सब्जियां, अचार वाले उत्पाद, मिश्रित उत्पाद, खाद्यान्न, मशरूम, औषधीय और सुगंधित पौधे इत्यादि। अग्रिम पृष्ठों में इन पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है:

वर्मीकम्पोस्ट-जैविक उर्वरक उत्पादन: केंचुआ खाद या वर्मीकम्पोस्ट (Vermicompost) पोषण पदार्थों से भरपूर एक उत्तम जैव उर्वरक है। यह केंचुआ आदि कीड़ों के द्वारा वनस्पतियों एवं भोजन के कचरे आदि को विघटित करके बनाया जाता है। वर्मी कम्पोस्ट डेढ़ से दो माह के अंदर तैयार हो जाता है। इसमें 2.5 से 37 नाइट्रोजन, 1.5 से 27 सल्फर तथा 1.5 से 2% पोटाश पाया जाता है। यह बहुत कम समय में देश भर में कृषि-व्यवसाय मॉडल का एक प्रमुख घटक बन गया है। एक उद्यमी इस व्यवसाय को उत्पादन प्रक्रिया की उचित जानकारी के साथ शूरू कर सकता है।

सूखे फूल का व्यवसाय: आजकल सूखे फूलों के व्यापार में काफी लाभ है। भारत में यह बिजनेस शुरू हुए 40 साल हो चुके है। बहुत से लोगों ने इसे अपने रोजगार के रूप में अपना लिया है। सभी भारतीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सूखे फूलों की बहुत मांग है। भारत में सूखे फूलों का व्यापार 100 करोड़ रुपए तक पहुँच गया है। 20 देशों को 500 से अधिक किस्मो के सूखे फूल निर्यात किया जाता है। सूखे फूलों का व्यवसाय कृषि में सबसे तेजी से बढ़ने वाली फसलों में से एक है।

उर्वरक वितरण व्यवसाय: जहाँ तक उर्वरक स्टोर (Fertilizer store) या वितरण के बिजनेस की बात है यह किसानों से जुड़ा हुआ बिजनेस है। इसलिए जो बड़े स्टोर या बड़े वितरक होते हैं वे एक राज्य से दुसरे राज्य को उर्वरक सप्लाई करते हैं और माध्यम वितरक राज्यों से जिलों एवं छोटे वितरक जिलों के अन्दर उर्वरक वितरण करने का कार्य करते हैं। भारत में उर्वरक वितरण व्यवसाय अत्यधिक कृषि व्यवसाय के विचार हैं जो कि मध्यम पूंजी निवेश से शुरू हो सकते हैं। और एक उद्यमी के लिये यह भी एक अच्छा व्यापार का साधन हो सकता है।

जैविक खेती (Organic Farming): जैविक खेती से मिट्टी की जैविक संरचना के संरक्षण के रूप में बहुत महत्वपूर्ण लाभ मिलते हैं। जैविक किसान ऐसी प्रथाओं का उपयोग करते हैं, जो कृषि प्रजनन क्षमता, मिट्टी की संरचना और जैव विविधता को बनाए रखती हैं जिससे विषाक्त पदार्थ मानव, पशु और पर्यावरण

जोखिम को कम करते है। एक ऑर्गेनिक फार्मिंग व्यवसाय के बढ़ने और सफल होने की उच्च संभावना है क्योंकि लगातार कृषि उत्पादों के उत्पादन की माँग काफी बढ़ गई है, जिससे ज्यादातर लोग जैविक खेती के लिए जमीन में निवेश कर रहे हैं।

मुर्गी पालन: भारत में मुर्गी पालन तीन दशक से एक तकनीकी-व्यावसायिक उद्योग में बदल गई है। अगर आपके पास औरों से अलग सोचने की क्षमता है, तो आप मुर्गीपालन व्यवसाय से भी करोड़ों का मुनाफा कमा सकते हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे बहुत कम लागत से शुरू करके लाखों- करोड़ों रुपये का लाभ कमा सकते हैं। सुगुना पोल्ट्री के बी सौदारराजन और जीबी सुंदरराजन का उदाहरण सबके सामने है। इन्होंने मुर्गीपालन व्यवसाय के बहुत छोटे स्तर से अपनी शुरुआत की और देखते ही देखते उनका यह मुर्गीपालन व्यवसाय 4200 करोड़ की कंपनी में बदल गया है। और तो और इस कंपनी ने 18 हजार किसानों को भी आय का बेहतर अवसर प्रदान किया। इसलिए यह व्यवसाय तेजी से बढ़ता क्षेत्र है।

मशरूम की खेती: मशरूम की खेती भी एक बहुत ही अच्छा कृषि व्यवसाय विचार (Agriculture business ideas) है, क्योंकि इसे बहुत ही कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है और बहुत ही कम समय में अच्छा पैसा कमाया जा सकता हैं। अगर आप ने कभी कही मशरूम की खेती के लिए काम किया है तो आप अपना खुद का मशरूम खेती व्यवसाय शुरू कर सकते है क्योंकि इसमें थोड़ा तकनीकी ज्ञान आवश्यक है, अगर आप को इस क्षेत्र में कोई ज्ञान नहीं है तो आप को पहले तकनीकी ट्रेनिंग की आवश्यकता होगी जो की हर स्टेट में वह की राज्य सरकार मुहैया करवाती है। हर डिस्ट्रिक्ट के कृषि कार्यालय पर कृषि अधिकारियो द्वारा इस प्रकार की ट्रेनिंग मुफ्त में दी जाती है।

हाइड्रोपॉनिक रिटेल स्टोर: हाइड्रोपोनिक कृषि यंत्र वितरक एक बहुत ही अच्छा तथा लाभदायक कृषि व्यवसाय विचार (Agriculture business ideas) है, क्योंकि इसमें असीमित लाभ हो सकता है। इसके लिए भी आप को तकनीकी जानकारी की जरुरत पड़ती है। क्योंकि इस तरह की कृषि में मिट्टी की जरुरत नहीं होती है, सीधे पाइप्स में पानी तथा खनिज लवण के घोल से पोधो को दिया जाता है इसमें कम पानी

में 100 गुना ज्यादा फसल ली जाती है इसमें जगह की भी ज्यादा जरुरत नहीं पड़ती है ऐसे किसी इमारत के अंदर भी किया जा सकता है।

घोंघा खेती: घोंघे की खेती का व्यवसाय अवसर आधुनिक तकनीक में अनुशासन और विशिष्ट ज्ञान की मांग करता है। घोंघा खेती विशेष रूप से मानव उपभोग के लिए किया जाता है। इसमें प्रोटीन, आयरन, कम वसा और मानव शरीर के लिए आवश्यक लगभग सभी अमीनो एसिड की उच्च दर होती है। एक उद्यमी के लिये यह भी एक अच्छा व्यापार का साधन हो सकता है।

ग्वार गम मैन्युफैक्चरिंग: ग्वार गम जिसे स्थानीय रूप से गुआरन कहा जाता है, यह एक गैलेक्टोमैनन है। यह मूल रूप से ग्वार फलियों का ग्राउंड एंडोस्पर्म है। ग्वार गम को प्राप्त करने के लिए ग्वार के बीजों को छलनी, मसल कर जाँच की जाती है। यह आमतौर पर एक मुक्त प्रवाहशील, ऑफ व्हाइट पाउडर के रूप में उत्पादित होता है। यह एक प्राकृतिक खाद्य पदार्थ है, जो टिड्डे बीन गम, कॉर्नस्टार्च या टैपिओका के आटे के समान है।

मधुमक्खी पालन: मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अगर आप व्यवसाय शुरू करना चाहते हो तो आप की सोच बिलकुल सही है। शहद एक बहुत ही अच्छी औषधि है जिसे विभिन्न दवाइयों तथा आयुर्वेद जड़ी बूटियों के साथ कास्मेटिक प्रोडक्ट्स में उपयोग में लिया जाता है। जिससे इसकी मांग हमेशा विश्व स्तर पर बनी रहती है इस व्यवसाय के लिए आप को कुछ उपकरण की जरुरत पड़ती है, जिस पर सरकार सब्सिडी भी प्रदान करती है, जिससे आप अपने व्यवसाय को बढा सके।

मछली पालन: व्यावसायिक मछली पालन एक आकर्षक निवेश है, जो कि साल के किसी भी समय लगातार पैसा कमा सकता है। आधुनिक तकनीकों के कार्यान्वयन और स्वामित्व वाली जगह होने के साथ, एक उद्यमी मध्यम पूंजी निवेश के साथ इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है।

फल और सब्जियों का निर्यात: एक उद्यमी स्थानीय किसानों से एकत्रित करके ताजे फल और सब्जियों का निर्यात कारोबार शुरू कर सकता है। कोई भी इंटरनेट कनेक्शन के साथ फोन और कंप्यूटर रखने वाले घर से ही इस व्यवसाय को शुरू कर सकते है।

माइक्रोन्यूट्रिएंट मैन्युफैक्चरिंग: फोलियर और मृदा एप्लीकेशन में माइक्रोन्यूट्रिएंट का कृषि व्यवसाय में बहुत महत्वपूर्ण योगदान हैं। एक मजबूत वितरण रणनीति के साथ, कोई भी पर्याप्त पूंजी निवेश के साथ इसके निर्माण व्यवसाय को शुरू कर सकता है।

पुष्प व्यापर: यह बहुत ही लाभदायक कृषि व्यवसाय विचारों में से एक है। फूलों के उत्पादकों के साथ स्थानीय जान पहचान और कनेक्शन होने से, कोई भी इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है। एक उद्यमी भी ग्राहकों को डोर-स्टेप डिलीवरी प्रदान करके पर्याप्त ऑनलाइन बिक्री उत्पन्न कर मुनाफा कमा सकता है।

पशुधन चारा उत्पादन: गाय, बैल, भैंस, बकरी, घोड़ा आदि पालतू पशुओं को खिलाये जाने योग्य सभी चीजें चारा या 'पशुचारा' या 'पशु आहार' कहलातीं हैं। इस व्यवसाय को एक छोटे पैमाने पर प्रारंभ कर, बढ़ते समय के साथ इसे बड़े पैमाने तक ले जाया जा सकता है। कोई भी इच्छुक उद्यमी इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है।

फ्रोजन चिकन उत्पादन: फ्रोजन चिकन एक महत्वपूर्ण उत्पाद है। इस उत्पाद की मांग विश्व स्तर पर बढती जा रही है। एक मेट्रो या उपनगरीय शहर में रहने वाला एक उद्यमी इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है।

वानस्पतिक कीटनाशक उत्पादन: वानस्पतिक कीटनाशक उत्पादन एक फ्यूचर व्यवसाय के रूप में देखा जा रहा है, जैसे-जैसे जैविक खेती का विस्तार होता जा रहा है वैसे वैसे वानस्पतिक कीटनाशक की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है।

वानस्पतिक कीटनाशक मुख्य रूप से अलग अलग पेड़ो की जड़ो पत्तो, छालो से बनते है जैसे की नीम के पत्तो तथा छालो को उबाल कर कीटनाशक बनाया जाता है।

टोकरी और झाड़ू उत्पादन: ग्रामीण कृषि परिदृश्य में टोकरी और झाड़ू बहुत आम उत्पाद हैं। एक उद्यमी ग्रामीण उत्पादकों से इन उत्पादों की सोर्सिंग करके इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है, और अलंकरण देने के बाद इसे रिटेल और ऑनलाइन दोनों माध्यमों से उपयोगिता या सजावट की वस्तु के रूप में बेचा जा सकता है। लाभदायक टोकरी-बुनाई व्यवसाय शुरू करने के लिए विचारशील योजना और डिजाइन के लिए एक उच्च स्तरीय रचनात्मक दिमाग की आवश्यकता होती है। कच्चे माल की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करके एक उद्यमी मध्यम पूंजी निवेश के साथ घर से ही अनुकूलित टोकरी-बुनाई व्यवसाय शुरू कर सकता है। ब्रूम उत्पादन तकनीकी प्रक्रिया सरल है, और परियोजना को उचित योजना और मध्यम पूंजी निवेश के साथ शुरू किया जा सकता है।

आटा पिसाई और पैकिंग यूनिट: शहरो के ज्यादा तर लोग बंद पैकेट का आटा खाते है जो पुराने समय से ही पैकिंग आटे की खपत बहुत अच्छी है तो ये भी एक बहुत बढ़िया कृषि व्यवसाय विचार (Agriculture business ideas) है, क्योंकि किसानों के पास गेंहू तो रहता ही है, और उसके अलावा एक अच्छी क़्वालिटी की गेंहू, चना इत्यादि पीसने वाली मशीन और पैकिंग मटेरियल की आवश्यकता होगी। एक उद्यमी एक उचित व्यवसाय योजना के साथ इस व्यवसाय को शुरू कर सकता है। अपने खुद के ब्रांड उत्पाद स्थापित कर इस व्यवसाय में अत्यधिक लाभ कमा सकता है।

जैम और जेली उत्पादन: जैम और जेली ऐसी खाने की चीज हैं, जो कि हर तरह के आयु के लोगों को पसंद आती हैं। हमारे देश में जैम और जेली के व्यापार की मांग भी काफी अच्छी है। जैम और जेली के व्यापार को कोई भी व्यक्ति

स्टार्ट कर सकता है। इस व्यापार को करने के लिए किसी विशेष तरह के ज्ञान की जरुरत नहीं होती है. इस बिजनेस को छोटे स्केल से भी शुरू किया जा सकता है, और धीरे-धीरे बड़े स्केल में तब्दील भी किया जा सकता है। इसके अलावा आप अपने घर से भी इस व्यापार को कर सकते हैं। फ्रूट जूस, जैम, जेली प्रोडक्शन बिजनेस में बाजार का बहुत बड़ा अवसर है।

मूंगफली प्रसंस्करण: कच्चे माल के स्रोत नट पर विश्वास होने से उद्यमी इस व्यवसाय को मध्यम पूंजी निवेश के साथ शुरू कर सकते है। प्रोसेस्ड मूंगफली की विश्व स्तर पर बहुत अच्छे बाजार की संभावनाएं हैं।

काजू-प्रसंस्करण: प्रसंस्कृत काजू एक उपभोक्ता टिकाऊ उत्पाद है, और इसकी बाजार में बहुत बड़ी संभावनाएं हैं। एक उद्यमी इस उद्यम को अर्ध-स्वचालित छोटे पैमाने पर शुरू कर सकता है।

बटेर अंडे की खेती: वाणिज्यिक बटेर खेती लाभदायक अंडे और मांस उत्पादन के उद्देश्य से व्यावसायिक रूप से बटेरों को बढ़ाने के बारे में है। एक बटेर छह-सात सप्ताह में अंडे देने शुरू कर देता है। वर्ष भर में बटेर का पांच से छह बार पालन कर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। बटेर के अंडे का वजन उसके वजन का आठ प्रतिशत होता है, जबकि मुर्गी का तीन प्रतिशत ही होता है। बटेर में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होने के कारण इसमें बीमारियों का प्रकोप न के बराबर होता है। वैश्विक रूप से बटेर की खेती दैनिक परिवार के पोषण की मांगों को पूरा करने और अच्छे पैसे कमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

झींगा की खेती: वर्तमान में देश में झींगा पालन एक बहुत तेजी से बढ़ने वाले व्यवसाय के रूप में उभरा रहा है। पिछले दो दशकों में मत्स्य पालन के साथ-साथ झींगा पालन व्यवसाय प्रतिवर्ष 6 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। आज घरेलू बाजार के साथ विदेशी बाजार में झींगा की काफी मांग बढ़ रही है। हमारे देश में झींगा निर्यात की भरपूर संभावनाएं मौजूद हैं।

फिश हैचरी: विभिन्न क्षमताओं में और विभिन्न कारणों से मछली पकड़ना और बढ़ाना, तेजी से लोकप्रियता में बढ़ रहा है। हैचरी की बढ़ती संख्या का एक कारण बारीक खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग है। फिश हैचरी विशेष रूप जलीय कृषि उद्योग का समर्थन करने के लिए लार्वा और किशोर मछली का उत्पादन करते हैं जहाँ उन्हें ऑन-ग्रोइंग सिस्टम में स्थानांतरित किया जाता है। यह भी एक उचित व्यवसाय का साधन हो सकता है।

सूअर पालन: सूअर पालन कम कीमत में कम समय में अधिक आय देने वाला व्यवसाय साबित हो सकता हैं। जो युवक पशु पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहते हैं। सूअर एक ऐसा पशु है, जिसे पालना आय की दृष्टि से बहुत लाभदायक हैं, क्योंकि सूअर को मांस प्राप्त करने के लिए ही पाला जाता हैं। इस पशु को पालने का लाभ यह है कि एक तो सूअर एक ही बार में 5 से 14 बच्चे देने की क्षमता वाला एकमात्र पशु है, जिनसे मांस तो अधिक प्राप्त होता ही है और दूसरा इस पशु में अन्य पशुओं की तुलना में साधारण आहार को मांस में परिवर्तित करने की अत्यधिक क्षमता होती है, जिस कारण रोजगार की दृष्टि से यह पशु लाभदायक सिद्ध होता है ।

सोयाबीन प्रसंस्करण: दूध, सोया आटा, सोया सॉस, सोयाबीन तेल, नाटो आदि का उत्पादन करने के लिए व्यावसायिक रूप से सोयाबीन प्रसंस्करण मध्यम पूंजी निवेश के साथ शुरू करने के लिए एक बहुत ही लाभदायक कृषि व्यवसाय विचार है। उचित विपणन रणनीति के साथ, एक उद्यमी इस व्यवसाय को छोटे स्तर पर भी शुरू कर सकता है।

मसाला प्रसंस्करण: वैश्विक मांग बढ़ने से हाल ही में मसाला प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा मिला है। अच्छी गुणवत्ता वाली प्रोसेस्ड मसाले की बहुत अच्छी मांग है। प्रसंस्करण और पैकेजिंग के तरीके बहुत जटिल नही हैं। मसाला प्रसंस्करण व्यवसाय में मार्जिन भी बहुत संतोषजनक है।

चिक्स (चूज़ा) हैचरी: चिक्स हैचरी का व्यवसाय स्थानीय अंडा और मुर्गी पालन करने वाले किसानों को व्यावसायिक रूप से चूजों को बेचकर पैसा कमाने का है। यह एक छोटी पूंजी के साथ शुरू करने के लिए एक अत्यधिक लाभदायक व्यवसाय है और इस व्यवसाय में किसी विशेष ज्ञान की आवश्यकता भी नहीं होती है।

किराना ई-शॉपिंग पोर्टल: किराना ई-शॉपिंग पोर्टल हाल की घटनाओं में सबसे अधिक चलन वाला व्यवसाय है। यह तकनीक आधारित व्यापार अवसर उचित नियोजन और मजबूत ऑनलाइन विपणन रणनीति की मांग करता है।

औषधीय जड़ी बूटियों की खेती: बढ़ती औषधीय जड़ी-बूटियाँ व्यावसायिक रूप से लाभदायक कृषि व्यवसाय विचारों में से एक हैं। जड़ी बूटियों के विपणन के बारे में पर्याप्त भूमि और ज्ञान होने के बाद, एक उद्यमी मध्यम पूंजी निवेश के साथ औषधीय जड़ी-बूटियों की खेती शुरू कर सकता है।

कैक्टस व्यवस्था: कैक्टस संयंत्र सजावट आइटम के रूप में सबसे अनुकूल आइटम है, और यह टेबलटॉप उद्यानों के लिए आदर्श है। कैक्टस व्यवस्था बनाना और बेचना एक बहुत ही लाभदायक और स्व-पुरस्कृत व्यवसाय शुरू करना है। यह कम स्टार्टअप पूंजी के साथ घर के स्थान से आरंभ कर सकता है।

दुग्ध डेयरी (Milk Dairy): दूध उत्पादन बहुत पुराने समय से और बहुत ही लाभ देने वाला व्यवसाय है। ये दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि दूध एक ऐसी चीज है जिसका हर घर में जरूरत होती है। इसलिए इसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है और अमूल, साँची जैसी बड़ी-बड़ी डेरी फर्मो ने तो आप के घर-घर, गांव-गांव से दूध इकठ्ठा करना शुरू कर दिया है। साथ ही सरकार भी पशु खरीद तथा पालन के लिए सब्सिडी ब्याज दर पर लोन मुहैया करवाती है।

बकरी पालन: भारत में बकरियाँ मुख्य मांस उत्पादक जानवरों (चुनिंदा मांसों) में से एक हैं। अपनी अच्छी आर्थिक संभावनाओं के कारण, वाणिज्यिक उत्पादन के लिए एक गहन और अर्ध-गहन प्रणाली के तहत बकरी पालन पिछले कुछ वर्षों से गति पकड़ रहा है।

जटरोफा उत्पादन: जैव-डीजल के लिए वाणिज्यिक उत्पादन सबसे अधिक चलन वाले कृषि व्यवसाय विचारों में से एक है। आधुनिक तकनीक की खोज से सीमांत किसान और काश्तकार जैव डीजल के कच्चे माल के रूप में जटरोफा का उत्पादन कर सकते हैं। बायोडीजल के भौतिक और रासायनिक गुण पेट्रोलियम ईंधनों से जरा अलग हैं। यह एक प्राकृतिक तेल है, जो परंपरागत वाहनों से इंजन को चलाने में पूर्णतः सक्षम है। इसके प्रयोग से निकलने वाला उत्सर्जन कोई प्रभाव नहीं छोड़ता क्योंकि इसमें धुंआं व गंध न के बराबर है। बायोडीजल पेट्रोल की अपेक्षा जहरीले हाइड्रोकार्बन, कार्बन-मोनोक्साइड, सल्फर इत्यादि से वायु को दूषित नहीं करता है। बायोडीजल स्वास्थ्य और पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित ईंधन है।

आलू पाउडर: आलू के पाउडर में प्रसंस्कृत और नमकीन खाद्य उद्योगों में व्यापक अनुप्रयोग है, इसका उपयोग किसी भी नुस्खा में किया जा सकता है, जिसमें आलू की आवश्यकता होती है। आलू के पाउडर का उपयोग सब्जी या ग्रेवी और सूप खाने के लिए तैयार किए जाने वाले बेसन के रूप में किया जाता है। प्रसंस्करण विधि भी बहुत जटिल नहीं है। आलू पाउडर प्रसंस्करण व्यवसाय को अर्ध-स्वचालित छोटे पैमाने पर शुरू किया जा सकता है।

प्रमाणित बीज उत्पादन: बीज प्रमाणीकरण एक गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली है, जिसके तहत विपणन के लिए बीज आधिकारिक नियंत्रण और निरीक्षण के अधीन है। बीजों की गुणवत्ता को वॉछित स्तर पर सुनिश्चित करने के लिए बीज प्रमाणीकरण का प्राविधान है। जनक बीजों का प्रमाणीकरण गठित समिति द्वारा किया जाता है, जबकि आधारीय एवं प्रमाणिता बीजों का प्रमाणीकरण का उत्तरदायित्व प्रदेश की बीज प्रमाणीकरण संस्था का है। प्रमाणीकरण की प्रक्रिया निम्न चरण में पूर्ण की जाती है- बीज का सत्यापन, फसल निरीक्षण, प्रयोगशाला परीक्षण और टैगिंग। इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए, आपके पास जमीन की कोई आवश्यकता

- आंध्र आंध्र प्रदेश राज्य बीज विकास निगम लिमिटेड
- कलश सीड्स प्राइवेट लिमिटेड
- कावेरी बीज कंपनी लिमिटेड
- कृषकभारती को ऑपरेटिव लिमिटेड (KRIBHCO)
- कृशिधन सीड्स प्राइवेट लिमिटेड
- महाराष्ट्र हाइब्रिड सीड्स कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (महिको)
- नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड
- नुजिवेदु सीड्स लिमिटेड
- देश राज्य बीज विकास निगम

नहीं है, बस सुनिश्चित ज्ञान की आवश्यकता है।

मृदा परीक्षण लैब: मिट्टी जाँच प्रयोगशाला से हमारा अभिप्राय मिट्टी की जाँच के लिए बनायीं गई प्रयोगशाला के व्यापर से है। वर्तमान में हम ग्रामीण इलाकों जहाँ कृषि की जाती है देखेंगे तो हमें इस प्रकार की प्रयोगशालाओं का अभाव दिखाई देता है, इसलिए जहाँ-जहाँ भी कृषि की जाती है या कृषि की संभावनाएं हैं इस प्रकार की प्रयोगशालाएं आसानी से चल सकती हैं। यद्यपि इस प्रकार की सर्विसेज सरकारी विभागों द्वारा दी जाती हैं लेकिन किसानो की मांगों को देखते हुए वे पर्याप्त नहीं है। अब तकनीकी जानकारी के आधार पर खेती करने से अच्छे परिणाम मिलने के कारण लोगों का ध्यान फिर से कृषि की ओर आकर्षित हो रहा है। सरकारी प्रमाणन के साथ मृदा परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित करना आदर्श कृषि व्यवसाय विचारों में से एक है।

ग्रीनहाउस और नर्सरी फार्मिंग: ग्रीनहाउस और नर्सरी सोने की खानें हैं, जो सबसे अधिक लाभदायक व्यावसायिक अवसर प्रदान करती हैं। ग्रीनहाउस और नर्सरी का उपयोग मुख्य रूप से मौसमी, गैर-मौसमी फसलों, उच्च गुणवत्ता वाले फूलों इत्यादि के उत्पादन के लिए होता है।

राइस मिल (Rice Mill): चावल हमारे देश में मौजूद अधिकांश जनसंख्या का महत्वपूर्ण भोजन है। भारत में मौजूद लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या पैकेट के चावल का उपयोग रोजाना करती है। इसके अलावा भारत ही वह देश है, जहाँ बासमती चावल का उत्पादन और निर्यात सर्वाधिक मात्रा में होता है। सऊदी अरब, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, इराक और कुवैत ऐसे देश है, जहाँ भारत से चावल निर्यात किया जाता है। इसलिए राइस मिल देश में सर्वाधिक कृषि प्रसंस्करण उद्योगों में से एक है।

नारियल उत्पाद: दुनिया में सबसे ज्यादा नारियल का उत्पादन भारत में होता है। देश भर में नारियल की खेती बहुत मशहूर है, क्योकि, यह बहुत से सह उत्पाद देता है: खोपड़ा (सूखी गिरी), नारियल तेल, सुखाया नारियल चूर्ण (डेसिक्केटिड नारियल), नारियल क्रीम एवं दूध, नेटा-डी-कोको, नारियल ताड़ी एवं गुड़, नारियल रेशा (कोयर), सक्रियित कार्बन, नारियल खोपड़ी चूर्ण एवं कोयला, नारियल पेड़ के विविध भागों से निर्मित हस्तशिल्प आदि मुख्य एवं

सह-उत्पाद हैं, जिन पर आधारित उद्योग एवं कुटीर धंधों को अपनाकर कृषक परिवार के सदस्य, बेरोजगार युवक एवं कारीगर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उपरोक्त उत्पादों के अलावा नारियल का कच्चा फल डाब' दक्षिणी राज्यों के अतिरिक्त उड़ीसा, पश्चिम बंगाल एवं असम में भी नारियल कृषकों को अधिकाधिक आमदनी उपलब्ध करने का अच्छा स्रोत है।

कृषि ब्रोकरेज और परामर्श: कोई भी कृषि उपज के विक्रेताओं को खरीदारों के साथ जोड़कर कृषि दलाली में व्यवसाय शुरू कर सकता है, और इसके लिए कमीशन प्राप्त कर सकता है। अन्य परामर्श सेवाओं के साथ, आने वाले दिनों के साथ कृषि परामर्श आवश्यकता बढ़ने की उम्मीद है। खेती गतिविधि के एक निर्दिष्ट क्षेत्र में अनुभव और ज्ञान वाले लोग प्रशिक्षण और सेमिनार आयोजित करने के लिए संगठनों और किसानों को परामर्श सेवाएं देने पर भी विचार कर सकते हैं।

कृषि विकास के लिए चुनौतियाँ

देश में एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट की बहुत अधिक संभावनाएं और संभावनाएं होने के बावजूद कृषि उद्यमिता विकास की प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, जिन्हें बहुत गंभीरता से और समय पर ध्यान रखने की आवश्यकता है: वे चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

- **अपर्याप्त ढांचागत सुविधाएं:** किसी भी तरह के विकास के लिए, बुनियादी ढांचा एक पूर्व आवश्यकता है। ग्रामीण भारत में, ढांचागत सुविधाएं बहुत खराब हैं और विशेष रूप से परिवहन, संचार, बिजली और विपणन नेटवर्क जैसी सुविधाओं के संबंध में अपर्याप्त हैं।

- **लोगों में उद्यमी संस्कृति का अभाव:** भारत में, कई क्षेत्रों में बहुत खराब उद्यमी संस्कृति की पहचान की गई है। शिक्षा और जागरूकता की कमी से ग्रामीण लोगों में उद्यमशीलता की संस्कृति का विकास हो रहा है।

- **ग्रामीण क्षेत्र से शहरी तक कुशल और प्रतिभाशाली कार्यबल का प्रवासन:** लोग ग्रामीण क्षेत्रों से बहुत कम बुनियादी सुविधाओं और सुविधाओं के कारण ग्रामीण क्षेत्र में शहरी क्षेत्र में पलायन हो रहा है। यह पलायन ग्रामीण प्रतिभाओं में एक अंतर पैदा कर रहा है। इसका कारण उनकी प्रतिभा का उपयोग करने के लिए रोजगार, कौशल, विशेषज्ञता और प्लेटफार्मों की कमी है। यहाँ तक कि कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में कुशल, शिक्षित और प्रशिक्षित शहरी क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की तलाश है। इसके अलावा, ग्रामीण युवा बेहतर जीवन शैली के लिए शहरी जीवनशैली की ओर अग्रसर हैं।

- **खराब प्रौद्योगिकियाँ और उपकरण:** सूचना लोगों को स्थिति का विश्लेषण करने वाले अवसरों का पता लगाने और उचित समय पर उचित निर्णय लेने में मदद करती है। सूचना का अभाव कृषि विकास के विकास में एक बड़ा अंतर है। कृषि उपकरण और कृषि उद्यम पर सूचना प्रौद्योगिकी की कमी और कृषि उद्यमशीलता के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह खराब तकनीकी सुविधाओं और उपकरण के कारण होता है, जो कृषि विकास के लिए सूचना समर्थन के लिए चुनौती पैदा करता है जो इस क्षेत्र के सुचारु विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

- **कृषि उत्पादों के विपणन में समस्याएं:** उत्पादन का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक उसे बेचा और उपभोग नहीं किया जाता है। उचित परिवहन, भंडारण सुविधाओं की कमी, कृषि-उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए सुविधा की कमी, बाजार की जानकारी की कमी, कृषि उत्पादों के लिए अस्थिर कीमतें, असमान मांग, स्थानीय मध्यस्थों का प्रभाव और कई अन्य प्रक्रिया में किसानों के लिए बहुत परेशानी पैदा कर रहे हैं।

- **अपर्याप्त संस्थागत उपाय और सरकारी नीतियाँ:** अशिक्षा और अज्ञानता के कारण, ग्रामीण लोग सरकार की नीतियों की जानकारी प्राप्त करने और लाभ प्राप्त करने में असमर्थ हैं। गंभीर रूप से कहा जाए, तो कृषि क्षेत्र में सरकार का समर्थन उद्योग और सेवा क्षेत्रों के विकास को दिए गए समर्थन से बहुत कम है।

एग्रीप्रिन्योरशिप से अपेक्षित परिणाम

- **सामाजिक और आर्थिक लाभ:** सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण के साथ कृषि के जीवन स्तर को बढ़ाया जाता है। उन्हें सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा से पहचाना जाता है। वे अपने परिवारों को पौष्टिक भोजन, बेहतर शिक्षा और चिकित्सा सुविधाओं की गुणवत्ता प्रदान कर सकते हैं। यह संसाधनों का निर्माण करने और समग्र रूप से सामुदायिक विकास के लिए स्थानीय संसाधनों को जुटाने के लिए एक आशाजनक क्षेत्र है।

- **शुद्ध आय:** मूल्य श्रृंखला और कृषि प्रसंस्करण की प्रक्रिया उत्पादन के बाद विपणन की पारंपरिक विधि की तुलना में कई बार शुद्ध आय को प्रकट करती है।

- **स्थिरता:** कृषि-लाभकारी कृषि पद्धतियों के चक्र के माध्यम से कृषि के सतत तरीकों को सीखना और उन्हें लागू करना जारी रखना, कृषि व्यवसाय से जुड़े जोखिमों को दूर करना। वे हमेशा अपने उद्यमों के अधिक सतत विकास के लिए तलाश करते हैं। रोजगार सृजन: कृषि विकास का सबसे अधिक लाभ ग्रामीण

युवाओं और किसानों के लिए रोजगार के बड़े अवसर हैं। इसलिए यह ग्रामीण आय को बढ़ाने और ग्रामीण लोगों के अस्तर मानक में सुधार करने में मदद करता है।

- **ग्रामीण लोगों के शहरी केंद्रों में प्रवास की दर कम करना:** एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट से ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत सारे रोजगार पैदा होते हैं, इस प्रकार यह लोगों को गांवों में ही अपनी मानक आजीविका प्रदान करता है। इससे ग्रामीण लोगों विशेष कर ग्रामीण युवाओं के गांवों से शहरी केंद्रों में प्रवास की दर में कमी आती है, जिसके परिणाम स्वरूप शहरी बुनियादी ढाँचे पर जनसंख्या का दबाव कम होता है।

- **ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं प्रदान करना:** कृषि-संबंधी उद्यमी अकेले नहीं बढ़ेंगे, लेकिन सहायक संसाधन बुनियादी ढाँचे का विकास होगा। जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय निवासियों के लिए सेटअप और सुविधाओं की तरह शहरीकरण पैदा करेगा। उपरोक्त प्रभाव के अलावा एग्रीप्रेन्योरशिप भी बेरोजगारी को कम करने में मदद करती है और बेरोजगारी इस प्रकार गरीबी को कम करने में मदद करती है। एग्रीप्रेन्योरशिप कुशल और प्रतिभाशाली ग्रामीण युवाओं के प्रवासन और ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में कार्यबल की जाँच करने में मदद करता है, और इस प्रकार प्रमुख शहरी केंद्र पर जनसंख्या के दबाव को कम करता है और गांवों के भीतर भी अवसर पैदा करता है।

सफल कृषि उद्यमी

कृषि अनुसंधान पिछले एक दशक में अधिक गतिशील और अभिनव तरीके से विकसित हुआ है। बदलते सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में, नई और मौजूदा प्रौद्योगिकियों का ऊष्मायन, जो वितरण पद्धति में काफी सुधार करता है, लागत को कम करता है और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और स्थायी उपयोग में मददगार साबित हुआ है। यह सराहनीय है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने कृषि स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान एवं विकास (R&D) के अपने नेटवर्क को संलग्न करने के लिए सही प्रयास किए हैं।

एग्री-स्टार्टअप्स (Agri-Startup):

मार्केट में आईसीएआर टेक्नोलॉजीज का प्रतिबिंब इन स्टार्टअप उद्यमियों की एक संक्षिप्त रूपरेखा है। यह संकलन भारत के स्टार्टअप पैनोरमा की एक झलक प्रदान करेगा और अधिक से अधिक युवाओं को कृषि में उद्यमशीलता को बढ़ावा देने और निर्माण करने की दिशा में स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया के इस राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा बनने के लिए भी प्रेरित करेगा।

सही/ गलत:

1. कृषि उद्यमशीलता कृषि परिवर्तन की कुंजी है। (सही/ गलत)
2. कृषि क्षेत्र का जीडीपी 1950 से 2011 से निरंतर बढ़ रहा है। (सही/ गलत)
3. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास और विकास में कृषि प्रणाली विभिन्न भूमिका निभाती है। (सही/ गलत)
4. युवा पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली संसाधन हैं। (सही/ गलत)
5. भारत के पास कृषि क्षेत्रों में बहुत से व्यवसाय करने के अवसर हैं। (सही/ गलत)

उपसंहार

यह निष्कर्ष निकाला गया है, कि कृषि-आधारित उद्यमिता मिशन और कृषि-आधारित उद्यमिता शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। आर्गनाइज औद्योगीकरण से बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन संभव है। यह देखते हुए कि भारतीय आबादी का दो तिहाई हिस्सा (या तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से) कृषि क्षेत्र में कार्यरत है, भारतीय कृषि व्यवसाय में व्यवहार्य और टिकाऊ व्यवसाय के अवसर प्रदान करना देश में रोजगार पैदा करने के लिए जरूरी है। औद्योगीकरण से पठार प्राप्त करने के साथ, कृषि उपज में मूल्यवर्धन के अवसर न केवल रोजगार के मुद्दों को हल करने की क्षमता रखते हैं, बल्कि निहित शक्तियों के साथ विकास की आवश्यकता को संतुलित करके देश के विकास के एजेंडा को अधिक टिकाऊ तरीके से आगे बढ़ाते हैं। यह माना जाता है कि कृषि विकास, अर्थव्यवस्था को पहचान की ताकत का लाभ उठाने और प्राथमिक क्षेत्र में जबरदस्त विकास हासिल करने और ग्रामीण विकास में योगदान करने में सहायता प्रदान करेगा। यह अर्थव्यवस्था को खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता तथा संतुलित आर्थिक विकास हासिल करने में भी मददगार साबित होगा।

कुछ चुनिंदा सफल एग्री-एंटरप्रेन्योर और उनके उपक्रम यहाँ प्रस्तुत हैं

कंपनी	प्रौद्योगिकी
कृषि इंजीनियरिंग मशीनें/ उपकरण	
नेक्सगेन ड्राइंग सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड	कस्टर्ड एप्पल फ्रूट्स और लीची फ्रूट पीलिंग मशीन से पल्प को बाहर निकालने के लिए स्वचालित मशीन
एनएम इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज	वर्जिन नारियल तेल के उत्पादन के लिए मशीन
पदमटेक इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड	सिफेत पोमेग्रेनेट एरिल चिमटा
सिकल इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड	कॉटन पिकिंग मशीनें
जैव कीटनाशक और फसल पोषण	
एस और एन व्यापारी	माइक्रोन्यूट्रिएंट फॉर्म्युलेशन
अग पल्स प्राइवेट लिमिटेड	आयुर्वेदिक कीटनाशक
एग्री लाइफ बायोटेक	बायोकंट्रोल एजेंट-ट्राइकोडर्मा हर्ज़ियानम
कोडागू एग्रीटेक इको	माइक्रोबियल यौगिक
हाय सेवेन एग्री बायो सॉल्यूशंस	माइक्रोन्यूट्रिएंट फॉर्म्युलेशन
मछली उत्पाद और प्रक्रियाएं	
ऑरा बायोटेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड	एडवांस्ड व्हाइट स्पॉट सिंड्रोम वायरस डिटेक्शन टेक्नोलॉजी
बायो मेटा	एक्वाकल्चर डायग्नोस्टिक किट
ग्रो यील्ड टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड	झींगा तालाबों के लिये मॉनिटर और कंट्रोलर - समाधान पोर्टफोलियो में पानी का पीएच, अमोनिया सामग्री, ऑक्सीजन सामग्री और तापमान को ध्यान में रखते हुए एक्वाफर्म की निगरानी करना।
जस वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड	झींगा के लिये जैविक फ़ीड का विकास
ओदकू ऑनलाइन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड	कुशल मछली पकड़ने के लिए ब्लॉक चेन टेक्नोलॉजी

खाद्य उत्पाद और प्रक्रियाएं	
अगति हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड	कोलस्ट्रम पाउडर आधारित गोलियाँ
एग्रीक्सलैब प्राइवेट लिमिटेड	क्वालिटी असेसमेंट के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
एवीएस एग्रो लाइफ प्रोडक्ट्स	वर्जिन नारियल तेल और नारियल पाउडर/ चिप्स
अयेग्रो बिज़नेस सॉल्यूशंस	मूल्य वर्धित मांस उत्पाद प्रसंस्करण इकाई
बीज और रोपण सामग्री	
अनन्या बीज प्राइवेट लिमिटेड	सब्जियों/ फील्ड फसलों के उच्च गुणवत्ता वाले हाइब्रिड/ ओपी बीज का उत्पादन
अर्पन सीड्स प्राइवेट लिमिटेड	जीरो एरुसिक एसिड सरसों- 'पूसा मस्टर्ड 30' का उत्पादन
भवानी बायो केमिकलस	अर्का माइक्रोबियल कंसोर्टियम (ठोस और तरल संरचनाएं) की उत्पादन तकनीक
चेरिपाथु नर्सरी	जायफल की विविध प्रकार के सलेक्शन
गोविंदजी बायो लैब्स प्राइवेट लिमिटेड	प्लांट माइक्रोपॉपैगेशन मेथड्स से विभिन्न सजावटी पौधों का उत्पादन
वस्त्र उद्योग	
फुलिया महिला और युवा कल्याण सोसायटी	जूट आधारित सजावटी हैंडलूम फैब्रिक
ग्रीन ग्लोब	कपड़ा का जीवाणुरोधी उपचार
ग्रेय्य	कपड़ा के जीवाणुरोधी और विरोधी गंध उपचार
मिलटेक्स इकोफ्राइब्स प्राइवेट लिमिटेड	जूट आधारित सजावटी हैंडलूम फैब्रिक
आर बी एम इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड	जूट आधारित सजावटी हैंडलूम फैब्रिक

1

इंद्रधनुष क्रांति
के प्रकार
कौन-कौन से है?

2

एसडीजी (SDG)
का पूर्ण
रूप क्या है?

3

मधुमक्खी पालन
के व्यवसायी उत्पाद
क्या-क्या हैं

4

कृषि-स्टार्टअप को
बढ़ावा देने के लिए कौन सी
प्रयोगशाला है?

5

जैव-डीजल
के लिए किसका उत्पादन
सबसे
अधिक चलन में है।

कृषि उद्यमिता से ही कृषि विस्तार

प्रस्तावना

भारत में कृषि विकास मूल रूप से राज्य का विषय है। लेकिन, कृषि क्षेत्र अपनी बड़ी आबादी की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं केंद्र सरकार नीतियों को बनाने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिसका कृषि क्षेत्र के विकास पर सीधा असर पड़ता है। केंद्र सरकार मुख्य रूप से अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और क्षेत्र को बजटीय सहायता के माध्यम से रोड मैप तैयार करता है। राष्ट्रीय स्तर पर कल्पित कार्यक्रम मुख्य रूप से राज्यों द्वारा अपने विकास विभागों के माध्यम से कार्यान्वित किए जाते हैं। इसके अलावा, राज्य क्षेत्र विशिष्ट विकास कार्यक्रम भी तैयार करते हैं। इसी प्रकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वोच्च संस्थान है, जो प्रभावी प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण (टी.ओ.टी) मॉडल विकसित करने के लिए अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों का समर्थन करता है। राज्य कृषि विश्वविद्यालय आई.सी.ए.आर प्रणाली द्वारा विकसित मॉडलों को लागू करने, प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को लेने के लिए उपयुक्त विस्तार मॉडल विकसित करने के लिए कार्य करते हैं। केंद्र और राज्य सरकार के अलावा कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), गैर-सरकारी संगठन (NGO) और कई निजी उद्योग भी किसानों को विस्तार सेवाएं प्रदान करते हैं।

कृषि उद्यमिता विकास का महत्व

पहले भारत में विस्तार प्रणाली केवल फसल उत्पादन और किसान के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण पर केंद्रित थी। लेकिन अब देश में विस्तार प्रणाली निम्नलिखित नए दृष्टिकोण के साथ बदल गई हैं:

1. कृषि को उद्यम के रूप में और किसान को उद्यमी के रूप में विकसित करना ।
2. विस्तार सेवाओं का परिप्रेक्ष्य गरीबी को कम करने से धन अर्जित करने तक चला गया है ।
3. विस्तार सेवाओं का लक्ष्य उत्पादकर्ता वृद्धि से लाभकारी वृद्धि तक बदल गया है।

ग्रामीण विकास तेजी से उद्यमिता से जुड़ा हुआ है, जिसे एक विकास हस्तक्षेप के रूप में देखा जाता है, जो ग्रामीण विकास प्रक्रिया को बढ़ावा और गति प्रदान कर सकता है। इसके अलावा, संस्थान और व्यक्ति इस बात से सहमत हैं, कि ग्रामीण उद्यमों को बढ़ावा देने की तत्काल आवश्यकता है। रोजगार की पेशकश के संभावित लाभ के अलावा, ग्रामीण उद्यमिता को व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार और एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को बनाए रखने के रूप में देखा जाता है। किसानों को उद्यमी के रूप में सोचने, फिर उद्यमियों के रूप में सीखने और अंत में, उद्यमियों के रूप में कार्य करने का मुख्य विचार है। उद्यमिता एक छोटे कारक के अस्तित्व में एक महत्वपूर्ण कारक बन रहा है, जिसे तेजी से बढ़ती वैश्विक अर्थव्यवस्था की मांगों के साथ रहना होगा।

कृषि उद्यमिता में विस्तार का मूल्य कृषि व्यवसायी को मदद करना है:

- अधिक कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देना।
- खेत में और बाहर दोनों स्थान पर किसानो के लिए धन, नौकरी और काम के अवसर पैदा करना।
- अपने स्थानीय कृषक समुदाय को आधुनिक बनाने के लिए कृषि व्यवसायियों की मदद करना।
- अधिक किसानों को बेहतर जीवन का समर्थन करने के लिए बेहतर वेतन का उपयोग करने के लिए अधिक अवसर प्रदान करना।

कृषि उद्यमी विकास पर काम करने वाले विस्तार (Extension) प्रतिनिधियों (Agents) की भूमिका

अधिक व्यावसायीकरण की गतिशीलता (ड्राइव) को पूरा करने के लिए, किसानों को विस्तार एजेंटों के सम र्थन और सलाह की आवश्यकता होती है। विस्तारक (Extensionist) उन्हें समर्थन करने के लिए व्यक्तिगत किसान-उद्यमियों और किसान समूहों, संघों और सहकारी समितियों के साथ काम करने में सहायता प्रदान करते हैं

- बाजार विश्लेषण का आयोजन करना ।
- भागीदारों के साथ मूल्य श्रृंखलाओं में काम करना ।
- खेत की योजनाओं का विकास करना ।
- वित्त और बिक्री में मदद करना ।
- खेती करने वाले ग्राहकों के लिए व्यवसाय के अवसरों का निर्माण करना ।
- सफल उद्यमिता के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं का विकास करना ।

कृषि उद्यमी विकास एक जटिल कार्य है, जिसमें बाजार श्रृंखला के भीतर लोगों के साथ काम करना और मूल्य श्रृंखला का समर्थन करने वाली व्यावसायिक सेवाओं से जुड़ना शामिल है। इस तरह, एक कृषि उद्यमी की सफलता के लिए आम तौर पर दूसरों के साथ काम करने और एक संगठन का हिस्सा होने की आवश्यकता होती है, जो विशिष्ट बिंदुओं पर व्यावसायिक प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र से भागीदारों को खोजने में मदद कर सकता है। जरूरतों की सीमा को देखते हुए, कृषक समुदाय कृषि उद्यमिता और सरकारें तेजी से बहुलवादी सलाहकार सेवा के दृष्टिकोण की ओर बढ़ रही हैं।

कृषि उद्यमिता में कृषि विज्ञान केंद्र (के.वी.के.) की भूमिका

कृषि विज्ञान केंद्र (के.वी.के.) भारत में एक कृषि विस्तार केंद्र है। कृषि विज्ञान केंद्र (फार्म साइंस सेंटर) जिला स्तर पर स्थापित आई.सी.ए.आर की एक अभिनव संस्था है। पहला के.वी.के. 1974 के दौरान पांडिचेरी में स्थापित किया गया था और देश में वर्ष 2020 तक 716 कृषि विज्ञान केंद्र के स्थापित किये जा चुके हैं। ये केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और किसानों के बीच अंतिम कड़ी के रूप में काम करते हैं, और कृषि अनुसंधान को व्यावहारिक, स्थानीय सेटिंग में लागू करने का लक्ष्य रखते हैं। सभी के.वी.के. पूरे भारत में 11 कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थानों (ATARI) में से किसी एक के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। के.वी.के. को आई.सी.ए.आर द्वारा वित्त पोषित और आई.सी.ए.आर संस्थानों / राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/ डीम्ड विश्वविद्यालयों/ गैर-सरकारी संगठनों या राज्य कृषि विभाग द्वारा प्रशासित किया जाता है।

के.वी.के. कई कृषि सहायता गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जैसे किसानों को प्रौद्योगिकी प्रसार, प्रशिक्षण, जागरूकता आदि प्रदान करना। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गांवों में निम्नलिखित प्रकार की गतिविधियाँ होती हैं:

- कृषि क्षेत्र संबंधित सलाह सेवा प्रदान करना।
- विभिन्न श्रेणियों के लोगों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- विस्तार अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम करना।
- फ्रंट लाइन प्रदर्शन (एफ.एल.डी)
- फार्म टेस्टिंग (ओ.एफ. टी)

कृषि विज्ञान केंद्र, किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए जरूरत आधारित और कौशल उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करता है। आय अर्जित करने के लिए अधिक अवसर प्रदान करके किसानों को प्रोत्साहित करना विकास के परिणामों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान साबित हुआ है। कृषि उत्पादों की विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे बेकरी उत्पादों की तैयारी, फल और सब्जियों के कृत्रिम फूल बनाने के मूल्य वर्धित उत्पादों को आय सृजन के लिए ग्रामीण आबादी के बीच कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देश भर में कई के.वी.के ग्रामीण आबादी के बीच कृषि-व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए इन गतिविधियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों के गतिविधियों को विस्तार से समझने के लिये हम कुछ पुरुस्कृत केन्द्रों का विस्तृत विवरण अगले भाग में दे रहे है।

1. कृषि विज्ञान केंद्र, चिन्यालीसौड़ उत्तरकाशी, उत्तराखंड

कृषि मंत्रालय के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर) के 91 वें स्थापना दिवस 2019 के

अवसर पर, उत्तरकाशी जिले के कृषि विज्ञान केंद्र (के.वी.के.) चिन्यालीसौर को जोन-1 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कृषि को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट कार्य के लिए पंडित दीन दयाल उपाध्याय कृषि से सम्मानित किया गया। जोन-1 में उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और पंजाब में कुल 71 के. वी.के. शामिल हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र (आई.सी.ए.आर - वी.पी.के.ए.एस) एक जमीनी स्तर की संस्था है, जो अभ्यास करने वाले किसानों, सेवा विस्तार कर्मियों और स्वयं के लिए शुरू करने की इच्छा रखने वाले लोगों को जरूरत-आधारित और कौशल-उन्मुख व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए समर्पित है। इस केंद्र की स्थापना 24 दिसंबर, 2004 को कृषि उत्पादन में तेजी लाने और उत्तरकाशी जिले के कृषक समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को सुधारने को ध्यान में रखते हुए की गई थी।

2. कृषि विज्ञान केंद्र, हिरहल्ली, तुमकुर

आई.सी.ए.आर - क्रीडा, हैदराबाद, जून, 2019 में एनआईसीआरए (क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर में राष्ट्रीय नवाचार) की वार्षिक समीक्षा कार्यशाला में आईसीएआर - के.वी.के. हिरहल्ली, तुमकुर को प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक के कार्यान्वयन में अपने सर्वोत्तम प्रयासों के लिए, जिसमें सूखी भूमि बागवानी भी प्रमुख घटकों में से एक है, वर्ष 2018-19 के लिए सर्वश्रेष्ठ एनआईसीआरए के.वी.के. पुरस्कार मिला है। कृषि विज्ञान केंद्र (के. वी.के.), हिरहल्ली 24 मार्च 2009 को भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर के अंतर्गत हिरहल्ली में स्थापित किया गया था।

के.वी.के में किसानों के लिए उपलब्ध सुविधाएं

- **एटीआईसी (कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र)**: सब्जियों के बीज, रोपण सामग्री और सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे तकनीकी उत्पादों की आपूर्ति तथा बागवानी प्रौद्योगिकियाँ के फोल्डर और बुलेटिन की आपूर्ति के लिए।

- **पादप संरक्षण**: पादप संरक्षण लैब मुख्य रूप से सभी कृषि और बागवानी फसलों के कीट और रोगों के प्रबंधन के लिए किसानों को नैदानिक सेवा प्रदान करने के लिए है।

- **मृदा विज्ञान**: मृदा परीक्षण मूल्यों के आधार पर उर्वरक की सिफारिश करने के लिए मिट्टी, संयंत्र और जल परीक्षण लैब की स्थापना की गयी है, जो किसानों को आदानों की लागत को कम करने में मदद करती है। के.वी.के परिसर में वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन प्रशिक्षण का संचालन करने और जरूरतमंद किसानों को वर्मीकम्पोस्ट खाद और वर्मीवाश की आपूर्ति करने के लिए की गयी है।

- **बीज उत्पादन और रोपण सामग्री**: के.वी.के मुख्य शासना देश विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में विकसित की गई नई तकनीकों को स्थानांतरित करने के लिए है जहाँ नई किस्मों/ संकरों को फ्रंट लाइन

डिमॉन्स्ट्रेशन (एफ.एल.डी) में भी प्रदर्शित किया जाएगा। हर साल औसतन 5000 किलोग्राम गुणवत्ता वाले सब्जियों के बीज का उत्पादन किया जा रहा है, जिसमें ब्रीडर बीज और टी.एल. बीज दोनों शामिल हैं।

- **गृह विज्ञान**: कृषि और बागवानी उत्पादन और पोस्ट हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी दोनों के लिए मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में कृषि महिलाओं और महिला स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्वरोजगार गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया हैं। यहाँ आंवला अचार, आंवला कैंडी, आंवला सुपारी, जैम, आंवला स्क्वैश, टूटी-फल, रागी माल की तैयारी का प्रदर्शन किया जाता है। ग्रामीण लोगों को पोषण सुरक्षा की खेती और महत्व को प्रदर्शित करने और आय सृजन को बढ़ावा देने के लिए के.वी.के परिसर में एक मॉडल पोषण उद्यान की स्थापना की गयी है।

3. कृषि विज्ञान केंद्र, बारामती

कृषि विज्ञान केंद्र, बारामती एक जिला स्तरीय कृषि विज्ञान केंद्र है, जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर), नई दिल्ली के कृषि विकास ट्रस्ट बारामती जिला पुणे में संबद्धता के तहत स्थापित किया गया है। के.वी.के बारामती, स्थायी कृषि के विकास के लिए 24 वर्षों से कृषक समुदाय के लिए काम कर रहा है और भारत का हाई-टेक के.वी.के मॉडल राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता है। कृषि विज्ञान केंद्र का उद्देश्य अनुसंधान संस्थानों में प्रौद्योगिकी के उत्पादन के बीच समय अंतराल को कम करना है और यह निरंतर आधार पर कृषि और संबद्ध क्षेत्रों से उत्पादन, उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिए किसान के क्षेत्र में कार्यरत है।

के.वी.के का उद्यमी प्रशिक्षण

- व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र 2006 में के.वी.के में मैनेज, हैदराबाद के सहयोग से शुरू किया गया था। कृषि और संबद्ध स्नातक और एग्री डिप्लोमा धारक इस दो महीने के आवासीय प्रशिक्षण के लिए पात्र हैं। छात्रों से दो महीने के लिए भोजन और आवास सहित प्रशिक्षण के शुल्क के रूप में केवल 500 रुपये लिए जाते हैं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य छात्रों को कृषि से संबंधित व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करना और प्रशिक्षित करना है और खुद को उद्यमी के रूप में विकसित करना और किसानों को नई तकनीकों और सूचनाओं का विस्तार करना है। प्रशिक्षण के बाद, छात्रों को ऋण प्राप्त करने के लिए संबंधित बैंकों को 20 लाख तक की परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी और उन्हें नाबार्ड से 36 प्रतिशत अनुदान मिलेगा।

- नर्सरी प्रबंधन और बागवानी पर प्रशिक्षण 2003 से केवीके द्वारा नियमित रूप से आयोजित किया जाता है। इस प्रशिक्षण की अवधि 6 महीने है। प्रशिक्षण का आयोजन राष्ट्रीय बागवानी मिशन की एक योजना के तहत किया गया है। लगभग 250 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया जा चूका है, और उनमें से कई ने अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया है या उन्हें अच्छी नौकरी मिली है।

अभिनव विस्तार गतिविधियाँ

- के.वी.के बारामती ने मोबाइल एस.एम.एस प्रणाली भी विकसित की है, जिसके माध्यम से मौसम के पूर्वानुमान पर मोबाइल एस.एम.एस, कृषि वस्तुओं के लिए वर्तमान बाजार दर और भविष्य की व्यापारिक दरें, कृषि सलाहकार, किसानों की यात्रा, प्रशिक्षण किसानों को भेजते है।

- यह के.वी.के सामुदायिक रेडियो स्टेशन शारदा कृषि वाहिनी 90.8 Mhz को चलाने के लिए देश के कुछ के.वी.के में से एक है।

- के.वी.के बारामती ने एक टच स्क्रीन कियोस्क भी स्थापित किया। किसान केवल प्रेसिंग कीज़ द्वारा फसल रोगों, फसल की सिफारिशें और पशु रोगों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

- के.वी.के विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन करता है, जैसे, प्रौद्योगिकी सप्ताह, किसान मेला, अध्ययन यात्राएं, क्षेत्र दिवस, रेडियो वार्ता, प्रकाशन इत्यादि।

- ये गतिविधियाँ के.वी.के को कृषि में उन्नति के बारे में जानकारी देने वाले किसानों की बड़ी संख्या तक पहुँचने में मदद करती हैं।

कृषि उद्यमिता में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

पिछले 20-30 वर्षों में, एनजीओ-आधारित विस्तार एजेंटों की तेजी से बढोतरी हुई है। हालांकि एनजीओ फील्ड एजेंटों के पास सरकारी विस्तार प्रणालियों के रूप में व्यापक कवरेज नहीं है, उनके पास अक्सर बेहतर संसाधन होते हैं और उनके पास अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित उद्देश्य और कार्य योजनाएं होती हैं।

अधिकांश सरकारी विस्तार एजेंट अभी भी अपने प्रयासों को बुनियादी उत्पादन प्रणालियों पर केंद्रित करते हैं, जबकि कई एनजीओ क्षेत्र के एजेंटों ने वित्तीय शिक्षा, बचत और ऋण, व्यवसाय योजना, पोषण और फार्म योजना विविधीकरण जैसे मुद्दों को शामिल करने के लिए सेवाओं के प्रकार को व्यापक बनाया है। ये सेवाएँ कृषक समुदाय को अधिक संतुलित सेवाएँ प्रदान करती हैं। एनजीओ अपने पारंपरिक कार्य जैसे स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, परिवार नियोजन, पर्यावरण संरक्षण, आदि से बहार आकर, कम जागरूक समूहों के उद्यमियों के लिए एक महान मिशन में शामिल हो रहे हैं। इस गतिविधि में लगी सरकारी एजेंसियों ने समाज के निचले पायदानों तक पहुँचने के लिए सहयोग करने और उनके साथ सहयोग करके गैर सरकारी संगठनों को मजबूत किया हैं। आज, हमारे पास देश में उद्यमिता विकास में योगदान देने वाले कई एन.जी.ओ है। इनमें से प्रमुख हैं- प्रोफेशनल असिस्टेंस फॉर डेवलपमेंट एक्शन (प्रदान), भारतीय एग्रो-इंडस्ट्रीज फेडरेशन (बी.ए.आई.एफ), सिनजेंटा फाउंडेशन इंडिया, सेंटर फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (कार्ड), सेवा अहमदाबाद, कर्नाटक के महिला उद्यमियों का संघ, और कर्नाटक में ग्रामीण विकास और स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थान।

कृषि उद्यमिता (Agri-entrepreneurship) विकास पर काम करने वाले कुछ एनजीओ का विवरण इस प्रकार है:

ए. प्रोफेशनल असिस्टेंस फॉर डेवलपमेंट एक्शन (प्रदान)

प्रदान की स्थापना 1983 में हुई थी। इसने सरकार के आई.आर.डी.पी, एस.जी.एस.वाई और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन जैसे कार्यक्रमों को विकसित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। यह परिवर्तन के लिए काम करता है, जो टिकाऊ और आत्म-स्थायी है, कौशल और सिस्टम ला रहा है जो महिलाओं, परिवारों और समुदायों को आत्मविश्वास हासिल करने और अपने स्वयं के जीवन का प्रभार लेने में मदद करता है। प्रदान कृषि, बाजार लिंकेज, पशुधन पालन और वन आधारित गतिविधियों, उद्यमों को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के माध्यम से ग्रामीण लोगों को आजीविका में सुधार के लिए कार्य करता है।

प्रदान के प्रमुख कार्य क्षेत्र-

- **सामाजिक गतिशीलता**: सबसे गरीब समुदायों तक पहुँचना, मानवीय क्षमताओं का निर्माण करना, परिवर्तन एजेंटों के रूप में महिलाओं के आत्मनिर्भर समूहों का निर्माण करना।
- **खाद्य सुरक्षा**: भूख को कम करना, साल भर का भोजन सुनिश्चित करना।
- **प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन**: उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और निवेशों के माध्यम से प्रकृति के संसाधनों का अधिक से अधिक सही उपयोग करना।
- **आजीविका**: वैकल्पिक आजीविका के मॉडल बनाना, समुदाय को नए कौशल सेट में प्रशिक्षित करना।
- **मार्केट लिंकेज**: बाजारों को वित्तीय संस्थानों और सरकार से जोड़ना ।
- **शासन**: समुदाय को उसके अधिकारों के बारे में जागरूक करना, उन्हें उस तरीके से कहने का अधिकार देना, जिस तरह से चीजों को चलाया जाता है।

प्रदान समाज के लिए स्थायी आजीविका के अवसर बनाने का काम करता है। उनकी आजीविका संवर्धन रणनीति कृषि, पशुधन-पालन और सेवा उद्यमों के संयोजन और लघु वन उपज के संग्रहण और बिक्री पर केंद्रित है। यह भारत के किसानों के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है। प्रदान ने ओडिशा सरकार और भारत ग्रामीण आजीविका फाउंडेशन (बी.आर.एल.एफ) के साथ एक साझेदारी करके 12 जिलों के 40 आदिवासी बहुल ब्लॉकों के लगभग एक लाख किसानों को लाभान्वित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम के साथ साझेदारी की है, ताकि मुख्य रूप से फसलों के बाजार से जुड़े बागवानी फसलों का उत्पादन का अभ्यास किया जा सके।

बी. बीएआईएफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन

बी.ए.आई.एफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन 1967 में भारत के महाराष्ट्र में पुणे के पास उरली कंचन में स्थापित

किया गया था। यह एक पुरस्कार विजेता धर्मार्थ संगठन है, जिसकी स्थापना कृषि विकास मंल अग्रणी है। बी.ए.आई.एफ ग्रामीण परिवारों के लिए लाभकारी स्वरोजगार के अवसर पैदा करने के लिए पूरे भारत में काम करता है। बी.ए.आई.एफ प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और प्रमुख आय सृजन गतिविधियों के रूप में पशुधन विकास, वाटरशेड विकास और कृषि-होरी-वानिकी के प्रबंधन के माध्यम से ग्रामीण गरीबों को स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बी.ए.आई.एफ के कार्यक्रम:

- क्षमता निर्माण
- प्रबंधन सूचना प्रणाली
- बैंक लिंकेज
- आय सृजन गतिविधियाँ
- बीमा
- नेटवर्किंग
- कार्यात्मक साक्षरता
- सामुदायिक स्वास्थ्य

सी. सिनजेंटा फाउंडेशन इंडिया

सिनजेंटा फाउंडेशन इंडिया (एस.एफ.आई) टिकाऊ कृषि परियोजनाओं का समर्थन करता है, जो किसानों के लिए दीर्घकालिक उत्पादकता और आय सृजन का नेतृत्व करेंगे। यह तीन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है, अर्थात, जल संरक्षण और उपयोग बढ़ाना, प्रजनन किस्में स्थानीय स्थितियों के अनुकूल जानकारी देना एवं किसानों को जानकारी से जोड़ना।

सिन्जेंटा फाउंडेशन इंडिया के सहयोग से ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया (टी.आर.आई.) द्वारा चलाए जा रहे कृषि-उद्यमिता कार्यक्रम में झारखंड के कई किसानों ने भाग लिया और एक सफल एग्रीप्रेन्योर बने है। एग्रीप्रेन्योर गाँव में वन-स्टॉप शॉप की तरह है। वह कृषि आदानों, उच्च-गुणवत्ता वाली वनस्पति रोपाई, पावर टिलर जैसे यंत्रीकृत जुताई उपकरण, माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के माध्यम से कृषि आदानों के लिए छोटे ऋण

और खेती से संबंधित जानकारी के अलावा सब्जियों और आमों के सामूहिक विपणन की सुविधा प्रदान करता है।

डी. कृषि और ग्रामीण विकास केंद्र (कार्ड)

सेंटर फॉर एडवांस रिसर्च एंड डेवलपमेंट (कार्ड) एक गैर-सरकारी संगठन है, जिसकी स्थापना वर्ष 2000 में भोपाल के मुख्यालय के साथ भारत में हुई, लेकिन इसके अनुसंधान, मूल्यांकन और प्रलेखन गतिविधियाँ पूरे देश में फैले हैं। कार्ड राष्ट्रीय उपस्थिति बनाए रखने के साथ कृषि, बागवानी और ग्रामीण विकास में विभिन्न गतिविधियों में लगा हुआ है। संगठन व्यवसायिक सेमिनार, तकनीकी सम्मेलन, किसानों की कार्यशाला, कृषि व्यापार मेलों, सर्वेक्षणों और अध्ययनों का आयोजन करके और उनके सतत विकास के लिए गांवों को गोद लेकर सूचना प्रसार, प्रशिक्षण, क्षमता-निर्माण और प्रौद्योगिकी जोखिम पर केंद्रित है। कार्ड ने यूपी, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और उत्तर पूर्व क्षेत्र जैसे विभिन्न राज्यों में 74 जिलों को कवर किया है। कार्ड, पी.एम.के.के और ए.सी.ए.बी.सी की अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं में भारत सरकार का समर्थन करके राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है।

- **प्रधानमंत्री कौशल केंद्र (पी.एम.के.के)**: भारत के प्रत्येक जिले/ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में गुणवत्ता कौशल विकास प्रशिक्षण के वितरण के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचे के निर्माण की दिशा में एक प्रयास है। कार्ड ने छिंदवारा, बालाघाट, डिंडोरी, मण्डला एंड उज्जैन में 5 पीएमके के शुरू किए हैं कार्ड ने अपने प्रशिक्षुओं को कृषि, परिधान, आईटी, निर्माण, स्वास्थ्य देखभाल और सुरक्षा के तहत 11 पाठयक्रम पेश किए हैं।

- **कृषि क्लिनिक**: कृषि-क्लिनिकों में किसानों को मृदा स्वास्थ्य, फसल प्रथा, पौध संरक्षण, फसल बीमा, पशुचारण प्रौद्योगिकी और पशुओं के लिए नैदानिक सेवाएं, चारा और चारा प्रबंधन, बाजार में विभिन्न फसलों की कीमतों आदि सहित विभिन्न तकनीकों पर किसानों को विशेषज्ञ सलाह और सेवाएं प्रदान करने की परिकल्पना की गई है, जो फसलों/ पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाएगा और किसानों को आय बढ़ाएगा।

- **कृषि-व्यवसाय केंद्र**: कृषि-व्यवसाय केंद्र प्रशिक्षित कृषि पेशेवरों द्वारा स्थापित कृषि-उपक्रमों की व्यावसायिक इकाइयाँ हैं। इस तरह के उपक्रमों में कृषि उपकरणों और कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में कृषि उपकरण और अन्य सेवाओं की बिक्री और रख रखाव के कस्टम हायरिंग शामिल हो सकते हैं, जिसमें फसल के बाद प्रबंधन और बाजार बिक्री भी शामिल हैं। बेरोजगार कृषि स्नातकों, कृषि डिप्लोमा धारकों, के लिए मध्यवर्ती स्वरोजगार के अवसर पैदा करना कृषि से संबंधित पाठ्यक्रमों में पीजी के साथ कृषि और जैविक विज्ञान स्नातक, आय सृजन और उद्यमिता विकास के लिए संपर्क स्थापित करना। राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) योग्य उम्मीदवारों को नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एन.टी.आई) के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान

करने और एग्री-क्लिनिक और कृषि-व्यवसाय केंद्र स्थापित करने के लिए प्रेरित करने के लिए जिम्मेदार है। कार्ड भोपाल, उज्जैन और मंडला में अपने नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में चला रहा है।

ई. रूडी-सेवा

स्व-नियोजित महिला संघ (सेवा), जिसका अर्थ है: सेवा, अहमदाबाद, भारत में स्थित एक ट्रेड यूनियन है। यह स्वतंत्र रूप से कार्यरत महिला श्रमिकों के आय के अधिकारों को बढ़ावा देता है। इसका मुख्य लक्ष्य पूर्ण रोजगार के लिए महिला श्रमिकों को संगठित करना है। पूर्ण रोजगार का मतलब वह रोजगार होता है जिससे श्रमिक कार्य सुरक्षा, आय सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करते हैं।

रूडी (गुजराती शब्द जिसका अर्थ हैं शुद्ध और सुंदर) 2004 में सेवा द्वारा विकसित एक अभिनव व्यापार मॉडल है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में लगे सदस्यों के लिए है। रूडी गुजरात के 14 जिलों के सभी गांवों में किसानों और खेतिहर मजदूरों के ग्रामीण खुदरा नेटवर्क में किसान संघ के माध्यम से खरीदे गए कृषि-वस्तुओं के प्रत्यक्ष संवर्धन और विपणन को सक्षम बनाता है। उनके साथ काम करने वाली महिला, जिसे रुडीबेन के नाम से जाना जाता है, जो किसानों द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले कच्चे उत्पादों का संग्रह, प्रसंस्करण और पैकेज करती हैं, जो रुडी प्रणाली का हिस्सा हैं। बाद में, रूडीबहन रूडी ब्रांड के तहत इन उत्पादों को बेचते हैं, या तो डोर-टू-डोर या खुदरा स्टोरों में। रूडी उत्पादों की मार्केटिंग और ब्रांडिंग के लिए जिम्मेदार है। रुडीबेन और प्रसंस्करण समूह, दोनों को विपणन, प्रसंस्करण, तौल और पैकेजिंग जैसे कई कौशल पर सेवा से नियमित प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

इस प्रकार, रूडी मॉडल के माध्यम से, सेवा किसान बढ़े हुए बाजार लिंकेज से लाभान्वित हो सकते हैं, साथ ही साथ अपने उत्पादों के लिए बेहतर मूल्य भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, रूडी किसानों को बाजार के रुझानों और कीमतों के बारे में नियमित और अद्यतन जानकारी प्रदान करता है, जिससे उन्हें अपने व्यवसायों के लिए सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है, साथ ही आधुनिक तकनीकों, नई संकर बीज किस्मों, उर्वरकों और कीटनाशकों के उचित उपयोग के बारे में जागरूकता पैदा करने का भी प्रयास किया जाता है। साथ ही उपलब्ध सरकारी योजनाएं और सुविधाएं जो किसानों के उद्यमों की सहायता कर सकती हैं। उपलब्ध मार्केट लिंकेज को बढ़ाने के लिए, रुडी, रुडी उत्पादों के साथ उन्हें आपूर्ति करने के लिए रुडीबेन नेटवर्क के मध्यस्थता के माध्यम से ऐसे अस्पतालों, सामुदायिक रसोई और खुदरा स्टोरों के साथ भागीदारी स्थापित करता है।

निजी क्षेत्र विस्तार सेवा प्रदाताओं की भूमिका

निजी क्षेत्र की विस्तार सेवाओं के विभिन्न रूप हैं, जैसे कि उत्पादकों द्वारा भुगतान किया जाता है और एक लीड फर्म द्वारा भुगतान किया जाता है। निजी क्षेत्र के क्षेत्र एजेंटों का भुगतान एक किसान या किसान

संगठन द्वारा किसी विशिष्ट उत्पाद या क्षेत्र में लक्षित विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए किया जाता है। ये विस्तार एजेंट किसानों के साथ काम करते हैं ताकि उन्हें बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बेचने में मदद मिल सके। ज्यादातर मामलों में, अधिक वाणिज्यिक किसान इन सेवाओं के लिए अपनी उपज का हिस्सा बढ़ाने के लिए भुगतान करते हैं जो उच्चतम प्रीमियम मूल्य प्राप्त करेंगे। जब लीड फर्म किसानों को निजी विस्तार सेवाएं प्रदान करते हैं, तो यह अक्सर अनुबंध बिक्री समझौते का हिस्सा होता है।

क्षेत्र प्रतिनिधि (फ़ील्ड एजेंट) अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करते हैं कि कुछ उत्पादन प्रथाओं को बनाए रखा जाता है, कि किसान एक विशिष्ट किस्म की उपज उगाते हैं और आवश्यक गुणवत्ता विनिर्देशों को पूरा करने के लिए वे एक परीक्षण उत्पादन प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। इन सेवाओं को प्रदान करने वाले क्षेत्र के एजेंटों का मूल्यांकन किसानों से माल की आपूर्ति में सुधार करने की उनकी क्षमता के मामले में प्रमुख फर्म द्वारा किया जाता है। किसान इस प्रकार के समर्थन तक पहुँचने के लिए उत्सुक हैं, क्योंकि यह उन्हें ज्ञान, नई प्रौद्योगिकियों और अधिक विश्वसनीय बाजारों और अक्सर क्रेडिट तक पहुँच प्रदान करता है, जो उच्च मूल्य के सामानों की बिक्री के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने की उनकी क्षमता को बढ़ाता है।

किसान आय दोगुनी करने का विजन कृषि और ग्रामीण विकास में व्यापक कॉर्पोरेट भागीदारी के लिए एक महान अवसर प्रदान करता है। कॉरपोरेट क्षेत्र एक अद्वितीय आयाम जोड़ सकता है, जिसे निजी उद्यमिता की शक्ति, नवाचार करने की क्षमता, इसकी व्यापक विविधता कौशल के साथ-साथ बाजारों तक अधिक कुशलता से पहुँचने की क्षमता प्रदान की जा सकती है।

कई एग्रो-इनपुट कंपनियां कुछ विस्तार कार्य करती हैं। यह विपणन का एक कार्य है और अक्सर यह विपणन अधिकारी होते हैं, जो विस्तार से संबंधित कार्यों की देखरेख करते हैं। कृषि-इनपुट कंपनियों की प्रमुख श्रेणियों में बीज, उर्वरक, कीटनाशक और कृषि-मशीनरी शामिल हैं। उनमें से कुछ नए उत्पादों को प्रचारित करने के लिए कुछ प्रदर्शन भी करते हैं। उनमें से कई कृषि विभाग जैसे लाइन विभागों द्वारा आयोजित किसान बैठकों या सेमिनारों को प्रायोजित करते हैं। ये कंपनियां आम तौर पर व्यक्तिगत उत्पादकों या किसान समूहों को कोई विस्तार सहायता प्रदान नहीं करती हैं, क्योंकि वे अपने लक्षित क्षेत्र में केवल सीमित जनशक्ति को रोजगार देते हैं।

ए. भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको) और कृषक भारती सहकारी (कृभको)

देश में ये दो प्रमुख उर्वरक सहकारी सम्मितियाँ कई विस्तार गतिविधियों के आयोजन में सक्रिय रूप से शामिल हैं। वे किसानों की बैठकें आयोजित करते हैं, फसल सेमिनार आयोजित करते हैं, मृदा परीक्षण

सुविधाओं की व्यवस्था करते हैं, और गांव गोद लेने के कार्यक्रमों को भी लागू करते हैं। यद्यपि उनके पास उपलब्ध तकनीकी जनशक्ति सीमित है, वे कृषि विभाग और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर कई कार्यक्रमों को आयोजित करते हैं। किसान बैठकों, सेमिनारों आदि के लिए, कंपनी लाइन विभागों के विशेषज्ञों की सेवाओं की व्यवस्था करती है।

बी. डीसीएम श्रीराम कंसॉलिडेटेड लिमिटेड (डी.एस.सी.एल)

डीसीएम श्रीराम कंसॉलिडेटेड लिमिटेड ने किसानों को एंड-टू-एंड समर्थन प्रदान करने के लिए एग्री-इनपुट रिटेल स्टोर की एक श्रृंखला हरियाली किसान बाज़ार (एच.के.बी) की स्थापना की है। किसान इन केंद्रों पर तैनात कृषि विदों से तकनीकी सहायता प्राप्त कर सकते हैं। केंद्र कृषि-आदानों की एक पूरी श्रृंखला भी प्रदान करते हैं। हरियाली किसान बाज़ार बैंकिंग और कृषि ऋण और बाजारों तक पहुँच प्रदान करता है अब तक आठ राज्यों- हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में 302 से अधिक हरियाली आउटलेट स्थापित किए जा चुके हैं।

सी. भारतीय तंबाकू कंपनी (आई.टी.सी)

आई.टी.सी देश का अग्रणी एफएमसीजी मार्केटर है, जो भारतीय पेपरबोर्ड और पैकेजिंग उद्योग में स्पष्ट बाजार में अग्रणी है, जो विश्व स्तर पर अपने व्यापक कृषि व्यवसाय के माध्यम से किसान सशक्तीकरण में अग्रणी है। भारत में कृषि क्षेत्र में अग्रणी कॉर्पोरेट के रूप में आई.टी.सी की पूर्व-प्रतिष्ठित स्थिति मजबूत और स्थायी किसान भागीदारी पर आधारित है जिसने ग्रामीण कृषि क्षेत्र में क्रांति और परिवर्तन किया है।

कृषि प्रथाओं और गहन अनुसंधान की गहरी समझ के साथ मिलकर आई टी सी के एक अद्वितीय ग्रामीण डिजिटल बुनियादी ढांचा नेटवर्क द्वारा एक प्रतिस्पर्धी और कुशल आपूर्ति श्रृंखला बनाई है। जो देश के कृषि उत्पादों के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक, आईटीसी ने भारतीय फ़ीड सामग्री, खाद्य अनाज, समुद्री उत्पाद, प्रसंस्कृत फल और कॉफी का बेहतरीन उत्पादन भी किया।

ई-चौपाल

- आई.टी.सी का विस्तार प्रयास ई-चौपालों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो अनिवार्य रूप से एक स्थानीय किसान (संचालक) द्वारा संचालित ग्राम इंटरनेट कियोस्क हैं। कंपनी ई-चौपाल के लिए बुनियादी ढाँचा प्रदान करती है, जो मौसम, बाजार की कीमतों और वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी हासिल करने में सक्षम है। किसान उत्पादक खेती के तौर-तरीकों, विभिन्न बाजारों में प्रचलित कीमतों की दैनिक जानकारी और आईटीसी और ई-चौपाल में स्थापित कंप्यूटरों के माध्यम से विस्तृत जिला-विशिष्ट मौसम की जानकारी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह एक आभासी बाजार स्थान है जहाँ किसान सीधे प्रोसेसर के साथ लेन-देन कर सकते हैं और अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। संचलक के पास लेन-देन आधारित आय है। किसान इस सुविधा का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं और कोई शुल्क या पंजीकरण शुल्क नहीं है।

- अद्वितीय ई-चौपाल मॉडल एक महत्वपूर्ण दो-तरफा बहुआयामी चैनल बनाता है, जो कृषि उत्पादों के माध्यम से संबंधित लागतों को ठीक करने के साथ-साथ ग्रामीण भारत में उत्पादों और सेवाओं को कुशलता से ले जा सकता है। इस पहल में 35000 से अधिक गाँवों को कवर करने वाले लगभग 6100 प्रतिष्ठान और 40 लाख से अधिक किसान शामिल हैं। वर्तमान में, 'ई-चौपाल' वेबसाइट मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के 10 राज्यों में किसानों को जानकारी प्रदान करती है।

चौपाल प्रधान खेत

ग्रामीण भारत में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के अपने मिशन के अनुरूप, आई.टी.सी के एग्री बिजनेस ने कृषि संबंधी सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाकर किसानों को कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद करने के लिए 'चौपाल प्रधान खेत' (सी.पी.के) या प्रदर्शन भूखंडों का एक प्रमुख विस्तार कार्यक्रम शुरू किया है। 2005-06 में शुरू किए गए, फसल पोर्टफोलियो में सोया, धान, कपास, मक्का, बाजरा, गेहूँ, चना, सरसों, सूरजमुखी और आलू शामिल हैं।

आई.टी.सी ग्रामीण महिलाओं के बीच उद्यमशीलता कौशल को बढ़ावा देता है

2014 में, इसने बिहार के मुंगेर जिले में एक कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें महिला किसानों को उन्नत कौशल और ज्ञान प्रदान किया गया। आई.टी.सी ने स्व-नियोजित महिला संघ के साथ सहयोग किया, जिसमें गरीब स्वरोजगार वाली महिलाएं शामिल हैं, जो अपने स्वयं के श्रम या छोटे व्यवसायों के माध्यम से जीविकोपार्जन करती हैं, जैसा कि इसका परियोजना भागीदार है। आई.टी.सी तकनीकी मार्गदर्शन के लिए दक्षिण एशिया के लिए अनाज प्रणाली पहल (सी.एस.आई.एस.ए) के साथ साझेदारी में भी काम करता है। यह कार्यक्रम, महिला किसानों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाता है, जिसका उद्देश्य स्थायी कृषि प्रथाओं के माध्यम से ग्रामीण समुदायों के संरक्षण, संवर्द्धन और उनकी पर्यावरणीय पूंजी का प्रबंधन करके कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना है। इस एक्शन-रिसर्च साझेदारी के माध्यम से, लक्ष्यित ग्रामीण महिलाएँ कृषि क्षेत्र में अपनी भूमिका में बदलाव देख रही हैं। स्व-सहायता समूहों के माध्यम से, महिला किसानों ने उन्नत चावल किस्मों के बीज का उपयोग करना शुरू कर दिया और उन उपकरणों का प्रत्यारोपण किया, जिन्होंने उनकी उत्पादकता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये महिलाओं की समाज की धारणा को बदलने में मदद कर रहे हैं: अदृश्य खेत मजदूरों से, वे अब उद्यमी किसान बन रहे हैं।

आईटीसी ने मुंगेर जिले में कृषक परिवारों को मशीनीकरण सेवाएं प्रदान करने के लिए दो महिलाओं के नेतृत्व वाले कस्टम हायरिंग सेंटर (सीएचसी) की स्थापना की। इन महिलाओं के नेतृत्व वाली सीएचसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों जैसे कि प्रत्यक्ष बीज वाले चावल, खरपतवार प्रबंधन प्रथाओं और मशीनीकरण के लिए सूचना केंद्र के रूप में कार्य करती है। यह उम्मीद की जाती है कि इससे श्रम की आवश्यकता में कमी आएगी, घिसावट में कमी आएगी, उत्पादन की लागत कम होगी और समय पर कृषि कार्य होंगे। 2016 में, कस्टम हायरिंग केंद्रों ने 11 गांवों के 153 किसानों को लगभग 77 हेक्टेयर खेत को कवर करते हुए नर्सरी बढ़ाने से लेकर यांत्रिक प्रत्यारोपण, कटाई और थ्रेशिंग तक की सेवाएं प्रदान की जिन महिलाओं ने नए कौशल और ज्ञान प्राप्त किए हैं, वे आय बढ़ाने से लाभान्वित हो रही हैं। वे कृषि नवाचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सी.एच.सी. के माध्यम से, महिला किसान बेहतर कृषि प्रबंधन तकनीकों और समुदायों को जानकारी देने में सक्षम हैं जो अन्यथा इन संसाधनों से अलग हो जाते हैं। कई और महिला किसान अपने समुदायों में बदलाव का नेतृत्व कर रही हैं।

मैकेनिकल ट्रांसप्लांटिंग करतीं महिला किसान। (फोटो: आईटीसी)

उपसंहार

यह अध्याय भारत की ग्रामीण आबादी के बीच कृषि-कौशल को विकसित करने में कृषि विज्ञान केंद्र गैर-सरकारी संगठनो और निजी विस्तार कंपनियों एवं अधिकारियों की भूमिका की समीक्षा करता है। भारत में विस्तार सुधार केंद्रीय सहायता पर निर्भर हैं, जो कुछ हद तक चिंताजनक है। यद्यपि निजी और गैर सरकारी संगठन क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं, और किसानों को अपना समर्थन बढ़ा रहे हैं, लेकिन ये विभिन्न क्षेत्रों/ जिलों या ब्लॉकों में व्यापक प्रसार नहीं हैं। इसलिए सरकार को एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार के सेवा प्रदाताओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसलिये सरकार ने अधिनियमों का प्रावधान किया है।

2

भारत का पहला कृषि विज्ञान केंद्र कब और कहाँ स्थापित किया गया था?

3

देश में उद्यमिता विकास में योगदान देने वाले दो एनजीओ का नाम सूचीबद्ध करें?

1

भारत में कृषि अनुसंधान का सर्वोच्च निकाय कौन सा है?

4

ई-चौपाल किस कंपनी की प्रमुख पहल है?

5

AC & ACB का पूर्ण रूप क्या है?

भावी उद्यमियों हेतु वित्तीय जोखिम प्रबंधन

प्रस्तावना

जोखिम प्रबंधन किसी भी व्यवसाय के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है, विशेष रूप से उन उद्योगों के प्रकार में जो अनिश्चित परिणामों से ग्रस्त हैं, तथा प्रतिभागियों के नियंत्रण से बाहर हैं। कृषि एक ऐसा विशेष रूप से जोखिम-प्रवण उद्योग है, जिसमें अनिश्चितता के विभिन्न स्रोत हैं। जैसे कि मौसम, मांग की उतार-चढ़ाव, विदेशी व्यापार और ऋण उपलब्धता। यह एक विडंबना है कि, कृषि में उद्योग के भागीदार बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत किसान हैं, जो बड़े उद्यमियो एवं निगमों के विपरीत, अप्रत्याशित नुकसान को अवशोषित करने की क्षमता नहीं रखते हैं। यह कृषि के लिए जोखिम प्रबंधन को एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाता है। अपनी प्रस्तुति में विश्व परियोजना प्रबंधन मंच (नई दिल्ली में 9-10 दिसंबर 2019) के दौरान, डॉ यवोन बटलर, एमडी, सूचना संसाधन, ऑस्ट्रेलिया ने 'लौह त्रिभुज' के बारे में उल्लेख किया, जिसमें राजनीतिक, वित्तीय और सामाजिक पहलू महत्वपूर्ण है। वर्तमान अध्याय वित्तीय पहलुओं एवं कारकों तथा विशेष रूप से वित्तीय जोखिम से संबंधित है।

दुष्चक्र को पार करें

कृषि सहित भावी उद्यमियों के लिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि 'भय-धारणा- जोखिम (Fear-Assumption-Risk) एक 'बरमूडा ट्रायंगल' की तरह काम करते हैं, और इसमें संभावित उद्यमी फँस जाता है, अगर यह नकारात्मक अर्थों में लिया गया हो, और ज्यादातर ये बहुमत से नकारात्मक रूप से ही लिए जाते हैं।

1.भय

भय का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं होता है और इसका निर्माण ज्यादातर मानव मन द्वारा कथित नकारात्मक धारणाओं के आधार पर किया जाता है। इसे कई आत्म विश्वास निर्माण अभ्यासों और प्रेरक कहानियों आदि के माध्यम से कम करने की चेष्टा करें। कुछ किताबें जैसे रचमैन एसजे (डब्ल्यूएच फ्रीमैन/ टाइम्स बुक्स/ हेनरी होल्ट एंड कंपनी,1990), की फियर एंड चैलेंज कुछ उत्तर प्रदान करते हैं। या लोग साहसपूर्वक व्यवहार करना सीख सकते हैं? जेएस लर्नर और डी केल्मर (2000) ने मनोवैज्ञानिक शोध के माध्यम से पाया कि;

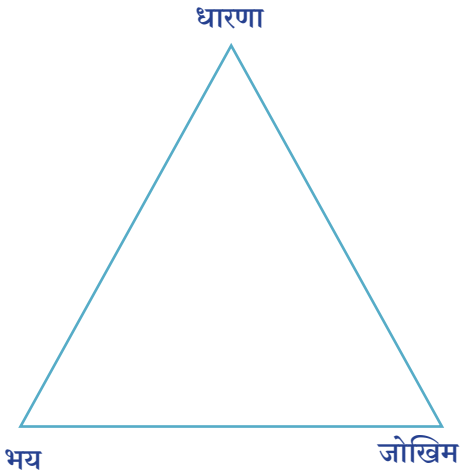

भय और क्रोध का जोखिम समझ पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जहाँ भयभीत लोगों ने निराशावादी जोखिम अनुमान और बचने के विकल्प व्यक्त किए

2.धारणा एवं मान्यता

धारणा (Assumption) क्या है? जो कुछ भी सामान्य रूप से नहीं होता है लेकिन हो सकता है। यह एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है अगर आकस्मिक योजना के लिए वैकल्पिक और अतिरिक्त विकल्प' के लिए सकारात्मक तरीके से लिया जाए। मुख्य रूप से सुझाए गए क्रम में निम्नलिखित पर विचार करें;

निम्न के लिए कौन सी परिस्थितियाँ और अवस्थायें होती हैं

(1) असफलता, (2) सफलता, (3) अधिक सफलता

3. जोखिम

जीवन में जोखिम सदा बना रहता है, महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे परिहार, शमन, धारणा और ज्ञान प्रबंधन आदि के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। वित्तीय साक्षरता इसके लिए महत्वपूर्ण है, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) अपनी वेबसाइट (rbi.org.in) na / FinancialEducation/Home.aspx) ने वित्तीय शिक्षा पहल शुरू की है और 'वित्तीय समावेशन' संगठनों, नीतियों और योजनाओं, और भारत सरकार की अन्य पहलों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जैसे कि बीमा, वित्तीय साक्षरता केंद्र, व्यवसाय संवाददाता और निम्न आय वाली वित्तीय सेवाएँ और कमजोर समूह। जैसा कि इस वेबसाइट पर ओईसीडी का एक महत्वपूर्ण अध्ययन दिया गया है, जो कहता है;

ठोस वित्तीय निर्णय लेने और अंततः व्यक्तिगत वित्तीय कल्याण प्राप्त करने के लिए जागरूकता, ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार का संयोजन आवश्यक है

मूल्य स्थिरीकरण दृष्टिकोण बनाम बाजार आधारित दृष्टिकोण:

किसानों के लिए जोखिम कम करने के लिए भारत सरकार का दृष्टिकोण ऐतिहासिक रूप से न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के माध्यम से ऋण छूट और मूल्य स्थिरीकरण के आसपास घूमता रहा है। हालांकि ये उपाय किसानों के लिए मददगार हैं, लेकिन वे जोखिम प्रबंधन के सबसे मजबूत तरीके नहीं हैं, क्योंकि वे केवल किसानों से जोखिम को सरकार पर स्थानांतरित करते हैं, जो उस जोखिम को संभालने के लिए मजबूत स्थिति नहीं हो सकता है।

उदाहरण के लिए, सरकार के लिए वित्तीय कठिनाई के समय में, ये उपाय सरकार के राजकोषीय घाटे को आगे बढ़ाएंगे और घरेलू मुद्रा के क्षरण जैसे प्रतिकूल आर्थिक प्रभावों को जन्म देंगे।

इस लेख में, हम जोखिम प्रबंधन के कुछ सामान्य तरीकों को देखेंगे और उन्हें भारत में कृषि पर लागू करने के फायदे और नुकसान पर विचार करेंगे। इनमें से कुछ तरीकों का मुख्य लाभ यह है कि वे बैंक, निवेशकों और बीमा कंपनियों जैसे सक्षम बाजार सहभागियों के बीच जोखिम वितरित करते हैं और सरकार के साथ जोखिम की एकाग्रता से बचते हैं। बाजार आधारित तरीकों का एक और फायदा यह है कि वे सरकारी तरीकों के विपरीत फसल की कीमतों को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं करते हैं। जबकि मूल्य नियंत्रण कम समय में किसानों के लिए फायदेमंद हो सकता है, लंबे समय में मूल्य नियंत्रण महत्वपूर्ण आपूर्ति माँग को छुपा सकता है- अर्थव्यवस्था में मांग की जानकारी जो आमतौर पर एक अच्छी कीमत में परिलक्षित होती है।

जोखिम प्रबंधन अभ्यास के प्रकार:

ऐसे कई तरीके हैं, जिनके माध्यम से व्यवसायी अपने जोखिम का प्रबंधन करते हैं। आमतौर पर, ये चार श्रेणियों के भीतर होते हैं जो नीचे विस्तृत हैं;

1. जोखिम से बचाव

जोखिम से निपटने का सबसे सरल तरीका एक व्यवसाय में जोखिम भरे क्षेत्रों की पहचान करना और उनसे बचना है। हालांकि, यह आमतौर पर एक विकल्प नहीं है क्योंकि अधिकांश उद्यमों में उनके साथ जुड़े जोखिम होते हैं और ऐसे जोखिमों को उठाए बिना लाभ कमाना असंभव होगा

2. जोखिम का न्यूनीकरण

हालांकि जोखिम से बचना आम तौर पर असंभव है, पर उठाए जा रहे जोखिम की मात्रा को निश्चित रूप से एक बिंदु तक की अधिकांश परियोजनाओं में कम किया जा सकता है। किसी परियोजना में जोखिम को कम करने के दो तरीके हैं विविधीकरण, और उच्च जोखिम वाले निवेशों की अपेक्षा कम जोखिम वाले निवेश का चयन करना।

ए. विविधीकरण:

उन परियोजनाओं में विविधता लाना जिनके जोखिम एक-दूसरे के साथ संबद्ध नहीं हैं, परियोजनाओं के पोर्टफोलियो के जोखिम को कम करने का एक आजमाया और परखा हुआ तरीका है। कृषि में, ऐसा करने का एक तरीका यह है कि लगाए जाने वाली फसलों में विविधता आए। उदाहरण के लिए, एक किसान जो मुख्य रूप से पानी की सघन फसल उगाता है, एक सूखी मानसून से फसल की विफलता के जोखिम को कम करने के लिए कुछ ऐसी फसल उगाने पर भी विचार कर सकता है, जिसमें बहुत अधिक पानी की आवश्यकता न हो।

बी. कम जोखिम वाले निवेश:

प्रत्येक निवेश में जोखिम की मात्रा होती है, और यह राशि निवेशों के बीच भिन्न होती है। जोखिम वाले व्यवसाय को उन निवेशों का चयन करना चाहिए जिनके साथ कम अनिश्चितता जुड़ी हुई है। उदाहरण के लिए, एक किसान ऐसी फसल चुन सकता है, जो खराब मौसम और कीट से अधिक मजबूत हो और इस प्रकार उसके असफल होने की संभावना कम हो। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कम जोखिम वाले निवेश आम तौर पर छोटे मुनाफे ही देते है। प्रत्येक व्यवसाय को अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार यह तय करने की आवश्यकता है की वह क्या विधि अपनायेंगे।

3. जोखिम का स्थानांतरण

कुछ जोखिम हैं जो व्यवसायों को अपने दम पर प्रबंधित करने में सक्षम हैं, जबकि अन्य जोखिम जो व्यवसाय की विशेषज्ञता से बाहर हैं, उन्हें बाहरी इकाई में स्थानांतरित करना बेहतर है। इस प्रकार का जोखिम प्रबंधन कृषि में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है, क्योंकि कृषकों एवं कृषि व्यवसायियों को आमतौर पर वित्तीय जोखिम का प्रबंधन करने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाता है। इसलिए इन जोखिमों को अन्य पार्टियों जैसे सरकार, बीमा कंपनियों, बैंकों या अन्य वित्तीय संस्थानों में स्थानांतरित करना बेहतर होगा।

ए. बीमा:

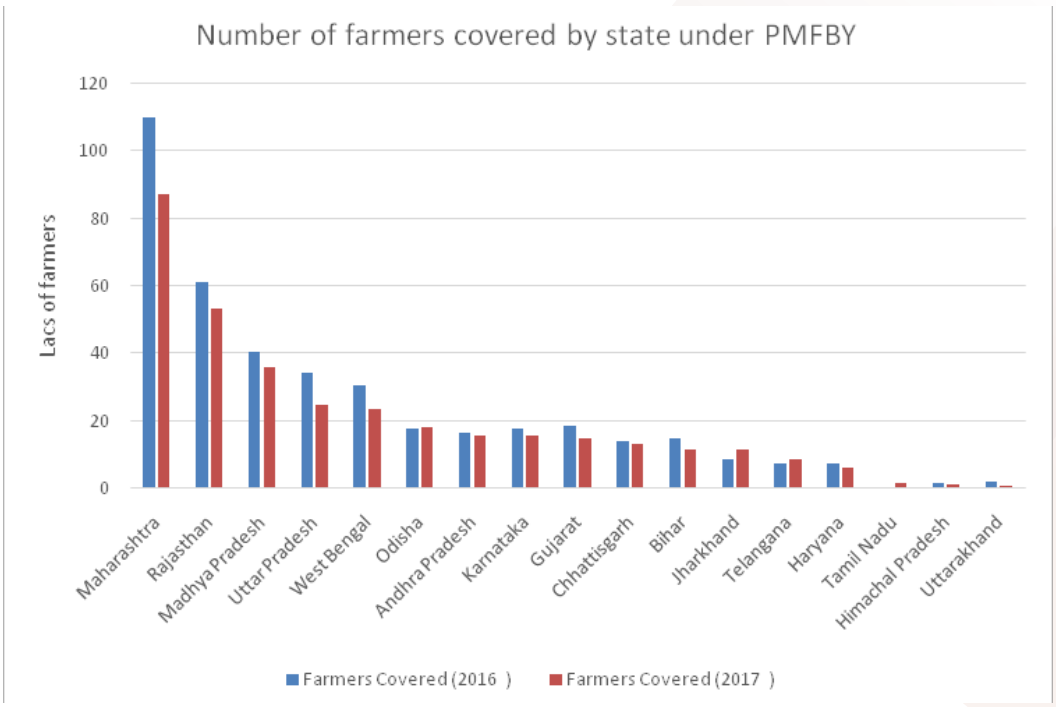

यह कृषि में जोखिम हस्तांतरण का सबसे आम रूप है, विशेष रूप से विकासशील देशों में जहाँ यह अक्सर जोखिम हस्तांतरण का एकमात्र रूप उपलब्ध है। बीमा एक अनुबंध है जिसमें पॉलिसी धारक बीमाकर्ता को एक प्रीमियम का भुगतान करता है। यदि अनुबंध में उल्लेखित कुछ प्रतिकूल घटनाएं होती हैं तो पॉलिसी धारक को कवरेज राशि का भुगतान मिलता है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) भारत में किसानों को सरकारी सब्सिडी वाली फसल बीमा प्रदान करती है। इस योजना ने राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (एनएआईएस) को प्रतिस्थापित किया जो इससे पहले अस्तित्व में थी। ग्राफ 2016 और 2017 (खरीफ सीजन) में विभिन्न राज्यों के लिए योजना द्वारा कवर किए गए किसानों की संख्या को दर्शाता है।

बीमा किसानों के लिए फसल की विफलता जैसी घटनाओं के खिलाफ एक उपयोगी उपकरण है, हालांकि यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बीमा मूल्य जोखिम वाले किसानों की मदद नहीं करता है, जो कि फसल की कीमत में गिरावट के कारण नुकसान का जोखिम है। मूल्य जोखिम को अन्य वित्तीय साधनों द्वारा प्रबंधित किया जा सकता है, जैसे कि अगले भाग में विस्तृत रूप में दिये गये डेरिवेटिव।

बी. व्युत्वन्न (Derivative):

व्युत्पन्न एक ऐसा वित्तीय साधन हैं, जिसका मूल्य निर्धारण उसकी अंतर्निहित संपत्ति से होता है। व्युत्पन्न का मूल्य इसलिए बदलता है क्योंकि अंतर्निहित संपत्ति की कीमत बदलती है। डेरिवेटिव मुख्यतः तीन प्रकार के है, अग्रिम (Forward), वायदा (Futures) और विकल्प (options)।

i. अग्रिम (Forward)

फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट विक्रेता और खरीदार के बीच एक निर्धारित मूल्य के लिए या निर्धारित मूल्य निर्धारण फॉर्मूले के अनुसार भविष्य में कुछ समय के लिए खरीदार को एक निर्धारित मात्रा देने के लिए होता है। इसलिए आगे के अनुबंध के नियम और शर्तें आमतौर पर प्रत्येक लेनदेन के लिए विशिष्ट हैं। उसकी फसल का अग्रिम विक्रय मूल्य तय करके,एक किसान मूल्य जोखिम को कम कर सकता है। बीमा के विपरीत, इन अनुबंधों में अनुबंध की शुरुआत में नकद हस्तांतरण की आवश्यकता नहीं होती है, हालांकि किसान फसल की सहमत मात्रा प्रतिपक्ष को देने के लिये प्रतिबद्ध रहते हैं।

ii. वायदा (Futures)

फ्यूचर्स कॉन्ट्रैक्ट्स को आगे की ओर मानकीकृत करने के तरीके के रूप में आविष्कार किया गया था। अपने सरलतम अर्थों में, एक वायदा अनुबंध एक मानकीकृत वायदा अनुबंध है जो एक्सचेंज ट्रेडेड है। इसलिए शुरू से ही इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि यह एक स्टॉक या कमोडिटी नहीं है, बल्कि स्टॉक की तरह व्यापार करने के लिए सोचा जा सकता है। एक वायदा अनुबंध का खरीदार (विक्रेता) एक निर्धारित अनुबंध में, एक निर्धारित भविष्य की तारीख पर एक वस्तु, सुरक्षा, मुद्रा, सूचकांक या अन्य निर्दिष्ट आइटम के एक विशिष्ट राशि पर खरीदने (बेचने) के लिए सहमत है। हालांकि, निर्धारित समय पर माल की वास्तविक बिक्री या खरीद की

आवश्यकता नहीं है। वायदा अनुबंध आमतौर पर एक विपरीत लेनदेन (ऑफसेट) करके बंद कर दिया जाता है, अर्थात वायदा का खरीदार अनुबंध की समाप्ति से कुछ समय पहले वायदा बेचता है।

iii. **विकल्प (Options)**

एक विकल्प अनुबंध खरीदने से विकल्प के धारक या खरीदार को सही (नोट: कोई दायित्व नहीं है) एक निर्धारित तिथि पर या एक निर्दिष्ट तिथि से पहले एक निर्धारित मूल्य के लिए एक वस्तु की निर्दिष्ट मात्रा खरीदने या बेचने के लिए है। यहाँ पर निदिर्ष्ट तिथि, वस्तु मात्रा एवं मूल्य मुख्य घटक है।

विकल्प एक किसान को न्यूनतम विक्रय मूल्य प्राप्त करने के आश्वासन के साथ प्रदान कर सकते हैं - वे इसलिए बीमा की तरह हैं। उपरोक्त बीमा के अलावा, विकल्प आकर्षक हैं क्योंकि वे किसान को अनुकूल मूल्य गति में भाग लेने की अनुमति दे सकते हैं। इसलिए विकल्प का उपयोग नकारात्मक पक्ष को संरक्षण प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, जबकि कुछ हद तक उल्टा क्षमता को बनाए रखना है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि एक किसान 2000 रुपये में 100 किलोग्राम गेहूँ बेचने का विकल्प खरीदता है। यदि गेहूँ का मूल्य 2000 रुपये से कम हो जाता है, तो किसान को विकल्प के कारण उस कीमत पर इसे बेचने का अधिकार है, हालाँकि यदि मूल्य 2000 रुपये से ऊपर बढ़ जाता है तो, किसान को विकल्प का उपयोग करने और खुले बाजार में उच्च मूल्य पर अपना गेहूँ बेचने का अधिकार नहीं है।

वायदा और अग्रिम के विपरीत, एक विकल्प खरीदार को एक अनुबंध में प्रवेश करने के लिए प्रीमियम का भुगतान करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि विकल्प नीचे की ओर सुरक्षा और ऊपर की ओर लाभ क्षमता दोनों प्रदान करते हैं।

4. जोखिम स्वीकार करना

जोखिम से निपटने का अंतिम तरीका व्यवसाय के लिए अपनी पुस्तकों पर जोखिम को स्वीकार करना है। यह विधि उन व्यवसायों के लिए प्रासंगिक है जिनके पास एक बड़ा जोखिम क्षमता है और साथ ही साथ नकारात्मक सुरक्षा प्रदान करने के लिए पर्याप्त पूंजी है। एक उदाहरण बैंक होगा जो अपनी बैलेंस शीट पर बड़ी मात्रा में ऋण रखते हैं। उनके लिए इन ऋणों के जोखिम को अपनी किताबों पर रखने के बजाय किसी अन्य पार्टी में स्थानांतरित करना बेहतर होता है, क्योंकि वे इतने बड़े परिमाण के जोखिमों को संभालने के लिए सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

जबकि यह विधि बैंकों या अन्य कंपनियों के लिए उपयुक्त हो सकती है, यह विधि आम तौर पर उन किसानों के लिए उचित नहीं है जो जोखिम से निपटने के लिए विशेषज्ञता या पूंजी से लैस नहीं हैं जो उन्हें व्यवसाय से बाहर धकेल सकते हैं।

उपसंहार

जोखिम प्रबंधन भारत सहित विकासशील देशों में कृषि का एक महत्वपूर्ण और अक्सर उपेक्षित हिस्सा है। जबकि किसानों को अपना व्यवसाय बढ़ाने में मदद करने के लिए क्रेडिट इन्फ्यूजन और उर्वरक सब्सिडी जैसे विकास उपाय महत्वपूर्ण हैं। स्वस्थ जोखिम प्रबंधन प्रथाओं से यह सुनिश्चित करने के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए कि, किसान अप्रत्याशित घटनाओं के कारण व्यवसाय से बाहर न हों। जबकि विकासशील देशों में सरकारें पीएमएफबीवाई जैसे जोखिम प्रबंधन के लिए कुछ साधन प्रदान करती हैं, वित्तीय बाजारों को उनकी बेहतर विशेषज्ञता और कुशल संचालन के कारण जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए बेहतर स्थान दिया जा सकता है, जो ऑफलोडिंग जोखिम की कीमतों को कम कर सकते हैं।

वित्तीय जोखिम प्रबंधन की गहन एवं व्यापक शिक्षण द्वारा भारत में कृषि क्षेत्र को सशक्त बना कर सतत विकास की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

संदर्भ:

1. मयोंग गू कांग और नयना महाजन (2006)। कृषि मूल्य जोखिम प्रबंधन के लिए बाजार आधारित उपकरणों का परिचय
http://www.fao.org/3/ap308e/ap308e.pdf

2. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (2016, 2017) के तहत बीमित किसानों का राज्यवार विवरण
https://data.gov.in/resources/state-wise-farmers-benefitted-under-pradhan-mantri-fasal-bima-yojana- pmfby-after-2016-17

3. लर्नर जेएस और केटनर डी (2001)। भय, क्रोध और जोखिम। व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान की पत्रिका, 81 (1), 146 - 1561

1. भारत सरकार ने कृषि में मूल्य स्थिरीकरण के लिए क्या प्रयास किए हैं?

2. व्यापार में जोखिम से निपटने का सबसे सरल तरीका क्या है?

3. कृषि में जोखिम हस्तांतरण का सबसे सामान्य रूप कौन सा है?

4. कौन से वित्तीय उपकरण एक अंतर्निहित परिसंपत्ति से अपना मूल्य प्राप्त करते हैं

कैरियर विकास हेतु स्व: कौशल निर्माण

प्रस्तावना

भारत को अपने छात्रों को रोजगार में कौशल और जागरूकता के साथ तैयार करना चाहिए, ताकि वे देश में उद्यमिता विकास में नेतृत्व कर सकें। भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। आज की तेज गति वाली दुनिया में, किसी व्यक्ति की प्रोफ़ाइल की व्यवहारिता को बढ़ाने के लिए कौशल निर्माण एक अनिवार्य अभ्यास है। युवाओं की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एप्टीट्यूड, स्किल्स एंड नॉलेज (ASK) बिल्डिंग समय की जरूरत है।

कठोर कौशल बनाम नरम कौशल

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, कठोर और नरम कौशल दोनों की अपनी भूमिका एवं महत्व है।

कठोर कौशल बनाम नरम कौशल के बीच तीन प्रमुख अंतर

1. नरम और कठोर कौशल के लिए दाहिने और बाएं मस्तिष्क के कार्यों की प्रमुख भूमिका होती है। कठोर कौशल बुद्दि गुणक (Intelligence Quotient) का प्रतिनिधित्व करते हैं और नरम कौशल भावनात्मक गुणक (Emotional Intelligence Quotient) का प्रतिनिधित्व करते हैं। गणित, रसायन विज्ञान, सांख्यिकी जैसे विषय कठोर कौशल के उदाहरण हैं। जबकि आत्म-सम्मान, क्रोध प्रबंधन और पारस्परिक संबंध नरम कौशल के उदाहरण हैं।
2. मुख्य रूप से कठिन कौशल समान होंगे। उदाहरण के लिए, गणित के नियम वही होंगे जहाँ आप जाते हैं और अध्ययन करते हैं। नरम कौशल परिस्थितिजन्य हैं। आइए हम पारस्परिक संबंधों का उदाहरण लेते हैं। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, स्थितियों में बदलता है, और संवाद करने की क्षमता पर भी निर्भर करता है।
3. भारत में स्कूल कठोर कौशल को अधिक महत्व देते हैं और नरम कौशल पर कम ध्यान केंद्रित करते हैं। परीक्षा और प्रमाणपत्र के माध्यम से कठोर कौशल को मापा जा सकता है। नरम कौशल प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। वे स्थितिजन्य कौशल हैं।

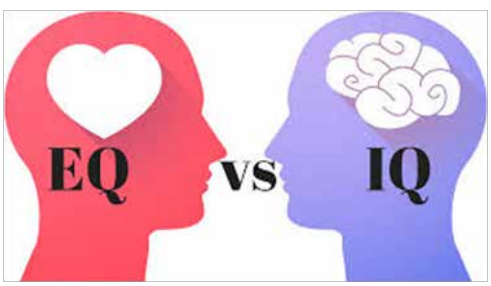

भारतीय विश्वविद्यालय कठोर कौशल के साथ-साथ नरम कौशल को भी शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं। संतुलित पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने में समय लग सकता है। तब तक छात्रों को अपने नरम कौशल को बढ़ाने की जवाबदेही लेनी चाहिए। हमारे कार्यों को नियंत्रित करने से हमें सफल होने में मदद मिलेगी। नरम कौशल सेट पर सुधार करने के कई तरीके हैं। पहला कदम कमजोरियों की पहचान करना और उन पर काम करना है। लक्ष्य प्राप्ति की चाहत रखने वाले (Go-getters) कौशल के महत्व को समझते हैं और इसे अपने जीवन के तरीके के रूप में बनाते हैं। आज की दुनिया में, नरम कौशल आपके द्वारा चुने गए क्षेत्र के बावजूद अपरिहार्य हैं। अत: प्रत्येक क्षेत्र में नरम कौशल अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

तकनीकी कौशल (टेक्निकल स्किल्स) V/S जन कौशल (पीपुल्स स्किल्स)

व्यवसाय को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

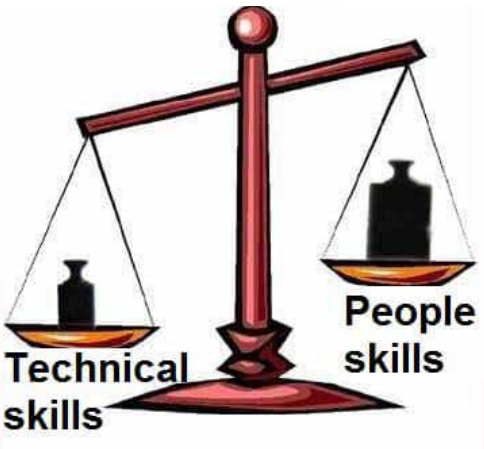

1. इस प्रकार के व्यवसाय जहाँ कठोर कौशल की मुख्यत: आवश्यकता होती है तथा निम्न स्तर पर नरम कौशल भी जरुरी है (उदाहरण: भौतिक विज्ञानी); यह वह जगह है जहाँ आप प्रतिभाशाली लोगों को देखते हैं जो शायद दूसरों के साथ आसानी से काम नहीं करते हैं, तथा अकेले ही कार्य करना पसंद करते है, उदाहरण के लिए अल्बर्ट आइंस्टीन।
2. ऐसे व्यवसाय (कैरियर) जहाँ कठोर एवं नरम कौशल दोनों सामान रूप से अनिवार्य है। (उदाहरण: बैंकर्स, वकील - उन्हें नियमों को जानने की आवश्यकता है, लेकिन उन्हें एक उत्कर्ष कैरियर के लिए ग्राहक बनाने की आवश्यकता है। ग्राहकों के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए उत्कृष्ट कौशल जैसे अनुनय कौशल, अंतर वैयक्तिक संबंध कौशल आदि की आवश्यकता होती है ...)
3. ऐसे व्यवसाय जहाँ मुख्यत: नरम कौशल की आवश्यकता है तथा निम्न स्तर पर कठोर कौशल भी जरुरी है (उदाहरण: विपणन प्रबन्ध (मार्केटिंग मैनेजमेंट)। किसी को प्रोडक्ट की गहराई से जानकारी नहीं होती। उसका काम मुख्य रूप से ऑब्जर्वेशन, कम्यूनिकेशन, बातचीत, कंफ्यूजन आदि पर निर्भर करता है। ये सभी स्वभाव से नरम कौशल होते हैं।

नरम कौशल क्यों?

नरम कौशल एक समाजशास्त्रीय शब्द है, जिसकी पहचान किसी व्यक्ति के भावनात्मक गुणक (Emotional Quotient) से होती है, जो व्यक्तित्व लक्षणों, सामाजिक ग्रन्थियों, संचार, भाषा, व्यक्तिगत आदतों, मित्रता और अन्य लोगों के साथ संबंध बनाने वाले आशावाद को दर्शाता है। नरम कौशल एवं कठोर कौशल परस्पर पूरक है, जो कि नौकरी और कई अन्य गतिविधियों की व्यावसायिक आवश्यकताएं हैं। (विकिपीडिया)

विगत वर्षों में, नरम कौशल और विशेष रूप से संचार कौशल पर जोर दिया गया है। प्रस्तुतिकरण कौशल, रिपोर्ट लेखन, टीमवर्क और समय/ परियोजना प्रबंधन जैसे मूलभूत विषयों पर सबसे बड़ा केंद्र बिंदु रखा गया है। इस तथ्य के बावजूद कि यह परिवर्तन निश्चित रूप से एक उच्च-गुणवत्ता वाला है, ये मापांक (मॉड्यूल) शिक्षित करने और सफलतापूर्वक मापने के लिए अतिरिक्त कठिन प्रतीत होते हैं।

जीवनप्रद अतिमहत्वपूर्ण रोजगार कौशल

रोज़गार कौशल (Employability Skills)

कैरियर के विकास के लिए, रोजगार कौशल आवश्यक हैं। उन्हें जन कौशल (पीपुल्स स्किल्स) या नरम कौशल (सॉफ्ट स्किल) भी कहा जाता है। रोजगार कौशल मुख्यत: निम्न में मदद करते है;
बेहतर संचार

- समस्या को सुलझाने की क्षमता
- टीम के भीतर योगदानकर्ता के रूप में बेहतर समझ
- उचित एवं ठोंस निर्णय लेने की क्षमता, और
- चुने गए कैरियर में सफलता

मूलभूत कौशल (Fundamental Skills)

- संगठनात्मक कौशल
- समय प्रबंधी कौशल
- विश्वसनीयता
- सकारात्मक रवैया
- धैर्य और दृढ़ता

- पूछताछ सम्बन्धी और प्रशन करक कौशल (Questioning skills)
- नमनीयता और अनुकूलनीयता
- संगठनात्मक दिशानिर्देशों को समझना।
- शिष्टाचार (सामाजिक, कार्यस्थल, व्यवसाय आदि)

पारस्परिक कौशल (Interpersonal Skills)

- सौहार्दपूर्ण रहें
- कार्य स्थान का सम्मान करें
- समय पर प्रतिक्रिया
- आलोचना की स्वीकृति
- संगर्ष प्रबंधन (Conflict Management)
- तनाव प्रबंधन

मौखिक और लिखित संचार (Oral Written Communication)

- भाषा के व्याकरण को समझें
- लिखित संचार (पत्र, ई-मेल, रिपोर्ट आदि।)
- सवाल सुनें, समझें और पूछें
- समूह चर्चा में भाग लें
- प्रभावी प्रस्तुतियाँ दें
- एक निडर सार्वजनिक वक्ता बनें

समस्या का समाधान और महत्वपूर्ण सोच (Problem Solving Critical Thinking)

- परिवर्तन प्रबंधन
- अनुकूलन क्षमता
- पहल करना
- पूछताछ एवं प्रशन कारक कौशल

टीम वर्क (Team Work)

- बहुसांस्कृतिक कौशल

- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
- टीम के लक्ष्यों को समझना
- टीम के लक्ष्यों के साथ संरेखण में व्यक्तिगत भागीदारी (Alignment with the team goals)

विशिष्ट कौशल (Specialized Skills)

उपरोक्त कौशल आपको नौकरी पाने में मदद करेंगे और नौकरी में बने रहने के लिए भी। लेकिन अगर कोई अपने कैरियर में ऊपर बढ़ना चाहता है, तो उन्हें निम्नलिखित विशेष कौशल पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- बहु कार्यण
- नए क्षेत्रों की खोज
- परिकलित जोखिम लेना
- पहल करना
- मिशन और अपने नियोक्ता की दृष्टि के साथ मिलकर काम करना

नेतृत्व (Leadership)

- परामर्श कौशल
- सोदेबजी का कौशल (Negotiation Skills)
- टीम प्रबंधन कौशल
- धन प्रबंधन कौशल

इन नरम कौशल को रोजगार के विभिन्न चरणों में जाँचा एवं परखा जाता है। छात्रों को विजयी लेखन लिखना सीखना चाहिए, समूह चर्चा में भाग लेना चाहिए और वीरता के साथ साक्षात्कार का सामना करना चाहिए।

स्व: विवरण लेखन (Resume Writing)

रिज्यूम या पाठ्यक्रम विटे (सीवी) में किसी की शैक्षणिक योग्यता, कार्य अनुभव, पुरस्कार शौक आदि शामिल हैं।

आपका रिज्यूम आमतौर पर आपके पहुँचने से पहले आपके भावी नियोक्ताओं तक पहुँच जाता है। क्यों की यह अपने आप को और अपने कौशल को उजागर करने के लिए एक प्रभावी उपकरण है, अत: आपको त्रुटि मुक्त रिज्यूम तैयार करने पर काफी समय बिताने की आवश्यकता है, जो की नियोक्ता का ध्यान आकर्षित करेगा एवं आपको नौकरी दिलायेगा। आपके रिज्यूम में आपकी

प्रोफाइल को सबसे अच्छा होना चाहिए। यह संभावित नियोक्ता को प्रभावित करने वाला संभावित तरीका है।

समूह चर्चा (Group Discussion)

अधिकांश संगठनों में कार्य संस्कृति विगत कुछ वर्षों में बदल गई है। कर्मचारियों को एक टीम के रूप में एक साथ काम करने की आवश्यकता होती है। टीम वर्क विभिन्न प्रकार के कौशल जैसे नेतृत्व, संचार कौशल, संघर्ष प्रबंधन और पारस्परिक कौशल का आह्वान करता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हर कोई इन कौशल और क्षमताओं को विकसित करे, ताकि काम पर एक प्रभावी टीम खिलाड़ी बन सके।

नियोक्ता को यह निर्धारित करने की आवश्यकता होती है, अगर एक उम्मीदवार जिसने किसी पद के लिए आवेदन किया है, उसके पास कौशल और वह नौकरी के लिए वांछनीय है। इस प्रकार उम्मीदवारों को अक्सर समूह चर्चा में भाग लेने के लिए कहा जाता है, मुख्य रूप से उनके समूह-योग्यता का निर्धारण करने के लिए। उम्मीदवारों का मूल्यांकन निम्नलिखित कारकों पर किया जाता है:

- समूह में फिट होने की क्षमता
- समूह को प्रभावित करने की क्षमता
- समस्याओं को हल करने की क्षमता
- प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता
- तनावपूर्ण स्थिति में शांत और रचित रहने की क्षमता
- सकारात्मक रहने की क्षमता, भले ही उसके विचारों को स्वीकार या अस्वीकार कर दिया गया हो

नौकरी का साक्षात्कार (Job Interviews)

बहुत से लोग तनाव महसूस करते हैं और नौकरी के साक्षात्कार के विचार से ही परेशान एवं बेचैन हो जाते हैं। लेकिन, यह एक सुखद अनुभव हो सकता है, यदि आप इसे अपने कौशल और क्षमताओं को प्रदर्शित करने के अवसर के रूप में सोचते हैं, और यदि आप इसके लिए अच्छी तरह से तैयार करने की चेष्टा करते हैं तथा इसमें आनंद लेते है।

तैयारियों में शामिल विभिन्न चरणों की कुंजी है साक्षात्कार प्रक्रिया:

- परिचय
- साक्षात्कारकर्ता द्वारा प्रश्न
- साक्षात्कारदाता द्वारा उत्तर
- समापन

उपसंहार

संचार कौशल और नरम कौशल हर किसी के लिए विभिन्न लोगों और स्थितियों के साथ कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से बातचीत करने के लिए आवश्यक हैं। संचार कौशल और नरम कौशल पारंपरिक योग्यता और तकनीकी कौशल या व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए कठोर कौशल से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। तकनीकी कौशल पासपोर्ट की तरह है, लेकिन एक नरम कौशल पासपोर्ट में उच्च उड़ान भरने के लिए मुहर लगा हुआ वीजा (Visa) की तरह है।

व्यवहारिक अभ्यास

A.आपके पास जो चार कौशल हैं उन्हें सूचीबद्ध करें

कठोर कौशल (हार्ड स्किल)	नरम कौशल (सॉफ्ट स्किल्स)
1._____	1._____
2._____	2._____
3._____	3._____
4._____	4._____

सही/ गलत:

1. अकेले कठोर कौशल से आपको नौकरी मिलेगी। (सही/ गलत)
2. तैयारियां साक्षात्कार के लिए महत्वपूर्ण है। (सही/ गलत)
3. पारस्परिक कौशल, सम्बन्ध निर्माण के लिए आवश्यक हैं। (सही/ गलत)
4. समूह में फिट होने की क्षमता का आकलन रिज्यूम की मदद से किया जाता है। (सही/ गलत)
5. मार्केटिंग की नौकरियां कठिन कौशल पर आधारित होती हैं। (सही/ गलत)
6. नरम कौशल की तुलना में भौतिकविदों को कठिन कौशल की अधिक आवश्यकता होती है। (सही/ गलत)

संदर्भ

1. http://bemycareercoach.com/soft-skills/hard-skills-soft-skills.html
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Soft_skills
3. http://www.isaca.org/chapters2/kampala/newsandannouncements/Documents/Hard%20and%20Soft%20Skills.pdf
4. https://community.siena.edu/assets/images/general/Hard%20Truth%20about%20Soft%20Skills-%20Stš%20 मार्टिन% 2C% 20D.pdf
5. https://research.stlouisfed.org/publications/page1-econ/2016/05/02/soft-skills-success-may-depend-on-them/
6. https://virtualspeech.com/blog/importance-of- संचार कौशल

1. अपने नरम कौशल में सुधार करने के लिए मेरा पहला कदम क्या होना चाहिए?

2. कौन से कैरियर के लिए कठोर और नरम दोनों कौशल की आवश्यकता होती है?

3. रोजगार कौशल का दूसरा नाम क्या है?

4. अपनी समूह योग्यता निर्धारित करने के लिए मुझे किस गतिविधि में भाग लेना चाहिए?

5. मुझ से पहले मेरे भावी नियोक्ता तक क्या पहुँचता है?

कैरियर विकास में मीडिया की प्रभावशाली भूमिका

प्रस्तावना

आज की वैश्वीकृत दुनिया में मीडिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम संचार के लिए बड़े पैमाने पर मीडिया का उपयोग करते हैं। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि युवाओं में उनकी जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मीडिया का प्रयोग कैरियर के विकास में भी किया जाना चहिये।

कोई व्यक्ति मुफ्त ऑनलाइन शिक्षा वेबसाइटों का उपयोग करके शीर्ष पायदान विश्वविद्यालयों से प्रमाणित होकर छात्र ज्ञान वर्धन और कौशल अद्यतन (अपडेट) कर सकता है। इससे उन्हें अपने रिज्यूम/ सीवी में मूल्य संवर्धन (value addition) में मदद मिलती है।

मुफ्त ऑनलाइन शिक्षा के लिए शीर्ष वेबसाइटों की सूची:

1. https://www.coursera.org/
2. https://www.edx.org/
3. https://www.khanacademy.org/
4. https://www.udemy.com/
5. https://www.open.edu/itunes/
6. https://ocw.mit.edu/index.htm
7. http://www.openculture.com/freeonlinecourses
8. http://mooc.org/

अपने सीवी या रिज्यूमे का उचित निर्माण के लिये एक सावधानीपूर्वक योजना और आयोजन कौशल की आवश्यकता होती है। रिज्यूमे/ सीवी निर्माता छात्रों को इसे आसान और शीघ्र बनाने में मदद करते हैं। आपके द्वारा लिखे गए स्व: विवरण (CV or Resume) को विशेषज्ञ परामर्श द्वारा सुधारा भी जाता है।

शीर्ष साइटें अपने रिज्यूम/ सीवी को मुफ्त में लिखने / समीक्षा करने के लिए:

1. https://zety.com/
2. https://www.resumonk.com/
3. https://www.resume.com/builder
4. https://www.visualcv.com/

5. https://cvmkr.com/
6. https://resumegenius.com/
7. https://novoresume.com/
8. https://resumup.com/

बेंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा, तैयारी करने में विफल रहने से, आप असफल होने के लिए तैयार हैं। यह साक्षात्कार की तैयारी के लिए सही है। बारीकियों को समझना आपको अपने सपने की नौकरी या व्यवसाय प्राप्ति में सहायता करेगा।

उपसंहार

कैरियर चुनना चुनौतीपूर्ण काम हो सकता है। आपको अपने कौशल और रुचि का आकलन करना चाहिए, बाजार का अध्ययन करना चाहिए और अंतिम निर्णय लेने से पहले एक अनुभवी व्यक्ति से परामर्श करना चाहिए।

साक्षात्कार की तैयारी के लिए शीर्ष वेबसाइटें:

1. https://www.ambitionbox.com/
2. https://acetheinterview.herokuapp.com/
3. https://www.interviewbest.com/
4. https: //www.indiabix.com/

अंत में अपनी प्रोफ़ाइल को बढ़ावा देना आपके सपने के कैरियर का प्रवेश द्वार है।

अपने कैरियर के विकास के लिए शीर्ष 10 वेबसाइटों की सूची:

1. https://www.linkedin.com
2. https://www.indeed.co.in/
3. https://www.naukri.com/
4. https://www.timesjobs.com/
5. https://www.job-hunt.org/
6. https://www.monsterindia.com/
7. https://www.careercloud.com
8. https: //www.jibberjobber.com/login.php

1

मुझे मुफ्त ऑनलाइन शिक्षा के लिए किस साइट पर जाना चाहिए ?

2

कौन सी साइटें मुझे मुफ्त में अपना cv लिखने/ समीक्षा करने में मदद करेंगी?

3

अरे! इंटरव्यू आ रहा है, तैयारी के लिए साइटों का सुझाव दें

4

मेरे कैरियर के विकास में कौन सी वेबसाइटें मेरी मदद करेंगी?

टीम कार्य एवं टीम निर्माण के आधारभूत तत्त्व

प्रस्तावना

जब किसी व्यवसाय की शुरुआत होती है, तो सर्वप्रथम समूह में कार्य करने की दक्षता ही अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। अत: एक सफल उद्यमी बनने के लिये समूह में कार्य करना, समूह संरचना को समझना एवं समूह लक्ष्य को निर्धारित कर उनको प्राप्त करना ही एक बढ़ोतरी का कदम है।

क्या आप उन्हें पहचानते हैं?

1. स्टीफन वोज्नियाक (Apple)
2. पॉल गार्डनर एलन (Microsoft)
3. सचिन बंसल और बिन्नी बंसल (Flipkart)
4. लैरी पेज और सर्गेई ब्रिन (Google)

उपरोक्त सभी लघु उद्योग शुरू करने वाले उद्यमियों के उदाहरण हैं, जो अब दिग्गज बन गए हैं। ये संगठनों के विकास में टीमवर्क के प्रभाव के उदाहरण भी हैं।

टीम किस लिये?

ब्रूस टकमैन द्वारा टीम के मंच

ब्रूस टकमैन ने वर्ष 1965 में टीमवर्क के पाँच चरणों को चिन्हित एवं विकसित किया। टीम के पोषण, चुनौतियों का सामना करने, उत्तर खोजने और परिणाम देने के लिए ये चरण आवश्यक हैं।

क्या आप किसी टीम का भाग हैं?

ये सवाल पूछें:

- टीम का उद्देश्य क्या है?
- मेरे साथी कौन हैं?
- हमारे पास किस तरह की शक्ति होगी?
- भाग लेने के लिए प्रोत्साहन क्या है?
- भाग न लेने के लिए हम क्या कीमत अदा करते हैं?

ये कुछ सवाल हैं, जो टीम के काम में भाग लेने के लिए हमारे मष्तिष्क में हलचल करते हैं।
हालांकि, कभी-कभी हम एक टीम में भागीदारी को अस्वीकार करने की स्थिति में नहीं होते हैं। परन्तु टीम में सदभागिता की प्रेरणा कई कारकों के आधार पर निर्भर कर सकती है। नीचे सूचीबद्ध कुछ कारक हैं:

टीम प्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक

I. उद्देश्य (Purpose)

उद्देश्य या मिशन महत्वपूर्ण है। दीर्घकालिक प्रेरणा के लिए, उद्देश्य प्रेरक कारक के रूप में कार्य करता है और सदस्य अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और आवश्यकताओं के साथ संरेखित होते हैं। यदि यह स्पष्ट है, तो वे कार्य के लिए प्रेरित होते हैं। यदि यह स्पष्ट नहीं है, तो प्रेरणा समाप्त हो सकती है या कम हो सकती है।

II. चुनौती (Challenge)

एक और शब्दावली जो हम पूछताछ करते समय आदतन सुनते हैं। समूह प्रेरणा लगभग एक चुनौती है। जब चुनौती दी जाती है, तो हमारे प्रतिरोधों को दिशा के अर्थ में स्थानांतरित करने के लिए प्रेरित किया जाता है .... धमकी से बचाने के लिए या सीधे इसे संबोधित करने के लिए।

कई व्यक्तियों को लगता है कि समूह का सामना एक चुनौती से होता है। यह उन कहानियों पर नियमित रूप से अमिट टीमों की पकड़ में रहा है, जिन्होंने हिम्मत के साथ चुनौती दी थी। चुनौती एक प्रेरणा के रूप में प्रकट हुई।

काम के उचित माहौल के भीतर, ये चुनौतियाँ शायद ही कभी होती हैं। टीमों को हर दिन मजबूत

करने वाली चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता है। इसलिए, नियमित अंतराल पर चुनौतियों की आपूर्ति करने के लिए मंथन आवश्यक है। प्रगति शील टीमों में उकसावे को एक प्रेरणा स्त्रोत के रूप में देखना भी एक रणनिति है।

III. ज़िम्मेदारी (Responsibility)

जवाबदेही जटिल हो सकती है। जिम्मेदारी परिवर्तनों को करने की शक्ति देती है। जिन टीमों में कर्तव्यनिष्ठा और शक्ति है, वे लंबी अवधि के लिए प्रेरणा को बनाए रखने के लिए तत्पर रहते हैं।

IV. विकास (Growth)

व्यक्तिगत और समूह विकास टीम प्रेरणा बनाए रखने के लिए एक और आधार दे सकता है। जब लोग महसूस करते हैं कि वे आगे बढ़ रहे हैं, आधुनिक अवधारणाओं की खोज कर रहे हैं, अपने कौशल आधार से संबंधित हैं और अपने ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं, तो प्रेरणा लंबे समय तक बनी रहती है। व्यक्तिगत विकास में आत्म-सम्मान और आत्म-छवि में सुधार करना शामिल है।

उचित रूप से, टीमों और उनके नेताओं को एक मौका तलाशना चाहिए जो उनके ज्ञान और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए प्रदान करता है। एक महान रणनीति यह हो सकती है, की टीम कार्मिको से पूछना चाहिए कि समूह के साथ उनकी संबद्धता विकास के अवसरों को कैसे बढ़ायेगी।

V. नेतृत्व (Leadership)

एक अच्छा नेता अल्पावधि के भीतर प्रेरणा का उत्प्रेरक हो सकता है, लेकिन सर्वोतम नेता समूह को स्वयं को प्रेरित करने के लिए परिस्थितियाँ बनाता है। वे व्यक्तियों को उनकी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करते हैं। असाधारण नेता न केवल टीम के लक्ष्य के महत्व को समझते हैं, बल्कि उनकी टीम के सदस्यों की जरूरतों को भी समझते हैं। एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए एक वातावरण तैयार करते हैं।

अंत में, एक प्रभावी टीम के खिलाड़ी के गुण क्या हैं?

एक प्रभावी टीम खिलाड़ी को अनिवार्य रूप से टीम में फिट होने के लिए कुछ गुणों के अधिकारी होने की आवश्यकता होती है। एक गुणी टीम खिलाड़ी टीम का मूल्य वर्धन करेंगे। एक प्रभावी टीम खिलाड़ी के गुण निम्नलिखित हैं।

1. निर्भरता प्रदर्शित करता है
2. रचनात्मक रूप से संवाद करता है
3. एक सक्रिय श्रोता

4. खुले संचार का अभ्यासकर्ता
5. पहल करता है
6. लचीलापन और अनुकूलन क्षमता दिखाता है
7. प्रतिबद्धता
8. समय पर समस्या निवारण

बोलने की गतिविधि

1. छोटे समूहों में जाओ। अपनी टीम के लिए एक दिलचस्प नाम पर चर्चा करें और फैसला करें। फिर नाम की घोषणा करें और अन्य टीमों को आपकी पसंद का कारण बताएं।

_____
_____
_____

2. चर्चा करें और पता करें कि एक टीम के रूप में आपके पास क्या है। अन्य टीमों के साथ अपनी सामान्य बातें साझा करें।

_____
_____
_____

3. एक फिल्म के बारे में अपने टीम के सदस्यों के साथ चर्चा करें जिसमें टीम वर्क शामिल हो। फिल्म में टीम के खिलाड़ियों के गुणों को सूचीबद्ध करें।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा है कि, समूह जिसको उद्यमिता के परिप्रेक्ष्य में टीम कहते है एवं सफलता की कुंजी है। टीम वर्क प्रारंभ होने से पहले टीम के सदस्य एकत्र होकर अपने आप को टीम में संयोजित कर लेते है तथा एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अग्रसर हो जाते है। हमने यह भी जाना कि अच्छा टीम सदस्य एवं टीम लीडर होने के लिये कुछ विशिष्ट गुणों की आवश्यकता होती है।

1. फ्लिपकार्ट के सह-संस्थापक कौन हैं?

2. टीम वर्क के 5 चरणों को किसने विकसित किया?

3. मुझमें प्रेरणा देने की क्षमता किसके पास है?

4. परिवर्तन करने के लिए क्या शक्ति देता है?

5. टीम अथवा समूह के किस चरण में सदस्य शत्रुतापूर्ण हो जाते हैं?

भावी उद्यमियों के लिए उपयोगी ऑनलाइन संसाधन एवं उपकरण

प्रस्तावना

एक उद्यमी होने के नाते, आपको अपने समय का प्रबंधन करना होगा और समस्या हल करना होगा। आपको एक टीम में काम करने की आवश्यकता है, जो आपके द्वारा प्रबंधित की जा सकती है। एक टीम में, प्रत्येक सदस्य को आवंटित कार्यों पर काम करने की आवश्यकता होती है, और उन्हें एक कुशल तरीके से सभी संसाधनों का प्रबंधन करना होता है। इन सभी कार्यों को करने के लिए कुछ पारंपरिक तरीके हो सकते हैं, लेकिन प्रौद्योगिकी में प्रगति सब कुछ स्मार्ट उपयोग करने में आसान बनाती है।

इस अध्याय में, हम टीम के काम करने, दस्तावेज़ साझा करने, पेशेवर नेटवर्किंग और ऑनलाइन सीखने से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण ऑनलाइन टूल के बारे में चर्चा करेंगे। इसके अलावा, कई ऑनलाइन संसाधन उपलब्ध हैं जो सफल उद्यमियों की रणनीतियों को समझने में मदद करते हैं या उनकी सफलता में योगदान करने वाले नवीन तरीकों को प्रभावी रूप से लागू करना शुरू करते हैं।

ए. समय प्रबंधन और दस्तावेज़ साझा करना

एप्लीकेशन का नाम	उत्साही उद्यमी के लिए उपयोगिता
EISENHOWER https://www. eisenhower.me/ https://app.eisenhower.me/	आईजन होवर (EisenHower) एक ऑनलाइन एप्लिकेशन है, जो आपको कार्य लिस्ट (to-do-list) को प्राथमिकता देने और ट्रैक करने में मदद करता है। यह आपको अपने को क्लाउड में सहेजने की अनुमति भी देता है। चीजों को प्राथमिकता देने के लिए आईजन होवर मैट्रिक्स पद्धति का पालन करें। आप आइजनहावर मैट्रिक्स का उपयोग करने के लिए प्रिंट करने योग्य टेम्पलेट डाउनलोड कर सकते हैं।
asana https://asana.com/	आसना (asana) सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले कार्य प्रबंधन उपकरण में से एक है। यदि आप टीमों में काम कर रहे हैं, तो यह आपकी टीम को उद्देश्यों पर केंद्रित रहने के लिए बनाता है। यह आपकी टीम के लिए दैनिक कार्यों को प्राथमिकता देने में भी सहायक होगा। आसन बेसिक एक मुफ्त संस्करण है, जिसमें 10+ बुनियादी विशेषताएं शामिल हैं, जो सफल उद्यमियों के विकास में मदद करती हैं।

Google Keep https://keep.google.com/	गूगल कीप (Google keep) नोट लिखने एवं प्रबंध के लिये एक मुफ्त सेवा है। आप नोट्स कैप्चर कर सकते हैं, रिमाइंडर सेट कर सकते हैं, सूची बना सकते हैं। गूगल कीप द्वारा जारी किए गए नोटों को कभी भी, कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है, और इसे आपकी टीम के साथ भी साझा किया जा सकता है।
Basecamp https://basecamp.com/	बेसकैंप (Basecamp) मूल रूप से परियोजना प्रबंधन और टीम संचार उपकरण है, जो टीम के बीच संसाधनों को साझा करने में मदद करता है। बेसकैंप पर्सनल एक सीमित संस्करण है, लेकिन व्यक्तिगत परियोजनाओं और छात्रों के लिए मुफ्त है।
Evernote https://evernote.com/	एवरनोट (Evernote) एक डिजिटल नोट लेने वाला ऐप है। यह डिजिटल स्क्राइबिंग पैड के रूप में काम करता है। यह नोट्स लेने, वेब लिंक कैप्चर करने, पिक्चर्स कैप्चर करने में मदद करता है और यह रिमाइंडर्स को व्यवस्थित रहने में मदद करेगा। विचारों को डिजिटल बनाने की प्रक्रिया में भी सहायक है।
Dropbox https://www.dropbox.com/	यदि आप टीम में काम करना चाहते हैं, तो ड्रॉपबॉक्स (dropbox) सबसे शानदार उतम समाधानों में से एक है। ड्रॉपबॉक्स का मूल संस्करण आपको टीम फ़ाइलों, सामग्री को क्लाउड में बनाने और संग्रहीत करने और अद्यतन करने में मदद करता है और यह टीम सामग्री को आसानी सुलभ बनाने के लिए केंद्रीकृत भी कर सकता है। ड्रॉपबॉक्स को आपकी टीमों के काम को कहीं से भी कभी भी एक्सेस करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
we transfer https://wetransfer.com/	वी ट्रान्सफर (We transfer) ऑनलाइन फाइल शेयरिंग एप्लीकेशन है। यह एक समय में आपकी टीम को बड़े आकार (2 जीबी तक) की फाइलें इ-मेल द्वारा साझा कर सकता है।
Google Drive https://www.google.com/drive/	गूगल ड्राइव (Google drive) एक ऑनलाइन फ़ाइल संग्रहण सेवा है, जो जी-मेल द्वारा धारको को ही मिलती है। यह ऑनलाइन फ़ाइल सहयोग और सिंक्रनाइज़ेशन को सक्षम बनाता है। गूगल ड्राइव 15 जीबी क्लाउड स्टोरेज स्पेस मुफ्त में प्रदान करता है और प्रीमियम भुगतान वाली सेवाएं भी प्रदान करता है। यह एक बेहतरीन सेवा है।

draw.io https://www.draw.io/	ड्रा-डॉट-आईओ (draw.io) एक मुफ्त स्रोत उपकरण है, जो आपको आरेख, फ़्लोचार्ट, संगठनात्मक चार्ट और नेटवर्क आरेख को डिज़ाइन करने में मदद करता है। यह आपकी आवश्यकता के अनुसार कस्टमाइज़ किए गए व्यवसाय से संबंधित मॉडल की विस्तृत श्रृंखला भी प्रदान करता है। यह आपको ग्राफिकल टाइम लाइन, संगठनात्मक संरचना और मुफ्त में बिजनेस मॉडल बनाने में मदद करेगा।

बी. व्यावसायिक नेटवर्किंग

एप्लीकेशन का नाम	उत्साही उद्यमी के लिए उपयोगिता
BLUETIE https://www.bluetieglobal.com/	ब्लूटाई (Bluetie) एक पेशेवर और व्यावसायिक नेटवर्किंग अनुप्रयोग है और आपको उन विभिन्न व्यवसायियों से मिलने में मदद करता है, जिसके उद्देश्य आपके साथ मेल खाते हैं। यह विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञो से भी मिलने का एक उचित माध्यम है।
letslunch https://letslunch.com/	लेटअस-लंच (Letslunch) एक पेशेवर नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म है जो समान विचारधारा वाले लोगों को मिलाने में सक्षम है। यह ज्यादातर उद्यमियों द्वारा उपयोग किया जाता है। जो कि दोपहर के भोजन या कॉफी के लिए एक साथ मिलते हैं। यह उत्साही उद्यमियों को बातचीत, विनिमय और चीजों को सीखने में सक्षम बनाता है।
meetup https://www.meetup.com/	मीटअप (Meetup) एक ऑनलाइन टूल है, जिसका उपयोग स्थानीय बैठकों और व्यक्तिगत कार्यक्रमों में समान हितों वाले उत्साही लोगों के लिए किया जाता है। मीटअप सेवाएं आपको दुनिया भर में हो रही घटनाओं का पता लगाने की अनुमति देती हैं, और आप अपने आस-पास के लोगों से मिलना प्रारंभ कर सकते हैं।
स्काइप https://www.skype.com/en/	स्काइप (Skype) एक संचार उपकरण है, और यह इंटरनेट के माध्यम से त्वरित संदेश, वीडियो और वॉइस कॉल सेवाएं प्रदान करता है। स्काइप का उपयोग करके, आप चित्र, पाठ, वीडियो, ऑडियो साझा कर सकते हैं। यह ऑनलाइन समूह प्रस्तुतियों और समूह मीटिंग बनाने के लिए भी उपयोगी है। व्हाट्सएप के विपरीत, विदेश से आपके पास लैंडलाइन फोन के लिए स्काइप भी हो सकता है।

Hangouts https://hangouts.google.com/	हैंगआउट्स (Hangouts) एक ऑनलाइन संचार प्लेटफ़ॉर्म है, जो आपको वीडियो कॉल, वॉइस कॉल और संदेश बनाने में सक्षम बनाता है। वीडियो कॉल, वॉयस कॉल या त्वरित संदेश सेवा के माध्यम से ऑनलाइन संचार सक्षम करने के लिए 10 लोगों के समूह के लिए यह बहुत उपयोगी है।

सी. उद्यमिता ऑनलाइन सीख एवं शिक्षा (ई-लर्निंग) संसाधन

एप्लीकेशन का नाम	उत्साही उद्यमी के लिए उपयोगिता
startupindia https://www.startupindia.gov.in/content/sih/ EZ/ reources/ ld-listing.html	स्टार्टअप इंडिया (Startup India) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा एक नई पहल है। इस पहल के तहत, उद्योग और आंतरिक व्यापार को बढ़ावा देने के लिए विभाग उद्यमियों के लिए मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
edX https://www.edx.org/learn/entrepreneurship	एडेक्स (edx) बड़े पैमाने पर मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (मूक) प्रदाता है, यह विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों के विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम प्रदान करता है। आप हार्वर्ड, एमआईटी और अन्य शीर्ष स्कूलों से उद्यमिता में मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए नामांकन द्वारा डिग्री एवं सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के पाठ्यक्रम आपको एक सफल उद्यमी बनने में मदद करते हैं। एडेक्स मूक शिक्षा का सर्वो तम माध्यम है।
WIPO WORLD INTELLECTUAL PROPERTY ORGANIZATION WIPO eLearning Centre https://welc.wipo.int/	विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) मुफ्त ई-लर्निंग बौद्धिक संपदा (आईपी) पर पाठ्यक्रम प्रदान करता है। ये विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम उद्यमियों को नवाचार और रचनात्मकता विकसित करने में मदद करते हैं। यह बहुत ही उचित लागत पर सर्टिफिकेट कोर्स भी प्रदान करता है।
coursera https://www.coursera.org/browse/business/entrepreneurship	कोर्सईरा (Coursera) उद्यमिता विकास सीखने के अवसरों का एक अलग स्तर प्रदान करता है। विशेष रूप से डिजाइन किए गए पाठ्यक्रम आपको उद्यमशीलता के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं को सीखने में मदद करते हैं और नवाचार की संस्कृति में आने में भी मदद करते हैं। अधिकांश पाठ्यक्रम सीखने के लिए स्वतंत्र हैं। प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए शुल्क देना पड़ता है, और कुछ पाठ्यक्रमों के लिए छात्रों के लिए वित्तीय सहायता भी उपलब्ध है।

Google Digital Unlocked https://learndigital.withgoogle.com/digitalgarage	गूगल छात्रों को मुफ्त में अपने डिजिटल कौशल को बढ़ाने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इन ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में से अधिकांश स्वतंत्र हैं और आपको अपने नरम कौशल, व्यवसाय संचार और रणनीतिक नवाचार में सुधार करने में मदद करेंगे। डिजिटल विशेषज्ञ बनने के लिए गूगल से इन पाठयक्रमों की कोशिश करें।

डी. नवाचार और सफलता की कहानियाँ

एप्लीकेशन का नाम	उत्साही उद्यमी के लिए उपयोगिता
TED Talks https://www.ted.com/	टेड (TED) टॉक्स में नवप्रवर्तक और विशेषज्ञ वक्ताओं के अधिकांश प्रभावशाली वीडियो शामिल हैं। उनमें से अधिकांश आपको सर्वोत्तम विचार प्राप्त करने में मदद करेंगे। टेड टॉक्स में व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नवोन्मेषकों की बातचीत और सफलता की कहानियाँ शामिल हैं। वर्तमान में टेड टॉक्स उद्यमिता विकास से संबंधित 3200+ वार्ता और सफलता की कहानियों की मेजबानी कर रहा है।
MyStartup TV https://mystartuptv.in/	मायस्टार्टअप टीवी (MyStartup TV) एक वेबसाइट है जो स्टार्टअप और सफल उद्यमियों की उद्यमशीलता की यात्रा पर संस्मरण तैयार करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह भारत का पहला ऑनलाइन टीवी चैनल है, जो केवल स्टार्टअप और उद्यमियों के लिए विकसित किया गया है।
National Innovation Foundation http://nif.org.in/	नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (NIF) - अहमदाबाद में स्थित है। एनआईएफ जमीनी स्तर पर तकनीकी नवाचारों को मजबूत करने और समर्थन करने के लिए एक राष्ट्रीय पहल है। देश भर में उद्यमिता और नवाचारों को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल नवाचार और उद्यमिता का त्यौहार का आयोजन भी कर रहा है।
AIM ATAL INNOVATION MISSION http://aim.gov.in/index.php	अटल इनोवेशन मिशन, नीति आयोग (AIM), भारत सरकार द्वारा स्थापित एक प्रमुख पहल है। यह देश में नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

उपसंहार

इस अध्याय में उपलब्ध कुछ ऑनलाइन टूल या संसाधनों का उपयोग करने की कोशिश करें। ये उपकरण निश्चित रूप से एक छात्र के रूप में आपके दैनिक जीवन में आपकी मदद करेंगे। इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन साधनों का उपयोग करने की संस्कृति विकसित करना और ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन लाना है। इस अध्याय के लेखक ने परियोजना प्रबंधन में तीन ऑनलाइन सॉफ्टवेयर्स विकसित किए हैं, जिनका उपयोग 70 से अधिक देशों में किया जा रहा है। इन्हें

1. ए एच पी एनालाइज़र (AHP analyser)
2. रिसर्च कॉन्सेप्ट राइटर (Research Concept Writer)
3. प्रोजेक्ट लॉगफ्रेम राइटर (Project Logframe Writer)

के रूप में जाना जाता है। आप इन्हें गूगल खोज (google search) पर पा सकते हैं, जो खुली पहुँच नीति के रूप में सभी के लिए उपलब्ध हैं।

1. कौन सा कार्य प्रबंधन उपकरण मेरी टीम की दैनिक कार्यों की प्राथमिकता देने में मदद कर सकता है?

2. डिजिटल नोट लेने के लिए मुझे किस ऐप का उपयोग करना चाहिए?

3. गूगल द्वारा किस ऑनलाइन फ़ाइल संग्रहण सेवा की पेशकश की गई है?

4. मुझे उस मूक प्रदाता का नाम बताओ जो विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है

5. कौन सी वेबसाइट स्टार्टअप्स और सफल उद्यमियों की उद्यम शीलता की यात्रा पर संस्मरण तैयार करती है?

सामूहिक शक्ति से संगठन का विस्तार: एक संस्मरण

प्रस्तावना

मैंने एक उद्यमी संस्था सग्रहा (SAGGRAH) का निर्माण किया तथा इस पाठ में मैंने अपनी उद्यमी के रूप में यात्रा का विवरण दिया हैं। मेरे संस्मरण छात्रों के लिये बहुपयोगी होंगे तथा वह महसूस कर सकेंगें कि उद्यमी की यात्रा में कौन-कौन से मुख्य पड़ाव आते है। संगठन, अपने सरलतम रूप में, एक ऐसी जगह का अर्थ है, जहाँ मनुष्यों का एक समूह एक समान लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक साथ काम करता है। एक संगठन अपने लोगों द्वारा बनाया जाता है, और यह जो हासिल कर सकता है वह अकेले काम करने वाला व्यक्ति कभी नहीं प्राप्त कर सकता है।

व्यवसाय को बढ़ाने के लिए एक व्यक्ति पर्याप्त नहीं है। जिस किसी ने भी जमीन से कोई व्यवसाय बढ़ाया है, उसके पास काम करने वाले लोगों की एक टीम थी, जिस पर वे भरोसा कर सकते थे। उदाहरण के लिए, हमारे मामले को लें, जब मैंने अपने खुद के व्यवसाय के निर्माण के विचार को आगे बढ़ाने का फैसला किया, तो मैंने अपने दो दोस्तों से संपर्क किया जिन्हें मैं जानता था, कि हम जिस संगठन का निर्माण करने जा रहे हैं, उसके लिए अच्छी संगति एवं संपत्ति होगी। हम तीनों का एक घनिष्ट संबंध था। हम सभी अनुभवी थे और अपने ज्ञानक्षेत्र (Domain) में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे थे। इन लोगों ने न केवल मेरे जैसा ही दृष्टिकोण साझा किया, बल्कि समालोचना में भी अच्छे थे, जिससे यह सुनिश्चित हो गया कि लिए गए निर्णय किसी भी कमियों से मुक्त थे।

जब हमने अपनी यात्रा शुरू की तो हम काफी आश्वस्त थे, लेकिन जैसे-जैसे हमे आगे बढ़ने लगे हम पालोमा फील्ड सर्विसेज के सह-संस्थापक टोबी थॉमस की बात याद आने लगी । जिन्होंने एक बार कहा था, कि एक उद्यमी होना एक शेर की सवारी करने वाले व्यक्ति की तरह है, जहाँ लोग उसे देखते हैं और सोचते हैं, इस आदमी को वास्तव में एक साथी मिल गया है! वह बहादुर है! थॉमस कहते हैं। और शेर की सवारी करने वाला आदमी सोच रहा है, मैं कैसे शेर पर सवार हो गया, और स्वयं को खाए जाने से बचाना चाहते थे हम एक तरह शेर की सवारी करते है तथा दूसरी और अपने को शेर से बचाना है। इसीलिए, हमें एक ऐसी टीम की आवश्यकता है, जिसमें अपने विचारों को क्रियान्वयन में बदलने के लिए जुनून, रचनात्मकता और दृष्टि का सही मिश्रण हो।

प्रारंभिक वर्षों में क्या हुआ?

सग्रहा (SAGGRAH) के शुरुआती वर्षों में, हमने अपनी कोर टीम का निर्माण करते हुए कई सिद्धांतों का पालन किया। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं जिन पर संगठनात्मक टीम बनाते समय ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. **टीम की संरचना**: लोगों को काम पर रखने के दौरान टीम संरचना की कल्पना करना सबसे महत्वपूर्ण है। एक दृष्टि होने से आपको स्पष्टता मिलती है, कि आपकी टीम को किस तरह से बढ़ना है और आप उन्हें किस तरह की भूमिकाएँ और ज़िम्मेदारियाँ सौंपना चाहते हैं। इसलिए, इस टीम संरचना को केवल वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर नहीं बनाया जाना चाहिए, इसमें भविष्य की जरूरतों और आवश्यकताओं का भी ध्यान रखना चाहिए, जिस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो बाद में फिट होना मुश्किल हो सकता है। उदाहरण के लिए, शुरू में आप एकल व्यक्ति को रख सकते हैं, जो कुछ डिवीजनों या एकल-डिवीजन को एकल रूप से देख रहा होगा, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि स्थिति हमेशा एक ही रहने वाली है। जैसे-जैसे आपका व्यवसाय बढ़ता है, आपको मौजूदा संरचना से/ में डिवीजनों को जोड़ना या हटाना होगा और आपकी टीम इसके लिए तैयार होनी चाहिए।

2. **टीम के सदस्यों का चयन**: एक नए व्यवसाय के लिए नियोक्ता के रूप लोगों को किराए पर लेना तब तक चुनौतीपूर्ण है जब तक आपके संगठनों की प्रतिष्ठा नहीं होती है। इसके अलावा, आपको उन लोगों को काम पर रखना होगा जो साधन संपन्न हैं और टीमों की स्थापना और देखरेख करने में आपकी सहायता कर सकते हैं, क्योंकि इस तरह के अंकुरण अवस्था में आप जमीन पर हर एक विवरण की देखरेख नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा, आप अकुशल लोगों को काम पर रखने और अनुत्पादक कर्मचारियों पर संसाधनों को बर्बाद करने का जोखिम नहीं उठा सकते। इसके बारे में जाने का सबसे अच्छा तरीका है, उन लोगों के नेटवर्क में शामिल करके, जिन्हें आपने वर्षों से सिफारिशों के लिए बनाया है, या उन भरोसेमंद लोगों से संपर्क करना, जिन्होंने पहले से ही आपके साथ काम किया है और वे आप पर भरोसा करते हैं।

3. **पूरक विशेषताएं**: टीम के सदस्यों की सही एवं प्रतिपूरक संरचना होना बहुत महत्वपूर्ण है। टीम के सदस्यों के पास निपुण कौशल सेट होना चाहिए जो समग्र टीम प्रयास में तालमेल लायेगा। उदाहरण के लिए, हमारे व्यवसाय को स्थापित करने के लिए हमें विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि वित्त, तकनीकी, जोखिम, मानव संसाधन, आदि में कुशल लोगों की आवश्यकता थी।

4. **लक्ष्यों का संरेखण**: यद्यपि आपकी टीम के सदस्य विभिन्न विभागों में काम कर रहे हैं और विभिन्न कार्यों को संभाल रहे हैं, इन सभी के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे एक सामान्य संगठनात्मक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। कभी-कभी सभी व्यक्ति इस बात की परवाह कर सकते हैं, कि वह जिस लक्ष्य को प्राप्त कर रहा है, उसे समग्र संगठनात्मक लक्ष्य के साथ व्यक्तिगत लक्ष्य को पूरा करना होगा। उदाहरण के लिए, मासिक लक्ष्य को पूरा करने के लिए संदेहास्पद साख वाले व्यक्ति, व्यक्तिगत लक्ष्य को पूरा कर सकते हैं, लेकिन निश्चित रूप से भविष्य में संगठन को नुकसान पहुँचाएंगे।

विकास का चरण

स्टार्टअप के शुरुआती चरणों के दौरान, 10-15 लोगों की एक कोर टीम का प्रबंधन करना और बहु-डिवीजनल काम को संभालना ज़्यादा काम की तरह नहीं लगेगा, लेकिन जैसे-जैसे कंपनी विकास के चरण में आती है, कई एक मुद्दे उठने लगते है जिनकी परिकल्पना कर समयपूर्व एक योजना भी तैयार करनी पड़ती है।

1. **कर्मचारियों को कार्य पर रखना**: जैसा कि संगठन बढ़ता है, मुख्य टीम से बाहर निकलने के लिए प्रेरित और भावुक कर्मचारियों को काम पर संभाले रखना उन सबसे कठिन कार्यों में से एक बन जाता है जिनका आप विकास के साथ सामना करेंगे। प्रत्येक अतिरिक्त कर्मचारी के पास कंपनी में बड़े पैमाने पर योगदान करने और विकास को चलाने की क्षमता होती है, लेकिन अगर वह बुद्धिमानी से नहीं चुना जाता है, तो वह काम के प्रवाह को बाधित कर सकता है। किराए पर लेते समय अथवा नियूक्त करते समय, आपके पास एक उपयुक्त उम्मीदवार स्वरुप एक परिकल्पना व्यक्तित्व होना चाहिए, ताकि आप यह जान सकें कि जब आप उम्मीदवारों का मूल्यांकन कर रहे हैं, तो आप किस उम्मीदवार की तलाश कर रहे हैं। आदर्श रूप में, आपके पास अपने स्वयं के प्रतिभा पूल तक पहुँच होनी चाहिए जो कि संदर्भों के माध्यम से या आपकी वेबसाइट के माध्यम से बनाया जा सकता है। ध्यान दें कि साक्षात्कार में आने वाले व्यक्तियों के सांस्कृतिक मूल्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि इसे गंभीरता से नहीं लिया जाता है, तो यह अंततः शत्रुतापूर्ण कार्य वातावरण और व्यवसाय के विघटन का कारण बन सकता है।

2. **नई टीम की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को परिभाषित करना**: स्टार्टअप के शुरुआती चरणों में, एक कर्मचारी एक समय में विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को संभाल सकता है, लेकिन जैसे-जैसे संगठन बढ़ता है, काम तीव्र होता है और आपके कर्मचारियों से समान अपेक्षाएं नहीं होती हैं, इससे उनकी दक्षता और संगठन की उत्पादकता कम हो जाएगी । इस प्रकार, हर व्यक्ति के लिए विशिष्ट नौकरी विवरण के साथ एक अच्छी तरह से परिभाषित संरचना होना महत्वपूर्ण है। विकास के साथ-साथ आकर बड़ा होता जाता है। इस अवस्था में उच्चस्तरीय व्यक्ति या समूह जैसे कि प्रमोटर्स प्रत्येक विवरण को स्वयं नहीं देख पायेंगे। इसलिए, जिम्मेदारी को सौंपने के लिए परतों के रूप में जोड़ना होगा, कमांड की एक स्पष्ट श्रृंखला होनी चाहिए, और पदानुक्रम को और नीचे टीमों को मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

3. **अनुभव बनाम योग्यता**: आपके स्टार्टअप के शुरुआती वर्षों में आपके द्वारा चुनी गई कोर टीम कठोर कौशल (लेखा, वित्त, कानूनी, आदि) और निर्णय लेने में अत्यधिक कुशल होगी क्योंकि इस समय आपको ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता होती है जिन्हें जमीनी स्तर पर कार्य करना है। लेकिन जैसे-जैसे आप प्रगति करते हैं, आपको अन्य तकनीकी/ प्रबंधकीय/ संचार कौशल में भी अच्छे लोगों की आवश्यकता हो सकती है। यदि आप अच्छे कर्मचारियों को काम पर रख रहे हैं, तो आप पा सकते हैं

कि इनमें से अधिकांश लोग उच्च योग्यता वाले और प्रतिष्ठित संस्थानों से स्नातक होंगे। यह उन अनुभवी कर्मचारियों के लिए संघर्ष का एक स्रोत बन सकता है, जो फैंसी डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रतिष्ठित स्कूलों में नहीं गए होंगे, लेकिन वर्तमान स्तर पर अपना रास्ता बनाने के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहे होंगें। एक प्रमोटर के लिए, इन दोनों के बीच संतुलन बनाना हमेशा बहुत महत्वपूर्ण होगा।

4. **पदानुक्रम नौकरशाही**: संस्था का और अधिक संरचित बनाने के लिए संगठन में परतें जोड़ना निश्चित रूप से जीवन को आसान बना देगा, लेकिन यह अपनी चुनौतियों को भी साथ लाता है। जैसे-जैसे संरचना लंबवत रूप से चैनल करना शुरू करती है, अंतर-विभागीय संचार प्रभावित होता है। कभी-कभी विभाग उद्देश्यपूर्ण रूप से एक दूसरे से जानकारी रोकते हैं। इसके अलावा, विभागीयकरण से टीम अपनी संगठनात्मक दृष्टि (Big picture) खो सकती है, आपसी प्रतिद्वंदियों में शामिल हो सकती है, और संगठन की अपेक्षा अपने स्वयं के अथवा विभागीय लाभ के लिए निर्णय ले सकती है।

सजीव रहना

शेर की पीठ पर सवार होने वाली उपमा याद है? याद रखे कर्मचारियों से संगठन बनता हैं। अर्थात इन्हें खुशहाल रखना अत्यंत आवश्यक है। टीम का निर्माण, संगठन के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, कर्मचारियों को प्रेरित रखना आपके संगठन के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यदि कोई कर्मचारी प्रेरित होता है, तो वह निष्ठावान रहता है और लंबे समय तक आपके साथ रहना चाहता है। यहाँ कुछ तकनीकें हैं, जिन्हें हमने सग्रहा (SAGGRAH) में अपना कर एक ऐसा परिवार बनाया है जिस पर हमें आज गर्व है:

1. **कार्य मान्यता**: यह मान कर चला की यह तो कर्मचारियों का काम है, यह नीति उन्हें लंबे समय तक प्रेरित नहीं रखेगी। सदेव लोगों को उनकी कड़ी मेहनत के लिए पहचानें और उन्हें चिन्हित कर उचित रूप से पुरस्कृत करें। ध्यान दें कि सभी लोगों के लिए एक ही प्रकार का इनाम काम नहीं करेगा। आपको अपने कर्मचारियों को प्रेरित करने और तदनुसार संतुष्टि देने के लिए पहचानना होगा। आपको पूरे वर्ष उनके प्रदर्शन पर नज़र रखनी होगी और वित्तीय वर्ष के अंत में उनके अनुसार मूल्यांकन करना होगा। इसने हमारी टीम को दिखाया कि वे हमारे लिए कितने मूल्यवान हैं, और उन्हें अच्छे काम को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

2. **कंपनी में स्वामित्व (ESOPs)**: टीम को आपकी कंपनी में हिस्सेदारी प्रदान करना भी उनके लिए एक महान प्रेरक है। जब उन्हें व्यवसाय में स्वामित्व की एक ठोस भावना महसूस होती है, तो वे कंपनी की सफलता के बारे में अधिक ध्यान रखेंगे और कार्य के आह्वान से ऊपर और आगे जाने के लिए तैयार रहेंगे।

3. **एक विकास पथ उत्कीर्ण करें**: आपकी टीम को हमेशा आपके साथ काम करते हुए अपने कैरिअर में उन्नति के लिए एक विकास मार्ग देखने में सक्षम होना चाहिए। उचित समय पर उन्हें बढ़ावा देना और प्रासंगिक पाठ्यक्रमों या प्रमाणपत्रों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना उन्हें संगठन के साथ

दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद करता है।

4. **योगदान आवर्तन (Role Rotation)**: लम्बे समय तक सामान कार्य नैत्य रूप से करना काम को उबाऊ और नीरस बना सकता है। दैनिक आधार पर समान कार्यों और चुनौतियों से निपटना कर्मचारियों को उत्साहिन कर सकता है। इस चुनौती को संभालने के लिए, हम सग्रहा (SAGGRAH) में, अंतर-विभागीय स्थानांतरण के दृष्टिकोण का पालन करते हैं। लोगों को विभिन्न विभागों में काम करने और समय के साथ नए कौशल सीखने को प्रेरित करते है। यह उन्हें न केवल समग्र शिक्षा के लिए एक अवसर प्रदान करता है जो उनके कैरियर के लिए मूलभूत है, बल्कि संगठन के कार्यों और उनके दैनिक कार्यों के दूरगामी प्रभाव के बारे में भी गहरी समझ प्रदान करता है।

5. **क्यों की व्याख्या करें**: अपनी टीम को सादे निर्देश देने के बजाय, उन्हें यह समझने की कोशिश करें कि ऐसा किसलिए किया गया है। यह कर्मचारियों को कार्य के लिये महत्वपूर्ण और व्यक्तिगत बनाता है। इस प्रकार से उनके समय का प्रत्येक अंशदान संगठन के लिये अति महत्वपूर्ण हो जाता है।

6. **स्वतंत्रत विचारो की अभिव्यक्ति**: अपनी टीम को अपने विचारों को वापस रखने के बिना व्यक्त करने की स्वतंत्रता देने से साबित होता है कि आप उन पर भरोसा करते हैं, और थोड़ी स्वायत्तता कभी भी चोट नहीं पहुँचाती है। यह आपके और आपकी टीम के बीच एक महान भावनात्मक बंधन बनाने में मदद कर सकता है। हमने कई बार हर स्तर पर अद्भुत विचारों को कर्मचारियों में देखा है, और हम इन विचारों को लागू करके महान परिणाम प्राप्त करने पर आश्चर्यचकित नहीं थे।

7. **टीम आउटिंग**: कर्मचारियों को स्वस्थ और खुश रखना महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों को एक-दूसरे को जानने, अपने विभाग के बाहर के लोगों के साथ मज़ेदार गतिविधियों में शामिल होने का मौका देना, और उन्हें प्रेरित रखने के लिए अपनी टीम के साथ एक मजेदार लक्ष्य पूरा करने की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है। अपनी टीम को मानसिक रूप से ताज़ा करने के लिए ब्रेक देने से उनकी उत्पादकता में भी सुधार होता है।

8. **सफलताओं का जश्न मनाना**: संगठनात्मक सफलता संगठन में प्रत्येक टीम के सदस्य द्वारा लगाए गए सभी की कड़ी मेहनत और कुशलता का परिणाम है। इसे प्राप्त करने में शामिल लोगों के साथ सफलता का जश्न मनाना वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। हम सग्रहा (SAGGRAH) में, अपने सग्रहा परिवार को धन्यवाद देने के लिए और उनके बिना संभव नहीं होने वाली सफलता का जश्न मनाने के लिए भव्य पैमाने पर एक वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं।

उपसंहार

आपके द्वारा साथ लाने वाली टीम की गुणवत्ता आपके व्यवसाय पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालेगी। एक सुपरस्टार टीम का निर्माण करने के लिए, आपके पास एक स्पष्ट दृष्टि होनी चाहिए और टीम को बनाए रखने के लिए दिखाई देने वाली चुनौतियों के लिए तैयार रहना चाहिए। अग्रसर होना बेहतर हैं, परन्तु अपने आपको एक स्तर पर बनाये रखना और भी चुनौतिपूर्ण है। यह सब प्राप्त करने के लिये अच्छी एवं उत्साही टीम के साथ ही संगठन के लक्ष्यों से संरेखण एवं एकरूपता होना भी आवश्यक है।

वीडियो देखने के लिए

1. https://youtu.be/iE5LšOvab4g
2. https://youtu.be/0hry6vRCd0c
3. https://youtu.be/WZu0kRVySRw
4. https://youtu.be/jlFcjOT2mY
5. https://youtu.be/86HCEd9l2U

1. उस स्थान का नाम बताइए जहाँ लोगों का एक समूह एक समान लक्ष्य की ओर एक साथ काम करता है

2. किस प्रकार के कौशल सेट से समग्र टीम प्रयास में तालमेल आएगा?

3. कौन सा कारण टीमों को बड़े संगठनों की दृष्टि खो सकता हैं?

4. क्या लंबे समय तक सामान कार्य उबाऊ और नीरस बनाता है?

5. आपके और आपकी टीम के बीच भावनात्मक बंधन बनाने में क्या मदद करता है?

अनुबंध-1: अंग्रेजी लेख के लेखकों की सूची

लेखक का नाम	अध्याय का शीर्षक	अध्याय क्रमांक
डॉ. एस के सोम, पी.एच.डी (वनस्पति विज्ञान) कंसोर्टिया प्रधान अन्वेषक, राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद - 500030	• आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत कृषि उद्यमिता के सुनहरे अवसर	1
	• स्टार्टअप इंडिया: भारत के नवोन्मषी होने की अपार संभावनाएं	2
	• भावी उद्यमियों के लिए उपयोगी ऑनलाइन संसाधन एवं उपकरण	11
डॉ. सूर्या राठौड़, पी.एच.डी. (विस्तार शिक्षा), महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) प्रधान वैज्ञानिक राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद - 500030	• स्टार्टअप, उद्यमिता और कौशल विकास हेतु सरकारी पहल	3
श्री आर वी हरीश, बीएससी (एग्रीकल्चर), पी. जी.डी.बी.एम. और इ.जी.एम.पी., आई आई एम, बैंगलोर मैनेजिंग डायरेक्टर एवं सीइओ (MD & CEO), सग्रहा (SaGgraha),	• सामूहिक शक्ति से संगठन का विस्तार: एक संस्मरण	12
डॉ. लक्ष्मी मंथा, पीएचडी (बिजनेस कम्युनिकेशन), कनाडा से प्रायोगिक शिक्षा के डिजाइन और सुविधा में प्रमाणित ट्रेनर असिस्टेंट प्रोफेसर, इंग्लिश, उस्मानिया विश्वविद्यालय (Osmania University), हैदराबाद	• कैरियर विकास हेतु स्व: कौशल निर्माण	8
	• कैरियर विकास में मीडिया की प्रभावशाली भूमिका	9
	• टीम कार्य एवं टीम निर्माण के आधारभूत तत्त्व	10

श्री विजय नादिमिंटि, बीएससी (बागवानी) और पी.जी. डी.एम, नियाम (NIAM),जयपुर, चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर (COO), ए- आईडिया (a-Idea), आईसीएआर - नार्म	• नवाचार: स्टार्टअप और उद्यमिता हेतु एक प्राथमिक आवश्यकता	4
श्री शार्दुल विक्रम, बीटेक (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), आईआईटी- खड़गपुर एवं प्रमाणित वित्तीय जोखिम प्रबंधक क्रेडिट रिस्क एनालिस्ट (Credit Risk Analyst), कैपिटल वन (Capital One), बेंगलुरु	• भावी उद्यमियों हेतु वित्तीय जोखिम प्रबंधन	7
डॉ. रुपन रघुवंशी, पी.एच.डी, विस्तार संचार (जी.बी. पन्त कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, पंतनगर) रिसर्च एसोसिएट, राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP), राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी हैदराबाद - 500030	• कृषि उद्यमिता से ही कृषि विस्तार	6
सुश्री स्वीटी शर्मा, एम एस सी एवं नेट(फ्लोरीकल्चर और लैडंस्के पिंग), एस.वी.पी.यू.ए.टी.(SVPUA&T), मेरठ रिसर्च एसोसिएट, राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP). राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी हैदराबाद - 500030	• कृषि स्नातकों का कृषि उद्यमियों के रूप में निर्माण	5

अनुबंध-2: लेखकों के बारे में...

डॉ. सुधीर कुमार सोम:

डॉ. सुधीर कुमार सोम ने मेरठ विश्वविद्यालय से वनस्पति शास्त्र में डाक्टरेट किया तथा वर्ष 1993 से आई.सी.ए.आर. की कृषि अनुसंधान सेवा में वैज्ञानिक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 2011 से नार्म, हैदराबाद में सूचना एवं संप्रेषण विभाग के अध्यक्ष है तथा वर्ष 2017 से संयुक्त निदेशक का कार्यभार भी देख रहे हैं। नीदरलैंड में स्थित इक्रा से अंतरराष्ट्रीय कृषि में साथ माह का सर्टिफिकेट प्राप्त किया है। विश्व बैंक की परियोजनाओं के समर्थन से बौद्धिक संपदा अधिकार एवं तकनीक प्रबंधन में वर्ल्ड ट्रेड संस्थान स्विट्जरलैंड एवं वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, यू एस ए में विसिटिंग स्कॉलर रहे है। यूनिवर्सिटी ऑफ वारविक, इंग्लैंड के अनुसंधान सलाहकार समूह के सदस्य रहे है। वर्ष 2007-2010 तक रोम स्थित बौद्धिक संपदा अधिकार संस्था (CAS-IP) के सदस्य रहकर इटली, अमेरिका, नीदरलैंड, केन्या तथा इण्डोनेशिया इत्यादि देशों में विभिन्न कार्यशालाओं में योगदान दिया है। वर्ष 2013 में संयुक्त राष्ट्र की संस्था CBD के अक्टूबर में आयोजित COP-11 में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में योगदान दिया। वर्ष 2018 में नेतृत्व, क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार की संस्था भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री में परामर्श समूह के सदस्य के रूप में कार्य कर रहे है, तथा 70 से अधिक कृषि एवं खाद्य सम्बंधित उत्पादों के संबंध में विशेषता दी है।

डॉ. प्रभात कुमार:

डॉ. प्रभात कुमार, राष्ट्रीय समन्वयक (कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नति केन्द्र और घटक. 2) के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना, पूसा नई दिल्ली में कार्यरत है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ।

डॉ. कुमार ने अपनी उच्च शिक्षा पी.एच.डी. (पुष्प विज्ञान एवं भूदृष्य निर्माण), सुप्रसिद्ध भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली से वर्ष 2002 में किया है। डॉ. कुमार का शिक्षण अनुसंधान एवं प्रसार तथा प्रबंध में 17 वर्षों से अधिक का अनुभव है। इन्हीं 17 वर्षों के अन्तराल में 7 से अधिक बाह्य पोषित एवं 6 आन्तरिक पोषित अनुसंधान परियोजना का संचालन किया और 75 से अधिक शोध-पत्रों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में प्रकाशित किया है। साथ ही 35 लोकप्रिय लेख, 10 किताब अध्याय, 11 तकनीकि बुलेटिन एवं 3 किताबों का लेखन एवं प्रकाशन किये हैं।

डॉ. कुमार ने प्रमुख रूप से अनुसंधान शिक्षण एवं प्रसार में कार्य करते हुए 10 एम.एस.सी. छात्रों का एवं एक पी.एच.डी. छात्र का प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में मार्ग दर्शन किया। आप के द्वारा कई तकनीकियों एवं प्रजातियों का विकास किया गया है जैसे कि गेंदें की पूसा बहार एवं पूसा दीप और ग्लैडियोलस में पूसा सिंदुरी एवं पूसा शान्ति। डॉ. कुमार ने राष्ट्रीय समन्वयक के दायित्व पर रहते हुए 16 विभिन्न अति महत्वपूर्ण विषयों पर अति उत्कृष्ट केन्द्रों की स्थापना करवाई है और कृषि शिक्षा मे डिजिटल टेक्नोलॉजी का समाकलन कराया है। आपने कई देशों का भ्रमण किया है जिसमें नीदरलैंड, जर्मनी, बेल्जियम, सिंगापुर, थाईलैंड, मालद्वीप एवं स्वीटजरलैंड है।

डॉ. सी एच श्रीनिवास राव:

डॉ. सी एच श्रीनिवास राव ने अपनी पी.एच.डी. मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विज्ञान में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से किया एवं तेल-अवीव विश्वविद्यालय, इज़राइल से पोस्ट डॉक्टरल (फेलो) किया हुआ है। वर्ष 1992 से आई.सी.ए.आर. की कृषि अनुसंधान सेवा में वैज्ञानिक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। इन्होने दो वर्ष तक इक्रिसेट, हैदराबाद की सेवा भी की है। वर्ष 2017 से नार्म, हैदराबाद के निदेशक के रूप में सेवा दे रहे हैं, इससे पहले वह हैदराबाद में ही स्थित आई.सी.ए.आर. के संस्थान केंद्रीय शुष्क कृषि संस्थान के निदेशक भी रहे हैं। डॉ. सी एच श्रीनिवास राव, 25 से भी अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं, जिसमे आई. सी.ए.आर. (ICAR) का सर्वोतम पुरस्कार रफ़ी अहमद किदवई पुरस्कार भी शामिल है। इन्होने वैज्ञानिक से निदेशक तक विभिन्न क्षमताओं में विभिन्न आईसीएआर की सेवा की, ये फेलो ऑफ़ नेशनल अकादमी ऑफ़ साइंसेज (FNASc); नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (FNAAS), नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (NASI) एवं भारत और विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित अकादमियों/ सोसायटी में भी कार्य कर चुके है। डॉ राव ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के व्यापक क्षेत्रों में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व किया। मुख्यतः इनकी रुचि के क्षेत्र जलवायु परिवर्तन, आकस्मिक योजना, मृदा कार्बन अनुक्रम, वर्षा जल प्रबंधन, वर्षा आधारित मिशन विकास, जलवायु और संरक्षण नीति एवं कृषि अनुसंधान प्रबंधन हैं।

अनुबंध-3

प्रश्नोत्तर

अध्याय-1

1.आत्मनिर्भर भारत पैकेज (Atma Nirbhar Bharat Package)

2. 20 लाख करोड़ रुपये

3.10 प्रतिशत

4. 31 मार्च, 2021

5. मछुआरो के लिये (प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना)

6. पीएम. ई- विद्या (PM eVIDYA-ऑनलाइन शिक्षा के लिए मल्टी-मोड एक्सेस के लिए एक कार्यक्रम तुरंत लॉन्च किया जाएगा)

अध्याय-2

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने पहल की है
2. कासरगोड (Kasaragod)
3. Scheme for Promotion of Innovation, Rural Industries and Entrepreneurship (नवाचार, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक योजना)
4. startupindia.gov.in
5. धन-अर्जन अवस्था
6. B-2-B, B-2-C और C-2-B

सही / गलत:

1. बीज अवस्था के तहत तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा आइडिया को मान्यता दी जा रही है। सही
2. एक इनक्यूबेटर कार्यक्रम के लिए एक विशिष्ट अवधि 3-12 महीने है। गलत
3. टी-हब एग्रीटेक सेक्टर में प्रमुख इनक्यूबेटर्स और एक्सेलेरेटर्स है। सही
4. ई-एनएएम (E-NAM) का मतलब राष्ट्रीय कृषि बाजार है। सही
5. स्किल इंडिया योजना 15 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई है। सही

अध्याय - 3

1. स्टार्टअप इंडिया
2. 18-60 साल
3. IARI, नईदिल्ली
4. 10 साल
5. http; // www.asci-india.com

अध्याय - 4

1. एक उद्यमी
2. 2015
3. आईसीएआर (ICAR) - नार्म (NAARM), हैदराबाद
4. कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय

अध्याय - 5

1. हरा, सफ़ेद, पीला, और नीली क्रांतियाँ है
2. सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (Sustainable Development Goals)
3. शहद, मोम इत्यादि
4. आईसीएआर (ICAR), अनुसंधान और विकास (R&D) प्रयोगशालाएं है
5. जटरोफा

सही/ गलत:

1. कृषि-उद्यमशीलता कृषि परिवर्तन की कुंजी है। सही
2. कृषि क्षेत्र का जीडीपी 1950 से 2011 से निरंतर बढ़ रहा है। गलत
3. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास और विकास में कृषि प्रणाली विभिन्न भूमिका निभाती है। सही
4. युवा पृथ्वी पर सब से शक्ति शाली संसाधन हैं। सही
5. भारत के पास कृषि क्षेत्रों में बहुत से व्यवसाय करने के अवसर हैं। सही

अध्याय - 6

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर)
2. 1974, पांडिचेरी में
3. प्रदान, भारतीय कृषि उद्योग महासंघ (बी.ए.आई.एफ)
4. भारतीय तंबाकू कंपनी (आई.टी.सी)
5. एग्री क्लिनिक एंड एग्रीबिज़नस सेंटर

अध्याय - 7

1. न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)
2. किसी व्यवसाय में जोखिम भरे क्षेत्रों को पहचानें और उनसे बचें
3. बीमा
4. डेरीवेटिव

अध्याय - 8

1. कमजोरियों को पहचानें और उन पर काम करें
2. बैंकर, वकील
3. सॉफ्टेस्किल्स
4. एक समूह में चर्चा
5. बायोडाटा

सही/ गलत:

1. अकेले कठोर कौशल से आपको नौकरी मिलेगी। गलत
2. तैयारियाँ साक्षात्कार के लिए महत्वपूर्ण है। सही
3. पारस्परिक कौशल, सम्बन्ध निर्माण के लिए आवश्यक हैं। सही
4. समूह में फिट होने की क्षमता का आकलनरिज्यूम की मदद से किया जाता है। सही
5. मार्केटिंग की नौकरियाँ कठिन कौशल पर आधारित होती हैं। गलत
6. नरम कौशल की तुलना में भौतिक विदों को कठिन कौशल की अधिक आवश्यकता होती है। सही

अध्याय - 9

1. coursera.orgkhanacademy.org
2. resumonk.com www.visualcv.comwww.resume.com/builder
3. ambitionbox.comwww.interviewbest.comwww.indiabix.com
4. naukri.comwww.linkedin.comwww.indeed.co.in

अध्याय - 10

1. सचिनबंसल और बिन्नीबंसल
2. ब्रूस--टकमैन
3. नेता
4. ज़िम्मेदारी
5. स्टार्मिंग अवस्था

अध्याय - 11

1. आसन
2. Evernote
3. गूगलड्राइव
4. edX
5. मायस्टार्टअप टी.वी.

अध्याय - 12

1. संगठन
2. मानार्थ कौशल सेट
3. Departmentalizing
4. Routinisation
5. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

ISBN: 978-81-943090-8-6

भाकृअनुप - राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद - ५००३०, तेलंगाणा, भारत
ICAR- National Academy of Agricultural Research Management
(ISO 9001:2015 Certified)
Rajendranagar, Hyderabad- 500030, Telangana, India
https://naarm.org.in